गोपाल रतन

(श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी)

सूबा सुरिंदर कौर खरल

Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library

https://archive.org/details/namdhari

Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library has been created with the approval and personal blessings of Sri Satguru Uday Singh Ji. You can easily access the wealth of teaching, learning and research materials on Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library online, which until now have only been available to a handful of scholars and researchers.

This new Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library allows school children, students, researchers and armchair scholars anywhere in the world at any time to study and learn from the original documents.

As well as opening access to our historical pieces of world heritage, digitisation ensures the long-term protection and conservation of these fragile treasures. This is a significant milestone in the development of the Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-Library, but it is just a first step on a long road.

In order to continue conserving, digitising and publishing our numerous literature online, we are asking for your support and involvement.

Please join with us in this remarkable transformation of the Library. You can share your books, magazines, pamphlets, photos, music, videos etc. This will ensure they are preserved for generations to come. Each item will be fully acknowledged.

Digitising our treasures is an ambitious undertaking. Every page, every object, must be photographed individually and with great care. The whole photographic process including lighting, colour temperature, and environmental controls must all be precisely regulated. Post processing is also done with meticulous care including orientation, de-skewing, sizing and finally quality control to ensure the documents reflect the true state of the originals.

To continue this work, we need your help

Your generous contribution and help will ensure that an ever-growing number of the Library's collections are conserved and digitised, and are made available to students, scholars, and readers the world over. The E-Library collection is growing day by day and some rare and priceless books/magazines/manuscripts and other items have already been digitised.

Contact Details

For further information about the process or your contribution - please contact

https://archive.org/details/namdhari E: NamdhariElibrary@gmail.com

गोपाल रतन
(श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी)

लेखिका का साहित्यक सफर

1. तृष्णा (कहानीयां) 1987
2. रूह पंजाब दी (जीवनी महारानी जिन्द कौर) 1990 और 2010
3. महांबली रणजीत सिंह (जीवनी महाराजा रणजीत सिंह) 1991 और 2010
4. वड़ प्रतापी सत्गुरु (जीवनी श्री सद्गुरु प्रताप सिंह जी) 1991 और 2010
5. सत्गुरु जगजीत सिंह जी की बागबानी प्रती देन (खोज पत्र) 1995
6. बर्मा की यात्रा, अफ्रीका की यात्रा 1996
7. बख्शिश (कविताएं) 1996
8. प्रकाश पुंज प्रथम भाग (जीवनी श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी) 1997
9. तू ही तू (कविताएं) 2000
10. बंसावली (श्री सत्गुरु राम सिंह जी) 2006
11. नामधारी शहीद और स्वतंत्रता संग्रामी 2008
12. गोपाल रतन (श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी) 2011
13. प्रकाश पुंज दूसरा भाग 2011
14. कूका आंदोलन और सरकारी दस्तावेज़ (छप रही)

श्री सत्गुरु राम सिंह जी सहाए

गोपाल रतन

(श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी)

सूबा सुरेन्द्र कौर खरल

UNiSTAR

International Publishers
of Indian and Foreign Languages

Price : 150/-

Gopal Rattan
(Sri Satguru Jagjeet Singh Ji)
by
Suba Surinder Kaur Kharal

Namdhari Engg. Works, Kurali Road,
Roop Nagar-140001 (Punjab)
Mobile : 98157-03588, 96539-05321
94173-76345, 94172-73345
Email: subakharal952@yahoo.com
Website: www.subasurinderkaur.com

2012
Vishav Namdhari Sangat (Regd.)
Sri Bhaini Sahib
Distt. Ludhiana-141126, Punjab

Type Setting & Design PCIS
Printed & bound at Unistar Books Pvt. Ltd.
301, Industrial Area, Phase-9,
S.A.S. Nagar, Mohali-Chandigarh (India)
Mob: 98154-71219

समरपित

हाजरा हजूर परम पूज्य श्री सत्गुरु जगजीत सिंह को सादर,
कुछ गरीब से, कुछ नाजुक से, कुछ मासूम से,
'तुम प्रवान कर लेना' कविता के इन शब्दों के साथ.....

तुम स्वीकार कर लेना,
तुम प्रवान कर लेना

लिखना तो चाहती हूँ
तेरी उस्तत
गाना तो चाहती हूँ
तेरे गीत
पर असमर्थ हूँ
क्योंकि
सूर्य का तेज़
पवन का वेग
समुन्द्र की गहराई
अग्नि की तपिश
रोशनी की चमक
बयान से बाहर हैं
मेरी भावनाओं को जान
मेरे लिखे अन-लिखे
मेरे कहे अनक्हे को
तुम स्वीकार कर लेना।
तुम प्रवान कर लेना।।

- सूबा सुरेन्द्र कौर खरल

विषय सूची

पन्ना नंबर

पुस्तक प्रवेशिका : श्री सत्गुरु जी के प्रवचन		9
गऊ-महिमा : डॉ. सरदारा सिंह जौहल		12
नामधारी समाज में गऊएँ : स. जसविन्दर सिंह हिस्टोरियन		14
धन्यवाद : सूबा सूरेन्द्र कौर खरल		15
1.	गऊ की महत्तता	17
2.	भारतीय संस्कृति में गऊ का स्थान	20
3.	सिख धर्म की परंपरा	25
4.	अंग्रेजों के राज्य के समय	29
5.	आज़ादी के समय	35
6.	श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी के समय	39
7.	गोपाल रतन पुरस्कार	49
8.	चण्डी की वार के पाठों के हवन यज्ञ	50
9.	गऊशालाएँ	52
10.	नामधारियों से प्रेरणा	61
11.	माता चन्द कौर जी	62
12.	प्रबंधक और सेवादार	63
13.	गायों के दूध और घी के रिकार्ड	82
14.	प्रतियोगिताओं में जीते गए पुरस्कारों के विवरण	94
15.	विश्व मंगल गऊ ग्राम यात्रा को श्री सत्गुरु जी का आर्शीवाद	108
16.	दिल्ली में हस्ताक्षर समर्पण समारोह	113
17.	गौ मांस निषेध अभियान कमेटी	115
18.	लेखिका के जीवन संबंधी विवरण	116

पुस्तक प्रवेशिका
(प्रवचनों में से)

''नानक आखे रुकनदीन लिखिया विच किताब।
गऊ-सूर नु मारियां लगन बहुत अज़ाब।
गऊ-चौदवां रतन है, कामधेनु तिह नामु।
पूजन सब अवतार तिह करके मात समान।
शीर जिना दा पीविए तिस मारियां बहुत गुनाह।''

–22वां जवाब, पन्ना 156, करनीनामा

''यही देह आज्ञा तुर्कन गही खपाऊं।
गऊ-घात का दोख जग सियुं मिटाऊं।'' (छंद पांचवा)
''यही आस पूर्ण करहु तुम हमारी।
मिटे कष्ट गऊअन छूटे खेद भारी।'' (छंद पांचवा)
''यही बेनती खास हमरी सुणीजे।
असुर मार कर रक्षा गऊअन करीजे।''

–उग्रदंती श्री मुखवाक पा: दसवीं

''हमको गऊऐं मारे जाने का बहुत दुख है, क्योंकि गऊओं में अनेक गुण हैं, अवगुण कोई भी नहीं।''

''एक गऊ के लिए अभी भी तरस ठीक आता है, क्योंकि गऊओं में अनेक गुण हैं अवगुण कोई भी नहीं। विचार लीजिए।''

–श्री सत्गुरु राम सिंह जी के हुक्मनामों में से

''गऊओं की सिर्फ पूजा ही नहीं सेवा भी करनी चाहिए है। गऊ सेवा से गऊ रक्षा अपने आप हो जाएगी।''

''सिर्फ गऊ-पूजक न बनो, गऊ पालक बनो। गऊ की नसल सुधारो और मन के भीतर से गऊओं को प्यार करो। ''

''गऊओं की नसल सुधारने के लिए उच्च कोटि के प्रयास किए जाएं ताकि गऊ-धन हमारे देश के आर्थिक विकास का आधार बन सकें।''

-श्री सत्गुरु प्रताप सिंह जी

''हमारे देश में धर्म और सियासत को अलग नहीं समझा जाता, हमारा धर्म है-गऊ और गरीब की रक्षा।''

''गऊ पालने के लिए धरती पर नहीं, दिल में स्थान होना चाहिए।''

''मैं गायों से हिसाब नहीं करता, क्योंकि गऊएं मेरे से हिसाब नहीं करतीं।''

''गऊ पूजा और गऊ रक्षा की सिर्फ बातें ही न की जाएं बल्कि सही तौर पर गऊओं की सेवा-रखरखाव और पालन भी किया जाए। हर नामधारी को गऊ रखनी चाहिए। ''

''दूध एवं घी की नदियां बहाने वाले देश में दुधारु पशुओं का लहू न बहने दीजिए। बूचड़खानों में अपने पशु भेजे ही न जाएं। यदि कोई हमको पैसे देगा तो क्या हम अपने बच्चों को मरने के लिए सौंप देंगे?''

''भारतवासी भूखे तभी मर रहे हैं जब गायें भूखी मर रही हैं। यदि गायों को बचाया जाये तो मैं दावे से कह सकता हूं कि भारत में भूखमरी की कोई वजह ही नहीं रहेगी''

''श्री सत्गरु राम सिंह जी की सेवाभाव और प्रेरणा स्वरूप नामधारी सिखों ने गऊओं की रक्षा और देश की आज़ादी के लिए बेमिसाल कुर्बानियां दीं, फांसियों पर चढ़े, तोपों की भेंट चढ़े, काले पानी की सजाएं भुगतीं। जो भी संस्थाएं गऊ धन की रक्षा और सेवा के लिए तैयार रहती हैं हमारा सहयोग हमेशा उनके साथ रहेगा।''

- श्री सत्गुरु जगजीत सिंह

"वह धरती पवित्र होती है, जहां भगवान की शक्ति होती है। नामधारियों ने अपनी कुर्बानियों से देश की संस्कृति और परंपरा को सहेज कर रखा। यहां सदैव ही गुरुओं का भारतीय संस्कृति के लिए श्रद्धा सम्मान रहा है। गऊ माता के लिए असीम प्रेम है। मैं गऊओं की सेवा करता रहा हूं, मेरे हृदय में गऊओं के प्रति अपार भावनाएं हैं। जब मुझे इस संबंधी जानकारी मिली तो मैं बिना किसी कार्यक्रम के अचानक यहां आ पहुंचा।"

– 7 अप्रैल 2004 को स्वामी रामदेव जी ने श्री भैणी साहिब में कहा

"श्री राम, श्री कृष्ण ने गऊ रक्षा करते हुए गाय को मां के समान ही माना है। उनकी यह परंपराएं नामधारी कूकों ने जिस तरह आगे बढ़ाई, उस पर भारत को गर्व है।"

– श्री अश्विनी कुमार जी

(दैनिक समाचार पत्र जगबाणी में छपे संपादकीय लेख 'राम कृष्ण के देश में गऊ माता पर अत्याचार'–5 में से)

"कूका नामधारी सिखों ने गौ रक्षा को नामधारी संप्रदाय का प्रमुख सूत्र बनाया।"

– सर्वदेवमयी गऊ माता की पुकार (सातवां संस्करण) से, चौधरी देशराम मैमोरियल गऊ सेवा ट्रस्ट (रजि.) दिल्ली के द्वारा।

पन्ना नंबर 20 से

गऊ महिमा

सन् 1972 के दौरान मैं जब अमेरिका की ओहाईयो स्टेट यूनिर्विसिटी में विजिटिंग प्रोफेसर के तौर पर पढ़ाता था, तो एक अमेरिकी समझदार प्रोफेसर ने मुझ से सवाल किया कि आप बीफ (गाय का मांस) क्यों नहीं खाते? यह तो सबसे बढ़िया मांस है। मैंने इसका जवाब एक ही सवाल में दे दिया था कि पश्चिमी संस्कृति वाले लोग घोड़े का मांस क्यों नहीं खाते? घोड़े के मांस से बेहतर मांस तो कोई और नहीं है। इसमें चर्बी नाममात्र होती है और बिमारी भी नहीं होती। वह प्रोफेसर तुरंत समझ गया। दरअसल घोड़ा एक ऐसा जानवर है जिससे कृषि कार्य होता है और सवारी व भार ढोने के लिए भी इसका उपयोग होता है। आर्थिक पक्ष को देखते हुए पश्चिमी पूर्वजों ने इसे मारने या इसका मांस खाने से इंकार किया, जिससे कि यह मांस वर्जित माना जाने लगा। घोड़े की महत्ता पश्चिमी देशों में इतनी पैठ बना चुकी थी कि जब बाद में औद्योगिक दौर की शुरुआत हुई तो मशीनों के ईंजन की ताकत को भी घोड़ों की ताकत (हार्स पावर) में गिना जाने लगा।

भारत में गायों की महत्ता तो घोड़ों से कहीं अधिक थी और है। यह तो दूध भी देती है। इसके बछड़े खेती, भार ढोने जैसे काम के लिए प्रयोग होते हैं। हमारे पूर्वजों ने बड़ी समझदारी से गऊ हत्या और गऊ मांस खाना वर्जित कर दिया और आज हिंदू धर्म में गाय को माता का दर्जा हासिल है।

सभी सत्‌गुरुओं ने ही गऊ-गरीब की रक्षा पर बल दिया है। नामधारी सिखों के बूचड़ों से टकराव और कुर्बानियों ने ही देश की गुलामी की ज़ंजीरों को तोड़ने की नींव रखी। सभी हिंदू संप्रदायों और सिख धर्म में गऊ की महानता बहुत है। नामधारी सिखों ने जितनी कुर्बानियां गऊ रक्षा के लिए समरपित कीं, किसी अन्य संप्रदाय या धर्म ने नहीं कीं।

इतना ही नहीं, नामधारी सत्‌गुरुओं ने गऊ सेवा को ही गऊ रक्षा का आधार माना है। बूचड़खानों में जाने वाली गायों को बूचड़खाने से छुड़वाकर, उनकी ऐसे ढंग से सेवा की कि वे गऊएं सर्वोत्तम दूध देने वाली साबित हुईं

और मुकाबलों में पुरस्कार भी जीते। यह सत्‌गुरुओं और उनके सिखों की सेवा का फल था कि उन्होंने साबित कर दिया कि कोई भी गऊ बेकार नहीं होती सिर्फ इसे सेवा और प्यार की कमी होती है, जोकि सत्‌गुरुओं के हाथों और सोचने में कभी महसूस नहीं हुई। इन्हीं भरपूर गुणों के कारण ही सत्‌गुरु जगजीत सिंह जी को गोपाल रतन का सम्मान दिया गया।

सूबा सुरेन्द्र कौर सत्‌गुरु की प्रिय भक्त है। इनकी श्रद्धा, लगन और सत्‌गुरु के प्रति प्रेम व आदर भाव अतुल्य और अनमोल है। इस किताब में सूबा सुरिंदर कौर ने गऊ के प्रति गोपाल रतन, सत्‌गुरु जगजीत सिंह की 'सोचने' व 'करने' वाली प्रवृति को खुलकर व्यक्त किया है। सत्‌गुरु राम सिंह, सत्‌गुरु हरी सिंह और सत्‌गुरु प्रताप सिंह की गऊ पालना और गऊ रक्षा के संदर्भ में तथ्यों के आधार पर जानकारी दी है। इस किताब में गऊशाला, मुकाबलों, दूध के रिकार्ड और गऊ पालकों संबंधी भरपूर जानकारी दी गई है। जिस तरह के गुण थे, उन्हीं के आधार पर गऊओं के बेहद सुंदर और प्यारे नाम सत्‌गुरुओं द्वारा रखे गए। उसी आधार पर ही गऊओं की उपल्बिधयों का भी ज़िक्र किया गया है।

सूबा सुरेन्द्र कौर की यह काबिलियत है कि वह इधर व उधर का वर्णन नहीं करती। जो लिखती हैं - वह तथ्यों और विवरणों के आधार पर होता है। यह महिला जितनी बाहरी खूबसूरती से सराबोर है उतनी ही इनमें भीतरी खूबसूरती की झलक स्पष्ट देखी जा सकती है। गहन श्रद्धा और असीम प्यार से लबालब खूबसूरती की झलक इनके द्वारा सृजित लेखों में देखी जा सकती है। मेरा परमात्मा के समक्ष अनुरोध है कि इनकी यह दैविक खूबसूरती कायम रहे, कलम अधिक ताकतवर बने और समाज को सदैव बहुमूल्य लेखों से नवाजती रहें।

लुधियाना
6 अक्तूबर 2010

(डा.) सरदारा सिंह जौहल
पूर्व वाइस चांसलर
पंजाबी यूनिर्वसिटी, पटियाला

नामधारी समाज में गायें

हिंदुस्तान की संस्कृति में गाय का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। देश की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक चेतना में भी गायों ने अमिट व प्रभावी छाप छोड़ी। 1857 ई. के अंग्रेज विरोधी संग्राम और बाद में गऊ रक्षा के लिए हुए आंदोलन, शहादत और कार्रवाई को अंग्रेजों ने अपने साम्राज्य के विरूद्ध राजनीतिक स्वतंत्रता की लड़ाई माना। महारानी विक्टोरिया ने स्वयं कह डाला कि गायों की रक्षा संबंधी आंदोलन वास्तव में हमारे साम्राज्य के विरूद्ध आंदोलन है।

गऊ की महत्ता के बारे सूबा सुरिंदर कौर खरल की लिखित पुस्तक 'गोपाल रतन' भारत में, विशेषत: नामधारी समाज में गायों के बारे में जानकारी देती है। पाठकों को लेखिका का यह प्रयास अवश्य ही पसंद आएगा।

जसविन्दर सिंह (इतिहासकार)
श्री भैणी साहिब
27 नवंबर 2010

ओउम्
श्री सत्‌गुरु राम सिंह जी सहाए

धन्यवाद

मुझे यह व्यक्त करते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि मैं श्री सत्‌गुरु जगजीत सिंह जी की असीम कृपा, आर्शीवाद और परवानगी के अनुसार यह पुस्तक 'गोपाल रतन' लिख कर छपवा रही हूं। मैं श्री सत्‌गुरु जी के प्रति बेहद शुक्रगुजार हूं।

मैं उन सज्जन महानुभवों को भी बेहद धन्यवाद देती हूं जिन्होंने मेरे इस कार्य में अपना सहयोग दिया।

मैं, डा. सरदारा सिंह जौहल, (पूर्व वाइस चांसलर, पंजाबी यूनिर्वसिटी, पटियाला) को भी अपना हार्दिक धन्यवाद देती हूं जिन्होंने मेरे लिए और मेरी पुस्तकों के लिए अनमोल शब्द लिखे। डा. जौहल, श्री सत्‌गुरु जगजीत सिंह जी के परम श्रद्धालु सिख हैं। आप जी को मिले सनमानों व उपाधियों की सूची इतनी लंबी है कि यदि विवरण देने लगे तो कई पन्ने भर जाएं।

मैं अति धन्यवादी हूं, संत जगतार सिंह पनिहारी (संत जियूण सिंह, सूबा मीहा सिंह सरहाली, स्वतंत्रता संग्रामियों के परिवार से), जो कि समय-समय पर मेरी पुस्तकों के संबंध में सुझाव देते रहते हैं।

मैं सूबा जागीर सिंह छापियां वाली जी की बेहद आभारी हूं जिन्होंने मुझे व मेरी पुस्तक को भरपूर उत्साह और सहयोग दिया।

हजूरी सेवकों हरपाल सिंह और रछपाल सिंह की भी मैं बेहद आभारी हूं जो मुझे लिखते रहने के लिए उत्साह व सहयोग देते रहते हैं। स. जसविन्दर सिंह इतिहासकार को भी धन्यवाद देती हूं जिन्होंने मेरी पुस्तक के लिए कुछेक शब्द लिखे।

गऊशाला के प्रबंधकों - संत अमर सिंह गरेटा, संत साधु सिंह भंगूर , संत बलदेव सिंह गहिलां, संत मघ्घर सिंह, संत रौनक सिंह, संत गुरनाम

सिंह आदि ने मुझे भरपूर जानकारी दी है, उनका भी मैं धन्यवाद करती हूं। सारे नाम शायद मैं लिख न सकूं मगर जिन्होंने भी मुझे अपना सहयोग दिया, उन सबका धन्यवाद करना चाहती हूं।

श्री जीवन नगर के नंबरदार अमर सिंह, संत इकबाल सिंह बल और संत सुखदेव सिंह (टिब्बे वाले) द्वारा दिए सहयोग और जानकारी के लिए भी उनकी आभारी हूं। हजूरी सेवक रछपाल सिंह, फोटोग्राफर सूरतपाल सिंह और बंता सिंह ने इस पुस्तक में छपे चित्र उपलब्ध करवाए, उनका भी मैं आभार व्यक्त करती हूं।

मैं अपने परिवार का भी धन्यवाद करती हूं। मेरे पति स. भगवंत सिंह मुझे हर पक्ष से खोज कार्यों और लेखन-कार्यों के दौरान सहयोग और उत्साह प्रदान करते हैं। बेटी रुपिंदर कौर ने बड़ी मेहनत से कंप्यूटर पर इस पुस्तक का प्रारूप तैयार करके मुझे पूरा सहयोग दिया है, उसका धन्यवाद करते शाबाशी भी देती हूं। बेटे यादविंदर सिंह, बहु हरदीप कौर, पोते यशवंत सिंह और यमुना सिंह के सहयोग के लिए भी बेहद धन्यवादी हूं।

लोकगीत प्रकाशन चंडीगढ़ के श्री हरीश जैन और श्री रोहित जैन जी के प्रति भी मैं अति आभार व धन्यवाद व्यक्त करती हूं जिन्होंने बड़े ध्यान और गहन रूचि से मेरी इस पुस्तक को छाप कर मेरे सपने को पूरी तरह साकार किया।

इस पुस्तक की रचना में यदि किसी कारणवश कुछ त्रुटियां रह गई हों, उसके लिए भी पाठकों से क्षमा प्रार्थी हूं। श्री सत्गुरु जी कृपा बनाए रखें ताकि मैं बेहतर लिख सकूं।

– सूबा सुरेन्द्र कौर खरल

(20 अगस्त, सन् 2010)

गऊ की महत्तता

भारतीय जनजीवन में गाय को एक विशेष स्थान प्राप्त है।

प्राचीन भारत दूध, घी की नदियों वाला देश कहलाता था। गऊ-धन को देश की दौलत और संपत्ति समझा जाता रहा है। उस समय कृषि व्यवस्था गऊ वंश पर आधारित थी। बैलों द्वारा खेती की जाती थी। गोबर की खाद जो धरती का प्राकृतिक भोजन है, से अनाज की पैदावार होती थी। परिणामस्वरूप देश और किसान खुशहाल थे।

वैसे तो दूध सारे ही पशुओं का उत्तम है, मगर गायों का दूध सर्वोत्तम माना जाता है। बचपन में हम गायों का दूध पीते हैं, इसलिए गाय माता के समान हमारी पालना करती है। इसलिए पुरातन काल से ही भारत में गायों को माता समान पूजा, सेवा और सत्कार किया जाता रहा है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार मां के दूध के बाद, गाय का दूध ही मनुष्य के लिए सब से अधिक उपयोगी है। जिस छोटे बच्चे की मां की मौत हो जाती है, उसको गाय के दूध से ही पाला जाता है। गाय का दूध पतला होता है और जल्दी पाचन हो जाता है। बीमार व्यक्ति को भी गाय का दूध दिया जाता है।

गऊ माता द्वारा दिए उत्पाद अमृत की भांति होते हैं। इनके सेवन से विभिन्न तरह के रोगों का नाश होता है और मानसिक विकास होता है। गऊ का दूध बहुत ताकतवर और बुद्धि के विकास में बढ़ोत्तरी करने वाला होता है।

साल 2009-10 को की गई विश्व मंगल गौ ग्राम यात्रा के समय छपा के वितरित किए पंफलेटों के पन्ना नंबर 5 पर लिखे गए लेख 'देसी गऊ के गुण अनेक' के अनुसार-

गऊ के दूध में वैज्ञानिकों के मुताबिक 8 तरह के प्रोटीन, 6 तरह के विटामिन, 21 तरह के अमिनो एसिड, 11 तरह के चर्बीयुक्त एसिड, 25 तरह के खनिज तत्व, 16 तरह के नाइट्रोजन, 4 तरह के फास्फोरस यौगिक, 2 तरह की शर्करा होती है।

- कारनेल विश्वविद्यालय के पशु वैज्ञानिक प्रो. रोनाल्डो गोरसटें

4 मार्च साल 2009 को दैनिक अखबार जगबाणी में छपे लेख 'पंजाब सरकार भी गऊ रक्षा के लिए कठोर कानून बनाए' (लेखक श्री कीमती भगत) के अनुसार –

"गाय के दूध और घी से कैलोस्ट्रॉल नहीं बनता। इसमें मनुष्य की सारी ज़रूरतें पूरी करने की क्षमता होती है। गऊ के घी और चावलों के हवन से आसपास का वातावरण शुद्ध होता है।"

"गऊ के मूत्र में 24 रसायन और गोबर में 16 खनिज तत्व होते हैं। गऊ और गऊवंश के गोबर और गऊ मूत्र से बनने वाली खाद का प्रयोग करने से धरती की उपजाऊ शक्ति बढ़ जाती है और धरती अन्न और धन से भर जाती है। गऊ के गोबर में ज्वलनशील मिथेन गैस होती है, जो ऊर्जा का उत्तम साधन है। गाय के गोबर से गोबर गैस और धरती को आवश्यकता अनुरूप कई तरह की खाद मिलती है।"

"गऊ का गोबर और मूत्र बेहद सस्ता और हानिकारक कीटनाशक है। इसको देश की बदकिस्मती ही कहा जाएगा कि गऊवंश की खाद को छोड़कर हम रासायनिक खादों और रासायनिक कीटनाशक दवाइयों का इस्तेमाल करते हैं, जिसके बुरे परिणाम हमारे सामने हैं। ज़मीन की उपजाऊ शक्ति कम हो गई, पानी का स्तर नीचे चला गया, प्रदूषण की समस्याएं बढ़ गईं। इन सबकी वजह से अनाज, सब्जियां, फल, दूध और पानी से मनुष्य और पशुओं के स्वास्थ्य का खतरा बढ़ गया है।"

"गाय ही एक ऐसा प्राणी है, जिसकी बड़ी आंत 180 फुट लंबी होती है। इसकी खासियत यह है कि इसके दूध में कैरोटीन नामक पदार्थ बनता है, जो शरीर में पहुंच कर विटामिन–ए तैयार करता है। यह आंखों की रोशनी के लिए बहुत ज़रूरी है।"

"गाय की रीढ़ की हड्डी में सूरजकेतु नाम की नाड़ी होती है, जो सूरज की रोशनी में क्रियाशील होती है और पीले रंग का पदार्थ छोड़ती है। इसीलिए गाय का दूध, मक्खन और घी पीले रंग का होता है। यह तत्त्व सर्व–रोग नाशक और ज़हर नाशक है। "

"गऊ को हरेक नज़रिए से, चाहे वह आर्युवेद हो या वैज्ञानिक, अध्यात्मिक, सामाजिक या आर्थिक, संसार का सर्वोत्तम प्राणी माना जाता है।"

"भारत में सभी नसलों की गायों का दूध यूरोपीय गायों के दूध से उत्तम माना जाता है।"

– लेखक श्री कीमती भगत

देसी गाय के दूध में मीठेपन की मात्रा, अमेरिकन गाय के दूध से करीब दोगुनी होती है और दूध, दही, लस्सी, मक्खन और घी भी ज्यादा स्वादिष्ट होता है।

गाय के गोबर की खाद से धरती से पैदा किया गया अन्न और अन्य पदार्थ स्वादिष्ट, पौष्टिक और स्वास्थ्यवर्धक होते हैं।

प्राचीन समय में घरों में पवित्र स्थान–रसोई घर, चूल्हा, हवन–यज्ञ, पूजा स्थान आदि पवित्र और कीटाणु रहित बनाने के लिए गाय के गोबर से लेप किए जाते थे। यह लेप फिनाइल का काम करती थी। दुनिया में गंगाजल के बाद गऊ मूत्र ही है जिसमें कीड़े नहीं पड़ते और लंबे समय तक यह खराब नहीं होता।

आजकल यह भी कहा जाता है कि यदि किसी व्यक्ति का ब्लड प्रैशर (बीपी) कम हो तो गाय को अपने दोनों हाथ चटाने से बी.पी. ठीक हो जाता है, यदि बी.पी. अधिक हो तो गऊ के सिर और पीठ पर हाथ फेरने से बी.पी. ठीक हो जाता है।

गायों के दूध, घी और गोबर की खाद से ही गायों और गाय रखने वाले परिवारों को पालने का खर्चा निकल आता है।

'सर्वदेवमयी गऊ माता की पुकार' सातवां संस्करण, द्वारा चौधरी देशराम मैमोरियल गऊ सेवा ट्रस्ट (रजि.) दिल्ली के अनुसार–

"गाय यदि दूध और बच्चे न भी दे तो, उसके गोबर–मूत्र से ही इतनी आमदनी हो सकती है कि उतने पैसे का चारा वह खा ही नहीं सकती।" (पन्ना 25)

"आम आदमी जिस दिन यह बात मान जाएगा कि गऊ माता धरती के लिए वरदान है, तो उसकी रक्षा में वह स्वयं खड़ा हो जाएगा।" (पन्ना 31)

"कूका नामधारी सिखों ने गौ रक्षा को नामधारी संप्रदाय का प्रमुख सूत्र बनाया।" (पन्ना 20)

भारतीय संस्कृति में गाय का स्थान

गाय को भारतीय संस्कृति का मूल आधार समझा जाता है।

सारे धर्मों में गाय के प्रति अपार आस्था प्रकट की गई है।

वैदिक धर्म में गाय को सर्व-देवमय, सर्व-तीर्थमय और परम पवित्र कहा गया है।

हिंदू धर्म के चार वेदों - ऋगवेद, सामवेद, यर्जुवेद और अथर्ववेद और उपनिषदों, स्मृतियों और भागवत गीता इत्यादि में, गाय की महत्ता के बारे में लिखा हुआ है। ऋगवेद में राजा को आदेश है कि वह गाय-विरोधियों को, जो लोगों को दूध रूपी अमृत से जुदा करते हैं, दंड दें।

सारी इच्छाओं की पूर्ति करने वाली 'कामधेनु गऊ' का ज़िक्र भी हिंदू ग्रंथों में आता है।

कहा जाता है कि भगवान के अवतार का मूल कारण गाय की रक्षा है। सर्वहितकारी धन गाय है। गाय बहुत उपयोगी प्राणी व एक प्राकृतिक जायदाद है।

भगवान श्री कृष्ण की बात करें तो गऊ माता की चर्चा स्वभाविक है। गाय की रक्षा करने और प्रेम से पालन करने के कारण ही भगवान श्री कृष्ण को 'गोपाल' कहा जाता है। जब भगवान बांसुरी बजाते थे तो गाय, बछियाएं उनको घेर लेते थे। वह एक-एक गाय को उसके नाम से बुलाते थे, तो ही कहा जाता है कि गाय की सेवा करने वालों से गोपाल खुश होते हैं और सेवा करने वाले को लोक-परलोक के सारे सुख मिलते हैं।

गोपियों के विरह-नाटक में श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी, भगवान कृष्ण को 'गऊओं के रखवाले' कहकर लिखते हैं - गोपियां विलाप करतीं भगवान श्री कृष्ण को कहती हैं -

"हे सब गऊअन के रखवारे,

कब घर आवहुगे हम हारे।"

पुरातन समय में ऋषि मुनि भी अपने आश्रमों में गायों को रखते थे। घरों में भी तकरीबन हर परिवार, कम-से-कम एक गाय ज़रूर पालता था। जिस परिवार में गायों की संख्या अधिक होती थी, वही धनी माना जाता था। राजे-महाराजे हर शुभ अवसर पर गऊ का दान किया करते थे। हिंदू लोग लड़की के विवाह के अवसर पर कन्या दान के साथ गाय भी दान करते थे।

भगवान श्री राम, गऊ धन को सबसे अधिक महत्त्व देते थे और गऊ दान को सबसे श्रेष्ठ मानते थे।

"भगवान श्री राम को बनवास मिलने के बाद श्री भरत ने अपने बारे में माता कौशल्या के मन में आई दुविधा को दूर करने के लिए कहा,

हे माता, यदि राम-बनवास में मेरा ज़रा भी हाथ हो तो मुझे वह पाप लगे जो एक गाय घाती को लगता है।"

– सत्‌युग का गऊ अंक (9 अक्तूबर चैत्र 2024) पन्ना-24, लेखक श्री राजिंदर सिंह जी गुरुसर

अपनी बात की सच्चाई का सबूत देने के लिए पुराने समय में गाय की सौगंध भी ली जाती थी।

"वैदिक काल से अब तक गाय भारतीय संस्कृति की निशानी मानी गई है। भारत में सिर्फ हिंदू जनता ने ही नहीं, बल्कि सिख, पारसी, जैन, ईसाई आदि सारे धर्म वालों ने भी गाय का सम्मान किया है। धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राष्ट्रीय दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होने के कारण ही गाय को कत्ल की आज्ञा नहीं दी गई। मुस्लिम शासनकाल में भी गाय की इज्जत की जाती थी।"

– सत्‌युग का गऊ अंक (9 चैत्र 2024) – पन्ना 129

"सच तो यह है कि किसी भी धर्म यहां तक कि इस्लाम में भी गाय हत्या को धार्मिक अधिकार नहीं बताया गया।"

"इस्लाम धर्म में हज़रत मोहम्मद साहिब ने कहा है कि गाय का दूध और घी शारीरिक तंदरुस्ती के लिए बहुत ज़रूरी है। इसका मांस हानिकारक और बीमारी पैदा करता है। गाय को 'दौलत की रानी' बताया गया है।"

– श्री कीमती भगत

बौद्ध धर्म में भी गाय को माता-पिता की तरह उपकारी बताया गया है।

"गाय के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करते महात्मा बुद्ध ने कहा था - जैसे माता, पिता, भाई-बहन हमारे हैं, उसी तरह गायें भी हमारी परम मित्र हैं। इनसे औषद्यी, दूध, घी, मक्खन, खोया और पनीर आदि पैदा होता है। अन्नदाता, बलदाता और सुखदाता होने के कारण गाय कत्ल करने योग्य नहीं।"

"नेपाल में गऊ-हत्या को नर हत्या के बराबर समझकर हत्यारे को सजा दी जाती थी।"

"इन लिखितों से स्पष्ट है कि पुरातन समय में गऊ मारने का विधान नहीं होता था, यह परंपरा अंग्रेज़ राज्य लागू होने तक चलती रही है।"

- गऊ अंक पन्ना 24

भारत के बहुत से मुस्लिम शासकों ने अपने राज्य में गऊ-हत्या पर रोक लगा रखी थी।

"बाबर ने भी अपनी मौत के समय हुमायुं को, हिंदूओं द्वारा गाय के प्रति श्रद्धा भावों का सत्कार करने और गौ रक्षा के लिए कोई भी कसर शेष न रखने का उपदेश दिया था। अकबर बादशाह का विशेष आदेश था कि गऊ को कत्ल करने वाली निगाह रखने वालों के हाथ काट दिए जाएं।"

- गऊ अंक पन्ना 24

"मुसलमान बादशाह औरंगजेब अपनी कलम से लिखता है:-

"गाय विरोधी हिंदुस्तान पर राज नहीं कर सकता।" भाव है कि उसका राज्य जल्दी ही नष्ट होगा।

- गऊ अंक पन्ना 108

भारतवासियों के धर्म का एक विशेष अंग है - गऊ गरीब की रक्षा करना।

"नज़ाम हैदराबाद ने गाय-वध पूरे तौर पर बंद किया हुआ था। महात्मा गांधी जी ने भी लिखा था: "मैं गाय-रक्षा को स्वराज से भी कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण समझता हूं।"

"नेहरू जी ने खुद की जीवनी में यह माना है कि - "गाय हिंदुओं की

मां समान पशु है और यह हैरानी की बात नहीं कि हिंदू अहिंसक और शांति प्रेमी हैं। गाय को मैं संपन्नता और सौभाग्य की जननी मानता हूं।''

– गऊ अंक पन्ना 24

गुरु गोलवलकर जी ने कहा है:-

''अवस्था का विचार किए बिना गऊ वंश की हत्या जब तक हम पूरी तरह बंद नहीं करते, तब तक हमारा स्वराज अधूरा है।''

''श्री मालविया जी ने कहा है कि गऊ वंश की रक्षा में ही देश की रक्षा समायी हुई है। सिख धर्म भी गऊ रक्षा से वचनबद्ध है।''

– श्री कीमती भगत

''सारे ही कार्य संवारने वाली गऊ की महानता को भारत और अन्य दूसरे देशों के महानुभावों ने भी महसूस किया है। अमेरिका के एक गर्वनर मेल-कम-आर-वेटरसन के मुताबिक – गाय बिना ताज की महारानी है। उसका राज्य सारी पृथ्वी पर है। सेवा उसका अधिकार है और वह जो कुछ लेती है उसका सौ गुणा करके लौटा देती है।''

– गऊ अंक पन्ना 138, श्री मिहर सिंह जी कानपुर

सिख गुरुओं के जीवन और सिख धर्म की परंपरा में गाय-गरीब की रक्षा का विशेष वर्णन है। श्री गुरु नानक देव जी ने हर प्रकार के जीवों की हिंसा करने से मना किया और गाय-रक्षा को सिख धर्म का एक विशेष कर्तव्य बताया।

मक्के-मदीने की गोशटी के दौरान जब काज़ी रुकनदीन ने गऊ-सूअर की महत्ता जाननी चाही तो श्री गुरु नानक देव जी ने फरमाया –

''नानक आखे रुकनदीन लिखिया विच किताब।

गऊ-सूअर को मारियां लगन बहुत अज़ाब

गऊ-चौदवां रतन है, कामधेन तिह नामु।

पूजन सब अवतार तिह करके मात समान

शीर जिनां दा पीविए तिस मारियां बहुत गुनाह।''

(22 जवाब पन्ना 156 करनी नामा)

वर्तमान युग में, सारे महापुरुषों की यही सोच है कि गांव-गांव, शहर-

शहर गऊशालाओं का निर्माण किया जाना चाहिए और गऊओं को सड़कों पर भटकने के लिए मज़बूर नहीं होने देना चाहिए।

आज गुरुओं, पीरों, ऋषि-मुनियों की धरती कहे जाने वाले भारत में जगह-जगह गाय-हत्याएं हो रही हैं।

समूची मानवता की भावनाओं का सम्मान करते भारत में गाय-हत्या पर रोक लगाने के लिए कठोर कानून बनाए जाने चाहिए। साल 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में भले ही सारे देश में आज़ादी की चिंगारी सुलग रही थी मगर फिर भी चर्चाएं यही थीं कि हथियार चलाने के लिए कारतूसों पर गाय और सूअर की चर्बी लगी हुई थी।

जिस देश में सदियों से गाय की पूजा होती चली आ रही है, उस देश में गायों के गले में छुरी नहीं चलाई जानी चाहिए।

सिख धर्म की परंपरा

सारे गुरु साहिबानों ने श्री गुरु नानक देव जी द्वारा स्थापित गाय-गरीब की रक्षा और सेवा के नियमों को निभाया।

श्री गुरु अमरदास जी ने गाय-घातक मनुष्य को कोहड़ी और दुत्कारा गया पापी पुरुष बताया।

श्री गुरु अर्जुन देव जी ने गर्म लोह, गरम रेत और उबलती देग के कष्ट सहे मगर जब उन्हें पता लगा कि अब उनको गाय की चर्बी और कच्चे चमड़े के प्रयोग से जोड़ दिए जाने की मुगल शासक द्वारा साजिश रची जा रही है तो सच्चे पातशाह जी रावी में स्नान करने के बहाने, दरिया में अलोप हो गए मगर उन्होंने गाय-धर्म की पालना को ठेस नहीं लगने दी।

श्री गुरु हरगोबिंद जी को एक बार, एक गाय मारे जाने की खबर उस समय मिली, जब गुरु जी प्रसाद ग्रहण करने लगे थे। गुरु जी ने प्रसाद को तुरंत छोड़कर उसी समय जाकर गाय के हत्यारों को कठोर दंड दिया और फिर वापस आए।

श्री गुरु हरगोबिंद जी ने, गुरु घर के सच्चे सेवक बाबा बुड्ढा जी के संस्कार के दौरान अल्लाहणीयां का पाठ बीच में ही छोड़कर तुर्कों द्वारा की जा रही गाय को हत्या से बचाया। सिखों के पूछने पर श्री सत्‌गुरु जी ने फरमाया कि पाठ या संस्कार के पुण्य से गाय को मारा जाना बड़ा पाप है।

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने नयना देवी की पहाड़ी पर हवन करने के उपरांत शक्ति से तुर्कों का नाश करने की आज्ञा, इसलिए मांगी थी क्योंकि तुर्क गाय-विरोधी थे और श्री दशमेश गुरु जी गाय रक्षक थे। दुष्ट दमन साहिब श्री गुरु दशम पातशाह जी अपनी बाणी में अकाल पुरख के आगे सारी पृथ्वी से गाय विरोध समाप्त करने के लिए विनय करते हुए इस प्रकार अरदास करते हैं-

"यही देह आज्ञा तुर्कन गही खपाऊं।

गऊ-घात का दोख जग सियूं मिटाऊं।" (छंद पांचवा)

"यही आस पूर्ण करहु तुम हमारी।

मिटे कष्ट गऊअन छूटे खेद भारी।" (छंद पांचवा)

"यही बेनती खास हमरी सुणीजे।

असुर मार कर रक्षा गऊअन करीजे।"

-उग्रदंती श्री मुखवाक पा: दसवीं

जब आनंदपुर साहिब के किले को मुगल बादशाह औरंगजेब और पहाड़ी राजाओं की फौजों ने घेरा डाल दिया था, सिखों और माता जी के कहने पर श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने किला नहीं छोड़ा। दुश्मन पहाड़ी राजा चाहते थे कि किसी न किसी तरह गुरु जी बाहर आएं। राजाओं ने चाल चली, आटे की गाय बनाकर किले के दरवाजे के आगे खड़ी कर दी और गाय का वास्ता देकर गुरु जी को बाहर निकलने के लिए विवश कर दिया। दुश्मनों की कपट नीति जानते हुए भी श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने गाय के सम्मान में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। दशम पातशाह जी ने नकली गाय के समक्ष ली गई कसम पर भरोसा करके आनंदपुर साहिब का किला छोड़ दिया तो पहाड़ी राजाओं ने झूठी कसम त्याग कर गुरु जी की फौजों पर आक्रमण कर दिया था। 'सूरज प्रकाश' में इसका वर्णन इस प्रकार किया गया है -

"आन गऊ सहि न सके प्रभ,

तत छिन्न कीनस तयारी

कूच करन को बजयो तमामा,

सब के सूरत धुन डारी।" (34)

"होई रंक सम दई सपथ 'गऊ'

हैफ फौजू राज समाजा।

मम जैसे क्षत्री नही माने,

तो भी नीक न काजा।" (43)

"जे हम धेन शपथ नहि माने,
आन कौन तब माने।
दया सिंह दित समझ बिचारहु
रिप जीवत हत जाने।" (45)

– गुरु प्रताप सूरज 234 अंशु 37

भाई गुरुदास जी ने अपनी वारों में लिखा है:-

"गाय रंग बरंग बहु दूध उज्जल वरना।
दूधों दहीं जमाइये कर निहचल धरना।
दहीं विलोई अलोए केछाह मक्खन करना।
मक्खन ताए औटाऐके घियो निर्मल करना।
घियो ते होवन होम जग सब कारज सरना"

इतिहास के अनुसार जब श्री गुरु गोबिंद सिंह जी द्वारा नवाजे गए बाबा बंदा बहादुर दुष्टों का संहार करने पंजाब आए तो वह जिस भी ज़ालिम नवाब को मार कर उसके इलाके पर कब्जा करते तो श्री दशमेश जी के सिद्धातों के अनुसार सब से पहले वहां गाय-हत्या बंद करवाते। बंदा बहादुर ने समूचे पंजाब पर खालसायी झंडा झूला दिया और कुछ समय के लिए पंजाब में पूरी तरह मुगल राज्य समाप्त कर दिया। इसके बाद पंजाब में सिख समुदाय का राज्य स्थापित हो गया। सिख समुदाय के राज्य के बाद पंजाब में महाराजा रणजीत सिंह की देखरेख में खालसा राज्य कायम हुआ जिसने विदेशी ताकतों और आक्रमणकारियों को दर्रा खैबर द्वारा आने के लिए उनका रास्ता सदैव के लिए बंद कर दिया। पंजाब में महाराजा रणजीत सिंह के शासनकाल में गाय-हत्या पर कठोर पाबंदी के अलावा यह आदेश भी जारी किए गए थे कि पंजाब के रास्ते इधर-उधर जाता कोई सैलानी या शासक 'गऊ-मांस' का प्रयोग किसी भी हालत में न करें। इन आदेशों पर कठोरता से पालन करवाया जाता था। इस राज्य में गाय मारने वाले को मौत की सजा का सीधा आदेश था। इस बारे में जे. डब्ल्यू मैकनब कमिश्नर, अंबाला 9 फरवरी 1872 ई. को टाइमज़ अखबार में लिखते हैं-

"यूअर रीडरज़ विल बी अवेयर देट द किलिंग आफ काइन इज़ एन

एबोमीनेशन टू ऑल हिंदूज़ आफ हूम द सिखस आर एन आफ शूट। वेन द सिखस वर इन पावर, पैनल्टी फार किलिंग काइन वाज़ डेथ।'' अर्थात

"Your readers will be aware that the killing of kine is an abomination to all Hindus of whom the Sikhs are an off shoot. When the Sikhs were in power, penality for killing kine was death."

''तुम्हारे पाठक यह जानते होंगे कि सिख जो हिंदुओं में से ही हैं और सारे हिंदू गाय मारने वालों से बड़ी घृणा करते हैं। सिख राज्य के समय गाय मारने वाले को मौत की सजा का आदेश था।''

''चेलों वाले युद्ध में गोरे भेड़ों की तरह सिखों के आगे से डर कर भागते हुए मुंह में घास लेकर ड़ऊ-ड़ऊ (गऊ-गऊ) करते थे। उनको पता था कि सिख गाय कहने पर छोड़ देंगे, मारेंगे नहीं।''

– गऊओं के रखवाले, पन्ना 5, लेखक संत हरपाल सिंह 'सेवक'

साल 1839 इसवी में महाराजा रणजीत सिंह का स्वर्गवास हो गया। सिख सरदारों और डोगरे राजाओं की गद्दारियों की वजह से सिख राज्य का पतन हो गया। दस साल बाद ही समूचा खालसा राज्य अंग्रेजी हकूमत के पास चला गया और लाहौर के किले पर केसरी निशान की जगह यूनियन जैक झूलने लगा।

अंग्रेजों राज्य के समय

ब्रिटिश शासक भली भांति जानते थे कि भारत के हिंदू-सिख लोग गाय हत्या के विरूद्ध हैं, इसके लिए 25 मार्च साल 1847 को लाहौर के रेजीडेंट सर हैनरी एम. लारेंस ने अमृतसर के श्री हरमंदिर साहिब में तांबे की प्लेट पर नीचे दिए शब्द लिखवाकर बोर्ड टंगवा दिया था –

'काइन आर नॉट टू बी किलड एट अमृतसर'

'kine are not to be killed at Amritsar'

20 मार्च 1849 ई. को लार्ड डलहौजी ने पंजाब को एक तरह से ब्रिटिश साम्राज्य में ही मिला लिया। सिख फौजें तोड़ दी गईं। पंजाब अंग्रेजों का गुलाम हो गया। जब अंग्रेजी हकूमत पूरी तरह पंजाब पर काबिज़ हो गई और सिर ऊपर कर पंजाबी सरदार, जागीरदार और गुरुद्वारों के महंत, अंग्रेजों के गुण गाने लगे तो अंग्रेजों ने अपना असली रंग दिखाना शुरू कर दिया। लोगों का ध्यान अपनी क्रूरता की जगह किसी दूसरी तरफ खींचने के लिए अंग्रेजों ने हिंदू, सिख और मुसलमानों में फूट डालने की साजिशें रचीं। पंजाब के प्रशासनिक बोर्ड ने अपनी चिट्ठी नंबर 2 के अनुसार 3 मई 1849 इसवी को पंजाब में गाय मांस खाने और गाय वध करने की छूट दे दी। ये आदेश ज़िलों के डिप्टी कमिश्नरों के माध्यम से लोगों तक पहुंचाया गया। पर साथ ही यह हिदायत दी गई कि बूचड़खाने शहरों से बाहर खोले जाएं।

20 मई 1849 को एक अन्य पत्र के माध्यम से गर्वनर जनरल ने सरकारी फरमान जारी किया –

"नो वन शुड बी एलाउड टू इंटरफियर विद द प्रेक्टिस, बाय हिज़ नेबर आफ कसटमस विच देट नेबरस रिलीज़न परमिटस। "

"No one should be allowed to interfere with the practice, by his neighbour of customs which that neighbour's religion permits."

"किसी व्यक्ति को अपने पड़ोसी की धारमिक मर्यादा, रीति-रिवाजों

और जीवन ढंग में रुकावट पाने या हस्तक्षेप करने की आज्ञा नहीं दी जाएगी।"

ब्रिटिश शासकों ने यह कहकर कि हर किसी को अपने धर्म में रहने की पूरी छूट है, सारे पंजाब में बूचड़खाने खोलने की आज्ञा दे दी। मुसलमान और इसाईयों को गाय-वध की पूरी आज़ादी हो गई।

अंग्रेज स्वयं गाय का मांस खाते थे, इसके लिए उन्होंने मुसलमानों को लालच देकर उकसाया और जगह-जगह पर बूचड़खाने खोलने की छूट दे दी। अमृतसर, रायकोट और मलेरकोटला में खोले गए बूचड़खानों का मुख्य उद्देश्य था कि गाय हत्या द्वारा हिंदू और सिखों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाकर गुलामी का अहसास करवाना। अमृतसर श्री हरमंदिर साहिब के नज़दीक घंटा घर वाली जगह की ओर, रायकोट में दसवें पातशाह जी के गुरुद्वारे के नज़दीक बूचड़खाने खोले गए। गऊ हत्या करके, गऊ मास बेचा ही नहीं जाने लगा बल्कि सिखों और हिंदुओं के पूजनीय धार्मिक स्थानों को मांस और हड्डियां फेंक कर अपवित्र किया जाने लगा। श्री सत्गुरु राम सिंह जी के सिखों से यह सहन नहीं हो सका। बूचड़खानों पर हमला करके गायों को आज़ाद करवा कर नामधारियों ने अंग्रेजों से सीधी टक्कर ली।

श्री सत्गुरु राम सिंह जी के राजकीय, सामाजिक और धार्मिक कार्यक्रम में गाय रक्षा का मसला भी शामिल था। श्री सत्गुरु जी ने अंग्रेज राज्य की दहशत की प्रवाह न करते हुए धर्म युद्ध के लिए नामधारियों को संगठित किया।

श्री सत्गुरु जी के नेतृत्व में नामधारी सिखों ने गाय रक्षा के लिए अनेक कुर्बानियां दीं, कष्ट और दुख सहन किए और अंग्रेजों को यह अहसास करवा दिया कि श्री गुरु गोबिंद सिंह जी की सिक्खी, शूरवीरता और साहस अभी जीवित हैं और नामधारी तब तक दम नहीं लेंगे जब तक गाय विरोधियों को निकाल कर देश को आज़ाद नहीं करवा लेते।

अमृतसर में हरीमंदिर साहिब के नज़दीक खोले गए बूचड़खाने में चीलें और कौए, गायों की छोटी-छोटी हड्डियों और टुकड़ों को उठाकर सरोवर में फेंकने लगे तो यह अंग्रेज हाकमों द्वारा हिंदू सिखों को एक चेतावनी थी। इसमें उनका एक उद्देश्य यह भी था कि यदि उनके भीतर अभी भी कहीं

विद्रोह का बीज शेष है तो भड़क के उग जाएगा, हम उसे मसल कर रख देंगे और फिर बिना किसी डर के राज्य करेंगे।

अंग्रेजी हकूमत की इस चुनौती को श्री सतगुरु राम सिंह जी द्वारा नवाजे नामधारी सिखों ने कबूल किया। सबसे पहले उन्होंने अमृतसर में खोले गए बूचड़खाने पर हमला करके गायों को आज़ाद करवाया। बाद में आप अदालत में पेश हुए। शब्द पढ़ते शहादत का जाम पीने के लिए राम बाग बोहड़ की ओर कूच किया।

गायों को बूचड़खानों से छुड़ाने के जुर्म में, अंग्रेजी हकूमत द्वारा साल 1871 को अमृतसर में चार, रायकोट में तीन और लुधियाना में दो नामधारी सिखों को, सिर्फ भारतीय लोगों के दिलों में दहशत पैदा करने के लिए, सरेआम फांसी देकर शहीद कर दिया गया। इन सिखों ने मुंह नहीं ढका, टोपी नहीं पहनीं। स्नान कर अरदास की, जीत का जयकारा लगाया। फांसी के रेशमी फंदे अपने आप गले में डाले और शहीद हो गए। अमृतसर साके में शामिल भगौड़ा करार दिए गए झंडा सिंह को अंग्रेज शासकों ने साल 1873 में पकड़कर, फांसी देकर शहीद कर दिया।

मलेरकोटला में 17-18 जनवरी साल 1872 (6-7 माघ, संमत 1928) को इसी दोष के अधीन बिना मुकद्मा चलाए 66 नामधारी सिखों को शहीद किया गया। 17 जनवरी साल 1872 को मलेरकोटला के रकड़ में सात तोपें सात बार चलाईं गई और 49 सिख भाग-भाग कर स्वयं ही तोपों के समक्ष आकर, देश की आज़ादी के लिए अपने शरीर का कतरा-कतरा उड़वाकर शहीद हो गए। 50वां शहीद हुआ सिख एक 12 साल का बालक बिशन सिंह था। इसको तलवार से काटकर शहीद किया गया था क्योंकि इसने गुस्से में अंग्रेज अफसर कावन की दाड़ी को जाकर पकड़ लिया था। कावन ने इसको कहा था कि तू कह दे कि मैं श्री सतगुरु राम सिंह का सिख नहीं, तेरी जान बख्श देंगे। बाकी के 16 सिखों को 18 जनवरी 1872 को तोपों से शहीद किया गया। अंग्रेजों ने, नामधारी सिखों को कई प्रकार के कष्ट देकर, समुंदर में डुबोकर, काले पानी की सजा देकर और कई प्रकार से शहीद किया।

अंग्रेज हाकम सोचते थे कि इन आंदोलनकारियों को सरेआम फांसियों पर चढ़ा देने, तोपों से उड़ा देने से लोगों में डर फैल जाएगा। फिर कोई हमारे

खिलाफ ऊंची सांस भी नहीं ले सकेगा पर श्री सत्‌गुरु राम सिंह जी ने अपने सिखों के भीतर मौत का डर समाप्त करके शूरवीरता और कुर्बानी का जज्बा भर दिया था। आंदोलनकारियों की इस जोशीली भावना से कई देशभक्त लहरों ने प्रेरणा ली।

अमृतसर, रायकोट, लुधियाना और मलेरकोटला में गायों के बदले शहीद होने वाले सिंहों का हाल लिखते हुए भाई चंदा सिंह लिखते हैं –

इह मलेछ लंदणों आए।

एनां बूचड़खाने लाए।

सानु दुख गऊआं दा खाए।

सिंहों सिर देणे हुण आए।

नाम अकाल दे।

संत ध्यान सिंह 'कादराबादी' रचित सत्‌गुरु बिलास के सैवये अनुसार–

''सीस दीए अर सी न करी जिन,

सिखन ताहि को मैं बलिहारी।

गो–हित गो इतनी सहि कर जिन,

बूचड़ मार के धेन उभारी।

ते सिख वा गुर केहर राम को,

ध्यान मरगिंद करोर जुहारी।

गोई गरीबन पालन के हित,

राम मरगिंद आयो तन धारी।''

मलेरकोटला साके के शहीदी कांड के तुरंत बाद, 18 जनवरी साल 1872 को श्री सत्‌गुरु राम सिंह जी को 1818 के रेगुलेशन ।।। कानून के तहत उनके निजी सेवक भाई नानू सिंह और प्रमुख सूबे साहिबान समेत कैद करके अलाहाबाद के किले में नज़रबंद किया गया। वहां से, 16 मार्च 1872 को, श्री सत्‌गुरु जी को उनके निजी सेवक समेत, कलकत्ता से रंगून (बर्मा) में भेज दिया गया। वहां से भी करीब आठ साल बाद श्री सत्‌गुरु जी को, देश से हुक्मनामों के माध्यम से नाता तोड़ने के लिए, मरगोई टापू (बर्मा) में रखा

गया। सूबों (प्रमुखों) को अलग-अलग स्थानों पर भेज कर कैद कर लिया गया।

श्री सत्गुरु राम सिंह जी रंगून से भेजे अपने हुक्मनामे में लिखकर भेजते रहे -

"हमें गऊओं के मारे जाने का बहुत दुख है, क्योंकि गऊओं में गुण बहुत हैं, अवगुण कोई भी नहीं।"

"एक गऊ के लिए अभी भी तरस ठीक आता है, क्योंकि गऊओं में अनेक गुण हैं अवगुण कोई भी नहीं। विचार लीजिए।"

श्री सत्गुरु जी के प्रदेश गमन के दौरान, श्री भैणी साहिब की दहलीज के आगे पुलिस चौकी तैनात कर दी गई, जोकि करीब 50 साल (साल 1872 से 1923 तक) रही। श्री सत्गुरु हरी सिंह जी और श्री सत्गुरु प्रताप सिंह जी के काल में जैसे अंग्रेज सरकार ने नामधारी पंथ पर कठोरता और जुल्म किए, यह एक रौंगटे खड़े कर देने वाला गौरवमयी इतिहास है। मुश्किल कठिनाइयां सहन करते हुए भी श्री सत्गुरु हरी सिंह जी ने श्री भैणी साहिब में सदैव लंगर का प्रबंध करने के साथ-साथ गऊशाला कायम रखी और गऊ सेवा में अंतर नहीं आने दिया। गुरु जी सुबह अपने नित्यकर्म से निपटने के बाद सबसे पहले तबेले में आकर गायें देखते थे।

श्री सत्गुरु प्रताप सिंह जी के समय नामधारी सिखों पर पाबंदियां और सख्ती कुछ नरम पड़ गईं। इसके फलस्वरूप सत्गुरुओं ने प्रचार दौरे पंजाब से बाहर करने शुरू किए। श्री भैणी साहिब में संगतों का अधिक जमावाड़ा लगने लगा। होल्ला और जप प्रयोग के बिना कई कान्फ्रेंस और समारोह, मेले अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाए जाने लगे। इसलिए ज़रूरत अनुरूप सत्गुरु जी ने गऊशाला का व्यापक स्तर पर विकास किया। भारतीय शुद्ध नसल की खास करके साहीवाल और हरियाणा नसल की गायें, गऊशालाओं में रखीं। कौन सी गाय कितना दूध देती है और कितने समय दूध देती है, उनका पूरा रिकार्ड सत्गुरु जी द्वारा रखा जाता था।

श्री सत्गुरु जी द्वारा नामधारी जगत को सख्त आदेश था कि कोई भी नामधारी किसे बूचड़ को गाय न बेचे। उन्होंने भारत के बंटवारे के बाद हरियाणा प्रदेश की धरती से उजड़ कर आए नामधारियों को बसाने के लिए

ज़िला हिसार (अब ज़िला सरसा) में श्री जीवन नगर, संत नगर आदि बहुत सारे नए गांव बसाए और नामधारियों को अनेक बीघे ज़मीनें मुफ्त बांटी और साथ ही गाएं भी बांटी।

"सत्गुरु जी ने 2-3 जेठ (सम्वत् 2011 बि.) को दिल्ली गऊ वध बंद करने के संबंध में हुए सम्मेलन में दर्शन दिए और बोले भी कि सिर्फ गाय पूजक न बनो, गाय पालक बनो। गाय की नसल सुधारो और भीतर से गाय को प्यार करो। बहुत दूर दराज से हिंदू धर्मी लोग आए थे और बोले भी थे।"

– जस्स जीवन भाग – 6 पन्ना 33 रचित संत तरन सिंह वहमी

आज़ादी के समय

नामधारी पंथ ने देश के स्वतंत्रता संग्राम में विशेष योगदान दिया। अनेक कुर्बानियां दी गईं। श्री सत्गुरु प्रताप सिंह जी ने देश की आज़ादी के बाद कोई मांग नहीं रखी।

साल 1945 ईसवी में शिमला में वेवल कांफ्रेंस हुई। वहां गए हुए पं. जवाहर लाल नेहरू, मौलाना आज़ाद आदिक की मुलाकात श्री सत्गुरु प्रताप सिंह जी से हुई। बातचीत के दौरान श्री सत्गुरु जी से पूछा गया कि 'कांफ्रेंस में विभिन्न श्रेणियां और पार्टियां अपनी-अपनी मांगे लेकर पहुंची हैं, आप क्या चाहते हो? क्या आप जी की भी कोई खास मांग है?' श्री सत्गुरु जी ने उत्तर दिया कि उनकी कोई मांग नहीं है। सिर्फ एक हार्दिक इच्छा है कि भारत आज़ाद हो और ऋषियों-मुनियों के इस देश में गाय-गरीब की रक्षा हो सके। आज़ाद भारत में गाय-वध पूरी तरह से बंद हो।

पर श्री सत्गुरु प्रताप सिंह जी के समय, आज़ाद भारत में गायों के मसले ने एक अलग रूप अख्तियार कर लिया। जिस हिंदू धर्म की प्रतीक केवल गाय ही थी, उसमें इतना परिवर्तन आ गया था कि राजकीय प्रतिनिधियों ने कानूनी तौर पर, नकारी गई गायों का कतल होना मान लिया। कुछ हिंदू दुकानदारों ने खालों का व्यापार शुरू कर दिया और अजन्मे बछड़े-बछड़ियों का कोमल चमड़ा प्राप्त करने के लिए गायों का खात्मा करवाना भी व्यापार में शामिल कर लिया।

अंग्रेजों के राज्य के समय नामधारियों ने मलेरकोटले, रायकोट और अमृतसर में खोले गए बूचड़खानों का विरोध किया और बूचड़खानों पर हमला करके गायों के रस्से खोलने के बदले फांसियों पर लटक गए, तलवारों से शहीद हो गए, तोपों के आगे पुरजा पुरजा हो उड़ गए। उसी देश भारत के आज़ाद होने के बाद, अनेक बूचड़खाने खोल दिए गए।

जब राजकीय अखाड़े में यह नारा उठा कि क्योंकि भारतीय गायें दूध

थोड़ा देती हैं और खाना बहुत खाती हैं, इसके लिए बढ़िया नसल की गायों को बाहर से लाकर पालन करना चाहिए। श्री सत्गुरु प्रताप सिंह जी ने इस गलत धारणा को बदलने के लिए भारतीय गायों की नसल सुधारने के लिए अनेक सफल प्रयास किए।

श्री सत्गुरु जी ने श्री भैणी साहिब और श्री जीवन नगर में गऊशालाओं को कायम किया। इनमें साहीवाल, हरियाणा के देसी नसल की गऊएं रखी गईं। श्री जीवन नगर (तब ज़िला हिसार, अब सरसा) में श्री सत्गुरु हरी सिंह पशु पालक फार्म खुलवाया। इस फार्म की गऊएं हर साल भारत भर के दूध मुकाबले में पहले नंबर पर रहीं। आम गऊएं अपने जीवन काल में 19400 पौंड दूध देती है जबकि श्री जीवन नगर के उपरोक्त फार्म की एक गऊ नौलखी ने अपने सूतीपने के दौरान एक बार में ही 14150 पौंड से अधिक दूध दिया था।

''नौलखी, श्री सत्गुरु प्रताप सिंह जी के घर पैदा हुई साहीवाल नसल की गऊ जिसने 300 दिन 14150 पौंड, एक दिन में अधिक से अधिक 74 बटा तीन चौथाई पौंड और सारे सूतेपन में सवा 24 पौंड रोजाना औसत दूध दिया। एक दिन में 2 सेर मक्खन (करीब 1 सेर 10 छटांक घी) भी इसने दिया।''

''हुक्मी, श्री सत्गुरु प्रताप सिंह जी के घर पैदा की हुई वह गाय जिसने सुदंरता में और दूध देने में भारी शोभा प्राप्त की। इसने उत्तरी क्षेत्र पशु प्रदर्शनी में सर्वोत्तम पशु होने की वजह से 1000 रुपए नकद और 5 कप इनाम में जीते। 306 दिनों में 9502 पौंड दूध और सारे सूतेपन में 16 पौंड रोजाना औसत दूध दिया।''

– सत्युग का गऊ-अंक

श्री सत्गुरु जी दिन में एक बार गायों को ज़रूर देखते। हर एक गाय का विशेष ध्यान रखते। आप अपने वचनों में कहा करते थे – ''गायों को देख कर मेरा दिल खिल उठता है।''

सेवाओं के फलस्वरूप श्री सत्गुरु प्रताप सिंह जी की गऊओं ने देश भर में हुई प्रतियोगिताओं में पुरस्कार जीते और दूध व घी के नए रिकार्ड कायम किए।

हरियाणा नसल की गाय भोडी और इसी नसल की गाय चंदरमणी ने पशु प्रदर्शनियों में सर्वोत्तम पुरस्कार जीते। ऐसे अनेक उदाहरण हैं।

बूचड़खानों में जा रही गऊओं को खरीद कर और उनकी बेहतर सेवा करके, श्री सत्‌गुरु जी ने इन गायों से साधारण से कहीं अधिक मात्रा में दूध व घी प्राप्त किया। एक हरियाणा नसल की गाय 'निशानी' को लुधियाना में बूचड़खाने से श्री सत्‌गुरु जी ने छुड़वाया था। बाद में श्री भैणी साहिब पशु प्रदर्शनी में यह गाय 'निशानी' सर्वोत्तम पशु करार दी गई। श्री सत्‌गुरु जी अपने वचनों में कहते थे कि –

"गायों की सेवा ऐसे बेकार नहीं जाती, इनका गोबर ही सेवा का मूल्य दे जाता है।"

श्री सत्‌गुरु जी खेतों में गोबर की खाद को विशेष महत्त्व देते थे।

सम्वत् 2009 की 'सर्व हिंद पशु प्रदर्शनी' हिसार में हुई। इसमें सबसे अधिक पुरस्कार जीतने वाली गायें श्री सत्‌गुरु प्रताप सिंह जी की थी। विजेता पशुओं के मालिकों को पुरस्कार देने के बाद उस समय के राष्ट्रपति डा. राजेंद्र प्रसाद जी ने कहा –

"जो लोग गाय मारते हैं, उनमें बल तो है लेकिन बुद्धि नहीं।"

राष्ट्रपति जी ने यह भी कहा, "जिसने गाय पालन सीखना है वह श्री सत्‌गुरु प्रताप सिंह जी के पास जाकर सीखे।"

स. प्रताप सिंह कैरों ने कहा, "सत्‌गुरु प्रताप जी ने घोड़े पाले हैं तो देश-विदेश में सर्वोत्तम दर्जा हासिल किया है। गाय-भैंसो की नसले बनाई है तो सबको मात दे दी।"

श्री सत्‌गुरु जी गऊशाला में सेवा करने के लिए तीन-चार गायें, एक-एक सेवक को दिया करते हैं।

संत मग्घर सिंह (सैदों वाले) ने मुझे (इस पुस्तक की लेखिका को) बताया –

"मैं बचपन से ही श्री सत्‌गुरु प्रताप जी के आदेश के अनुसार गऊएं चारने, पठ्ठे पाने और दूध निकालने की सेवा किया करता था। श्री सत्‌गुरु जी ने दिल्ली काबुली शाह की डेयरी से 600 रुपए में एक गऊ खरीदी थी। इस

गाय का नाम श्री सत्गुरु जी ने 'पुतली' रखा। पुतली गाय ने पहली बछिया के समय 14 सेर दूध दिया। हमेशा सूएपन के दौरान उसका दूध चार-पांच सेर बढ़ता गया। जब से यह गाय लाए, सच्चे पातशाह जी के आदेशानुसार, मैं अन्य गायों के साथ इसकी सेवा संभाल करता था। पुतली गाय के निचली सतह के थनों के पास बग्गीयां (सफेद) लाल दाने उग आए थे।''

एक दिन गऊशाला के प्रबंधक सूबा वरियाम सिंह ने गाय को देखते हुए श्री सत्गुरु जी को विनय करते हुए कहा -

''सच्चे पातशाह जी गाय तो बढ़िया है पर लाल-लाल दाने हो रहे हैं।''

श्री सत्गुरु जी ने वचन देते कहा -

''वरियाम सिंह, यह अधिक दूध देने वाली बनेगी।''

संत मग्घर सिंह ने बताया, ''मैं उस दौरान नज़दीक ही खड़ा था। बाद में यह पुतली गाय श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी के समय लगातार तीन साल 'सर्व भारतीय दूध मुकाबले' में पहले नंबर पर आती रही और साल 1964 के मुकाबले में 63 पौंड दूध कर पहले नंबर पर आने के कारण श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी को 'गोपाल रतन' पुरस्कार मिला।''

श्री सत्गुरु प्रताप सिंह जी ने ग्रामीण क्षेत्रों में पशु प्रदर्शनियां करवा कर और पुरस्कार देकर लोगों को पशुओं की सेवा संभाल के लिए उत्साहित किया। गाय रक्षा के लिए विशेष प्रयास किए।

भारत सरकार ने श्री सत्गुरु जी को पशु धन की उन्नति के लिए बनाई गई कमेटी में विशेष तौर पर शामिल किया था। श्री सत्गुरु प्रताप सिंह जी ने अपने वचनों में कहा था -

''गायों की सिर्फ पूजा ही नहीं, सेवा भी करनी चाहिए। गाय की सेवा से गौ रक्षा स्वयं हो जाएगी।''

''गायों की नसल सुधारने के लिए उच्च कोटि के प्रयत्न किए जाएं ताकि गऊ धन हमारे देश के आर्थिक विकास का आधार बन सके।''

श्री सत्गुरु जगजीत सिंह के समय

साल 1959 इसवी में श्री सत्गुरु प्रताप सिंह जी ज्योति जोत में विलीन हो गए तो पंथ की बागडोर सत्गुरु जगजीत सिंह जी के पास आ गई। श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी ने अन्य सभी क्षेत्रों में विकास कार्य करने के अलावा गाय पालन की गुरु-शिष्य परंपरा को बखूबी आगे बढ़ाया है।

गाय-गरीब की रक्षा सारे अध्यात्मिक गुरु करते आए हैं।

श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी के अनुसार -

"हमारे में धर्म व सियासत को अलग नहीं समझा जाता, हमारा धर्म है - गाय व गरीब की रक्षा।"

गुरु जी के विचार हैं कि गाय की पूजा और गाय की रक्षा की सिर्फ बातें ही न की जाएं बल्कि असलियत में गाय की सेवा-संभाल व पालना भी की जाए। श्री सत्गुरु जी आदेश करते हैं कि हर नामधारी गाय रखे।

श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी आप भी गाय सेवा करते रहे हैं। गायों का दूध निकालना, चारा देना, दवाई देनी, सारे काम स्वयं करते रहे हैं। गद्दी पर बैठने के उपरांत भी श्री सत्गुरु जी तड़के सुबह गायों के स्थान पर झाड़ू लगा कर सेवा भाव से सफाई करते रहे। गुरु जी का करीब रोजाना गऊशाला में गायों को देखने जाना नित्य कर्म में शुमार रहा है। आप अपने कर-कमलों द्वारा गायों को गुड़ या चारा खिलाकर उन्हें दुलार देते रहे हैं। गायों की संभाल में किसी तरह की कोई कमी पेशी न आ सके इस बात की स्वयं निगरानी करते रहे हैं।

जैसे श्री सत्गुरु राम सिंह जी गायों का दुख सह नहीं सकते थे, वैसे श्री सत्गुरु जगजीत सिंह द्वारा भी गायों के दुख देखे नहीं जाते। गायों के प्रति ऐसी सोच को गुरु जी हमेशा प्रमुख रखते रहे हैं।

गुरु जी अकेली-अकेली गाय के बारे में कितनी फिक्र करते हैं, इस संबंधी मुझे संत सुखदेव सिंह टिब्बे वालों ने बताया कि साल 1990-91 की

बात है – एक दिन अमृत समय सुबह 2 बजे मुझे श्री सत्गुरु जी का फोन आया कि श्री जीवन नगर की एक साहीवाल गाय (जिसके एक सींग पर कैंसर की तकलीफ थी) के बारे कि अभी फौरन जाओ और उस गाय का हाल पता करके मुझे फोन पर जानकारी दो।

श्री जीवन नगर में एक लावारिस गाय, जिसको बहुत ज्यादा तकलीफ थी, श्री सत्गुरु जी की शरण में लाई गई तो उन्होंने उसी समय नंबरदार अमर सिंह को आदेश दिया कि ''इस गाय का तुरंत उपचार कराओ जितने पैसे लगेंगे, मैं दूंगा।''

संत सुखदेव सिंह (टिब्बा) ने मुझे बताया कि मैंने श्री सत्गुरु जी के मुख से यह स्वयं सुना है कि एक बार गुरु जी चंडीगढ़ से श्री भैणी साहिब बस द्वारा आ रहे थे (श्री सत्गुरु प्रताप सिंह जी के समय जब वह बाबा जी के रूप में थे) तो नज़दीक बैठे एक आदमी ने कहा कि गाय पालने के लिए बहुत स्थान चाहिए। श्री सत्गुरु जी ने फरमाया –

''गाय पालने के लिए धरती पर नहीं, दिल में जगह चाहिए।''

एक बार एक प्रतिनिधि मंडल के सदस्य द्वारा यह पूछे जाने पर कि जो गाय इतना अधिक दूध देती है, उस पर खर्च कितना आता होगा। श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी ने फरमाया –

''मैं गाय से हिसाब नहीं करता
क्योंकि गाय मेरे से हिसाब नहीं करती।''

श्री सत्गुरु जी समय-समय पर सेवकों को पूछते रहते हैं कि कौन-कौन सी गायें, कितना-कितना दूध देती है। यदि गाय का दूध कम हो तो गुरु जी आदेश देते हैं कि मुझे बताओ जिस वस्तु की ज़रूरत है, गायों का दूध बढ़ाओ। यदि गौशाला में कोई गाय सुस्त दिखाई दे तो सेवकों को ध्यान रखने की विशेष हिदायत देते हैं। श्री सत्गुरु जी गायों के दूध और घी का रिकार्ड सेवकों से लिखवाते रहते हैं और समय-समय पर स्वयं भी यह लिखित रिकार्ड ध्यान से जांच करते रहे हैं।

श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी अपनी गौशालाओं में सैंकड़ों गायों का पालन-पोषण कर रहे हैं। (इनका ज़िक्र चैप्टर गऊशालाएं और प्रबंधक वर्ग में लिखा गया है।) गऊधन की रक्षा, संभाल और नसल सुधार को मद्देनज़र

रखते हुए श्री सत्‌गुरु जी को सन् 1964 में हैदराबाद में गौ संवर्धन समिति की ओर से 'गोपाल रतन' के खिताब से सम्मानित किया गया था। 'गोपाल रतन' का खिताब भगवान श्री कृष्ण जी के नाम पर शुरू किया गया है। गोपाल अर्थात - गाय पालक, गाय की पालना और रक्षा करने वाला। सिर्फ दुधारु गायों की ही नहीं, बल्कि दूध देना बंद करने वाली व लावारिस गायों की संभाल भी श्री सत्‌गुरु जी करते और करने की प्रेरणा देते हैं। श्री सत्‌गुरु जी ने बूचड़खाने को जाने वाली कई गायें छुड़वाईं। जब श्री सत्‌गुरु जी को 'गोपाल रतन' की उपाधी और पांच हज़ार रुपए से सम्मानित किया गया उस समय गुरु जी के भेजे सेवकों द्वारा आठ गायें कलकत्ते से बूचड़ों द्वारा छुड़वा कर लाई गई थी। श्री सत्‌गुरु जी ने फरमाया कि गायों को बूचड़खानों से छुड़वाया है तभी यह पुरस्कार व उपाधी मिले हैं। श्री सत्‌गुरु जी के आदेश अनुसार कलकत्ते से एक बार आठ और एक बार 47 गायें बूचड़खानों से छुड़वाईं गई, वह बहुत बेहतर सिद्ध हुई। सारी गायें जो बूचड़खानों से खरीद कर लाई गईं, वह बहुत दूध देती रहीं। श्री सत्‌गुरु जी का अपने सिखों को आदेश है कि किसी ऐसे व्यक्ति के पास गाय न बेची जाए जो आगे उसको गाय मारने वालों के पास बेचने का इरादा रखता हो।

इस तरह गांवों में लावारिस फिरते खूंखार सांडों को मारने की बजाय श्री भैणी साहिब में मंगाया जाता रहा है। गांवों की पंचायतों व सरपंचों द्वारा बकायदा चिट्ठी लिख कर श्री सत्‌गुरु जी को विनती की जाती थी कि 'हम अपने गांव के खूंखार सांड लेकर आते हैं, उनको आप यहां रख लो।' वही सांड जो ट्रालियों में कई कई रस्सों से बांधकर श्री भैणी साहिब लाए जाते थे, श्री सत्‌गुरु जी की कृपा से लंगर के प्रशादे छक कर शांत हो, मारने से हट जाते थे।

अंग्रेजों के समय से ही भारत में बूचड़खाने खोले गए। अब हमारा देश आज़ाद है, हमारी अपनी सरकार है, फिर भी भारत में बड़ी संख्या में छोटे-बड़े बूचड़खाने हैं, जहां रोजाना लाखों पशु कतल किए जाते हैं, इनमें हजारों गायें होती हैं।

श्री सत्‌गुरु जगजीत सिंह जी आदेश करते हैं -

''दूध घी की नदियां बहने वाले देश में दूधारु पशुओं का खून न बहने

दो। बूचड़खाने में अपने पशु भेजे ही न जाएं। क्या अगर हमें कोई पैसे देगा तो हम मारने के लिए अपने बच्चे दे देंगे।"

श्री सत्गुरु जी, बेजुबान पशुओं को बेरहमी से कतल करने के लिए भारत में खुलते जा रहे इन बूचड़खानों को बंद करवाने के समर्थक हैं। आप प्रयत्नशील हैं कि भारत में गाय धन और दूसरे पशु धनों की रक्षा की जाए।

जब साल 1995 में डेराबस्सी में 'मैसर्ज पंजाब मीट्ज़ लिमिटेड' के नाम से बूचड़खाना खोला गया तो जीव दया का सिद्धांत अपनाने वाली सारी संस्थाओं समेत, इसका पूरा विरोध नामधारियों ने किया ताकि यह बूचड़खाना किसी भी हालत में चलने न दिया जाए।

विश्व शांति और बूचड़खाने बंद हो जाने के लिए श्री सत्गुरु जी, श्री भैणी साहिब में सवा-सवा लाख चंडी की वार के पाठों का हवन यज्ञ करवाते रहते हैं।

ऐसे गोपाल रतन श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी ने गाय पालन व रक्षा के लिए सार्थक यत्न किए हैं। गाय वध बंद कराने के साथ-साथ गाय की नसल सुधारने के लिए, उसकी उचित सेवा करने के लिए बड़े ज़ोरदार ढंग से आप स्वयं विश्व के लोगों को प्रेरणा दे रहे हैं। श्री सत्गुरु जी आप गायों की सेवा करते रहे हैं और आप जी को गायों के बारे बहुत ज्ञान और जानकारी है।

जहां श्री सत्गुरु जी हिन्दुस्तान के अलग-अलग स्थानों पर पशु प्रदर्शनियां करते और उनमें शामिल होते हैं, वहीं स्वयं अंतरराष्ट्रीय दुधारु गायों की प्रदर्शनियां में भी शामिल होते रहे हैं।

अगस्त साल 1967 में श्री सत्गुरु जी इंग्लैंड के दौरे पर गए हुए थे। वहां आप पश्चिमी जर्मनी में लगी प्रदर्शनी देखने गए। प्रबंधकों ने आप साथ होकर सारी प्रदर्शनी दिखाई। एक गाय देखकर श्री सत्गुरु जी ने कहा कि इस गाय का इतना दूध होना चाहिए। प्रबंधकों ने रिकार्ड देखा तो वह गाय ठीक उतना ही दूध दे रही थी। प्रबंधकों ने हैरान होकर पूछा कि आपको किस तरह पता लग जाता है। श्री सत्गुरु जी ने कहा - 'हम पहले गाय की पूंछ की ओर देखते हैं, फिर थनों की ओर, इनके शरीर में एक मिल्क वैन जैसी दूध वाली नाड़ होती है, हम उस ओर ध्यान देकर सारा अनुमान लगा लेते हैं।' श्री सत्गुरु जी के ज्ञान और तज़रबे के बारे जानकर प्रबंधक बहुत

प्रभावित हुए और उनको लगा कि श्री सत्गुरु जी किसी यूनिर्वसिटी में पढ़े हुए हैं।

उस दौरे के समय जर्मनी में 'ओल्डन बरग पशु प्रदर्शनी' देखने गया श्री सत्गुरु जी ने वचन किया कि –

''यदि आप इतनी दूध देने वाली गायें पालते हो वहीं एक प्रयास और भी करो, जिन गायों का दूध पीते हो उनको न मारो, उनका दूध पियो, मांस न खाओ।''

इस दौरे में श्री सत्गुरु जी डा. डगलस कैंपबैल के रिसर्च फार्म पर भी गए और उनको व सर रोनाल्ड गारवे जो कि सोयल एसोसिएशन के सचिव थे, को मिले। कृषि और गायों की नसल के संबंध में बहुत सारी जानकारियों का आदान-प्रदान हुआ।

साल 1993 में श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी अपने डेनमार्क के दौरे के समय गायों का डेयरी फार्म देखने गए। यह फार्म डेनमार्क के गांव लिल्सकेन्वेट विलेज, डिस्ट्रिक्ट कोजे, स्टेट रोज़किल्डेमेंट में हैं। डेनमार्क निवासी स. सुखदेव सिंह संधू और स. मनजीत सिंह संधू सुपुत्र संत गुरबचन सिंह दिल्ली ने मुझे श्री भैणी साहिब में जनवरी साल 2009 को बताया कि उस फार्म में बनवाई गऊशाला में श्री सत्गुरु जी ने बड़े चाव से 40-50 गायों को देखा। कुछ गायों को देखते ही श्री सत्गुरु जी ने बता दिया कि यह गाय इतना-इतना दूध देती है, सुनकर गऊशाला के इंचार्ज ने आदर और हैरानीजनक होते कहा यह बिल्कुल सही है।

''एक बार श्री सत्गुरु जी को पटियाला के एक बाज़ार में स. अमर सिंह एम.ए. नामक एक सज्जन मिले और कहने लगे – आप गाय रक्षा पर ज़ोर देते हो पर भारत में पहले ही बहुत लोग भूखे मर रहे हैं। उनकी जिंदगी से गाय की जिंदगी कीमती है। क्या अवारा गायों को बूचड़खानों के स्थान पर दाना आदि डालना उचित है?''

श्री सत्गुरु जी बोले – ''भारतवासी भूखे तभी मर रहे हैं जब गाय भूखी मर रही हैं। यदि गायों को बचाया जाए तो मैं दावा कर सकता हूं कि कोई वजह नहीं भारत में भूखमरी रहे।''

– सत्युग का गाय अंक पन्ना 75, स. स्वर्ण सिंह विर्क के लेख 'गाय की महानता' में से

आजकल तो हमारे देश में बहुत सारे मुसलमान भी गाय रक्षा करने लगे हैं। गाय विपत्ति के दौरान पालनहार की सहायता करती है। गांव तपा (नज़दीक बरनाला) के एक मुसलमान खैरदीन ने साल 1964-65 में श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी को बताया कि गाय-रक्षा करने पर ही उसकी जान साल 1947 के फसादों के समय बची थी। इस बारे श्री सत्गुरु जी अपने प्रवचनों में ऐसा फरमाते हैं -

"एक खैरदीन नामक मुसलमान था। पाकिस्तान बनने से कई साल पहले उसने तीन गायों जो मुसलमान मारने के लिए लाए थे, उनको छुड़वाने के लिए प्रयास किया। उनको मुसलमानों ने कहा कि तू पैसे दे कर खरीद ले। उसने कहा मैं पैसों का प्रबंध करता हूं पर उसके पास पैसे नहीं थे। फिर उसने अपनी भाभी के आभूषण लेकर 22 रुपए के दाम में बेचकर उससे एक गाय खरीदी। उसके यहां गाय ने एक-दो बार बछिया को जन्मा फिर उसने गऊशाला को वह गाय भेंट कर दी। उसके बाद पाकिस्तान बनना शुरू हो गया। जिस समय पाकिस्तान बनना शुरू हुआ तो वह मुसलमान जो कुछ अन्य मुसलमानों के साथ थे, को हिन्दुओं या सिखों ने घेर कर सलाह की कि इनको भीतर ही साड़कर मार दिया जाए। सारे मुसलमान किसी तरह आग से निकल कर भाग निकले। खैरदीन अकेला रह गया। जहां वह बंद था उसके ठीक ऊपर एक बहुत बड़ा शतीर (लकड़ी से बना बाला) थी। प्रकृति ने ऐसी कृपा दर्शायी कि वह शतीर उसके सिर की तरफ से नहीं सड़ा। दूसरी ही ओर से सड़कर नीचे गिर गया। खैरदीन को कोई आंच नहीं आई। जितनी देर वह अंदर रहा उसके सामने गाय की पूंछ हिलती रही जिससे उसको सेक नहीं लगा। इस तरह गाय की रक्षा मुसलमान ने की और गाय ने मुसलमान की रक्षा कर दी।"

दैनिक समाचार पत्र जगबाणी में अपने संपादकीय लेख 'राम कृष्ण के देश में गाय माता पर अत्याचार' (5) में श्री अश्विनी कुमार जी ने लिखा है -

"श्री राम, श्री कृष्ण ने गऊ रक्षा करते हुए गाय को मां के समान ही माना है। उनकी यह परंपराएं नामधारी कर्त्ताओं ने जिस तरह आगे बढ़ाई, उस पर भारत को गर्व है।"

जो भी संस्था गाय रक्षा के संबंध में यत्न करती है, श्री सत्गुरु जी उसको

पूरा सहयोग देते हैं। आप अपनी ज़रूरी जिम्मेवारियां छोड़कर भी इस संबंधी समारोह पर दर्शन देते रहे हैं।

गाय पालन और गाय दूध के सेवन के गुणों के बारे में विशेष तौर पर नामधारी जगत द्वारा समय-समय पर साहित्य प्रकाशित किया जाता है। उदाहरण के तौर पर श्री सत्गुरु जी की प्रेरणा के चलते सत्युग अखबार का सम्वत् 2024 में गाय अंक प्रकाशित हुआ था जो ला-मिसाल अंक है। इसके बिना सत्युग और अन्य अखबार, मैगज़ीनों में समय-समय गाय पालना और गाय दूध के गुणों संबंधी लेख छपते रहते हैं।

श्री सत्गुरु जी गाय पालन के बारे में प्रकाशित साहित्य में भी योगदान देते हैं। जैसे कि सितंबर साल 2001 में चंडीगढ़ से प्रकाशित होती मासिक पत्रिका 'सेवा संस्कार' ने गाय सेवा विशेष अंक प्रकाशित किया था। उस पत्रिका के प्रबंधकों को आर्शीवाद देते हुए श्री सत्गुरु जी के बोल इस प्रकार अंकित हैं-

''आदिकाल से ही गाय जहां भारत वर्ष की आर्थिक स्थिति का आधार रही है वहीं भारतीयों की धार्मिक भावनाओं का प्रतीक भी। बच्चे के लिए मां के बाद गाय का दूध ही संतुलित खुराक है। इसी कारण हमारे समाज में गाय को गाय माता कह कर आदर दिया जाता है। गाय गरीब की रक्षा और सेवा, सिख धर्म का मुख्य उद्देश्य है। यही हमारा धर्म और सियासत है। श्री सत्गुरु राम सिंह जी की बख्शिश और प्रेरणा के चलते नामधारी सिखों ने गायों की रक्षा और देश की आज़ादी के लिए बेमिसाल कुर्बानियां दीं, फांसियों पर चढ़े, तोपों से उड़ाए गए, काले पानी की सजाएं भुगतीं।

जो भी संस्थाएं गाय धन की रक्षा और सेवा के लिए तैयार हैं हमारा साथ हमेशा उनके साथ है। श्री गुरु गोबिंद सिंह जी लिखते हैं -

यही आसा पूर्ण तुम करहु हमारी।।

मिटे कष्ट गऊअन छूटे खेद भारी।।''

राष्ट्रीय सेवक संघ के प्रधान श्री सुदर्शन जी और विश्व हिंदू परिषद के प्रधान श्री अशोक सिंघल जी और गाय प्रेम रखने वाली जत्थेबंदियों के प्रतिनिधि समय-समय पर श्री सत्गुरु जी के दर्शन करने, गऊशाला देखने और गऊ रक्षा संबंधी विचार-विमर्श करने श्री भैणी साहिब आते रहते हैं।

आर्ट आफ लिविंग वाले श्री श्री रविशंकर जी भी श्री भैणी साहिब आए और उन्होंने सारी गौशालाएं देखीं। उन्होंने देखा कि जिस गाय का नाम लेकर आवाज़ मारी जाती है उस गाय का बछड़ा या बछड़ी बाड़े में से निकल कर भागकर अपनी मां के पास दूध पीने चला जाता है। वह बहुत प्रभावित हुए और कहा –

'आपने तो जानवरों को भी इंसान बना दिया है।'

5 से 11 अप्रैल साल 2004 में स्वामी राम देव जी ने लुधियाना में योग कैंप लगाया। पांच अप्रैल को योगी जी श्री भैणी साहिब पहुंचे। उन्होंने श्री भैणी साहिब के बारे सुना हुआ था कि यहां श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी गायों से प्रेम करते हैं और गऊशाला में अच्छी नसल की गायें रखते हैं। इसलिए स्वामी जी, श्री सत्गुरु जी के दर्शन करने व गायें देखने के लिए अचानक आ गए। मैं और मेरे पति संत भगवंत सिंह, उनको अचानक आया देखकर उनके स्वागत के लिए संगत में शामिल हुए और उनको श्री सत्गुरु जी के पास लेकर गए। श्री सत्गुरु जी के दर्शन करके व गऊशाला में गाओं को देखकर स्वामी जी बहुत खुश हुए।

सात अप्रैल 2004 को स्वामी रामदेव जी ने श्री भैणी साहिब के प्रताप मंदिर में योग की कक्षाएं लगाई। इस दौरान उन्होंने स्टेज से कहा –

"वह धरती पवित्र होती है जहां भगवान की शक्ति होती है। नामधारियों ने अपनी कुर्बानियों से देश की संस्कृति और परंपरा को बचाकर रखा है। यहां गुरुओं का भारतीय संस्कृति के लिए श्रद्धा सम्मान है। गाय माता के लिए अपार प्रेम है। मैं गायों की सेवा करता रहा हूं, मेरे दिल में गायों के लिए गहरा भाव है। जब मुझे इस संबंधी जानकारी मिली तो मैं बिना किसी कार्यक्रम के अचानक ही यहां आ पहुंचा।"

श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी ने पतंजली योग पीठ हरिद्वार में स्वामी रामदेव जी द्वारा बनाई जा रही गऊशाला के लिए श्री भैणी साहिब से गऊएं-बछियाएं भेजीं।

स. प्रकाश सिंह बादल जब वह अकाली दल के प्रधान थे (अब पंजाब के मुख्यमंत्री) को भी गायें भेजी गईं थीं।

केंद्रीय कृषि मंत्री श्री सोमपाल जी को भी एक साहीवाल गाय और बछड़ा दिया गया।

फिल्मी एक्टर धरमिंदर को साल 2009 में एक गाय और एक बछड़ा सच्चे पातशाह द्वारा दिया गया। ऐसे अनेक उदाहरण मिलेंगे।

श्री भैणी साहिब की गऊशालाएं इतनी प्रसिद्ध हो गई है कि गुजरात से एक स्वामी जी का फोन आया कि उनको अपनी गौशालाओं के लिए गायें और बछड़े-बछड़ियां चाहिए हैं। उसने हरियाणा के मुख्यमंत्री से सिफारिश भी करवाई। सूबा जागीर सिंह ने मुझे बताया कि श्री भैणी साहिब में श्री सत्गुरु जी के दर्शन करने और गऊशाला में गायें देखने के लिए करीब हर रोज़ ही धार्मिक संस्थाओं के प्रमुख, कई जगहों से आए स्वामी जी, देश-विदेश की प्रमुख शख्सियतें और आम लोग आते रहते हैं।

18 सितंबर साल 2011 को यह पांच लोग श्री भैणी साहिब में गऊशाला देखने आए -

1. श्री एस अय्यपन (डीजी, इंडियन कौंसिल आफ एग्रीकल्चरल रिसर्च)

2. श्री सोमपाल जी (पूर्व केंद्रीय कृषि मंत्री, जो लोकसभा व राज्यसभा के सदस्य भी रहे हैं)

3. प्रो. के.एम. एल. पाठक (डिप्टी डायरेक्टर जनरल, इंडियन कौंसिल आफ एग्रीकल्चरल रिसर्च एनीमल डिवीजन, नई दिल्ली)

4. डा. अरजवा शर्मा (यह मिनिस्ट्री आफ एग्रीकल्चर, इंडियन कौंसिल आफ एग्रीकल्चर रिसर्च कृषि भवन दिल्ली में डायरेक्टर हैं। यह मेरठ से आए थे।)

5. एडवोकेट गौरव (सुपुत्र स. गुरचरन सिंह राय दद्दाहूर), यह चंडीगढ़ से आए थे।

इन्होंने गौशाला देखी, श्री सत्गुरु जी के दर्शन किए। यह श्री भैणी साहिब में सीमन बैंक बनाने को पास कर गए हैं। गौशाला की उन्नति के लिए विचार विमर्श भी किया गया।

22 सितंबर साल 2011 को यह तीन व्यक्ति श्री भैणी साहिब में गौशाला देखने आए और बेहद प्रभावित भी हुए -

1. श्री राजिंद्र सिंह राजपुरोहित (सरकार द्वारा बनाए गए बोर्ड – गौ सेवा आयोग, राजस्थान के चेयरमैन)

2. श्री सुंदर दास धमीजा (श्री गोबिंद धाम वृद्धांवन के लुधियाना में चेयनमैन)

3. श्री सतीश गुप्ता (श्री गोबिंद धाम वृद्धांवन के लुधियाना में प्रधान)

पुस्तक बीते दियां पैड़ा, भाग–1 में 30 अक्तूबर साल 1958 की अपनी डायरी में संत प्रीतम सिंह कवि 'उदारता' लेख के अंतर्गत लिखते हैं –

"आज सुबह ही मैंने सत्गुरु जी से कहा कि सस्सी (गाय का नाम) का बछड़ा लाना चाहता हूं जिसे गाय के साथ ही आपसे हम ले गए थे। उन्होंने कहा था कि दो साल के इस बछड़े का 500 रुपए दे देंगे। मगर सत्गुरु जी ने ही इसे और इसकी मां को मुफ्त दिया था और ये अब चरायी के लिए भी दो महीनों के लिए यहां आई हुई है।"

बहुत सारे लोग बड़ी श्रद्धा से सत्गुरु जी को अपनी गाय या भैंस को माथा टेक देते हैं। श्री सत्गुरु जी भी बिनती करने वालों और ज़रूरतमंदों को इच्छा अनुरूप गाय–भैंस दान कर देते हैं।

उदाहरण के तौर पर, 15 मई साल 2010 को, सूबा जागीर सिंह ने मुझे (इस पुस्तक की लेखिका) को बताया कि खन्ना के नज़दीक एक गांव गलवड्डी है। यहां की माता जोगिंद्र कौर सपुत्री स्वर्गीय स. अमीर सिंह सरपंच ने हमको 15 बछड़ियां श्री भैणी साहिब की गौशाला के लिए दी हैं। हम आज ही लेकर आए हैं। उसने दूध की डायरी बंद करनी थी। उसने सोचा कि गाय बेचनी नहीं बल्कि दान करनी हैं। उसने श्री सत्गुरु जी की महिमा सुनी हुई थी कि श्री भैणी साहिब में गऊशाला में गायों की सेवा होती है तो ही उसने गायों और बछिया को श्री सत्गुरु जी को माथा टेका।

पेश है गोपाल रतन पुरस्कार की लिखित

केंद्रीय गौ संवर्धन परिषद् द्वारा
साल 1963-64 का
'गोपाल रतन' पुरस्कार
प्राप्तकर्ता : श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी

केंद्रीय गौ संवर्धन परिषद्, श्री सत्गुरु हरी सिंह पशु-पालन और कृषि फार्म श्री जीवन नगर ज़िला हिसार (पंजाब) को उच्च कोटि की गाय पालने के कारण खुशी सहित 'गोपाल रतन' पुरस्कार और प्रमाण पत्र प्रदान करती है।

यह फार्म नामधारी सिख संप्रदाय के अध्यात्मिक गुरु द्वारा चलाया जाता है और श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी इसके वर्तमान गुरु हैं। इस फार्म में पिछले पंद्रह सालों से हरियाणा और साहीवाल गायें और नीली रावी भैंसों के ऊंचे वंश प्राप्त और विकसित किए गए हैं।

फार्म ने केंद्रीय गौसंवर्धन परिषद् द्वारा आयोजित सर्व भारतीय दूध उत्पादन प्रतियोगिताओं में अनेक पुरस्कार प्राप्त किए हैं। इस फार्म को साल 1956 से 58 तक और उसके बाद साल 1960-61 और साल 1963-64 तक हर साल हरियाणा नसल का पहला पुरस्कार दिया गया। फार्म ने साल 1962-63 और साल 1963-64 में साहीवाल नसल का भी पहला पुरस्कार प्राप्त किया। साल 1963-64 में इस फार्म की हरियाणा नसल की 'पुतली गाय' और साहीवाल नसल की 'मीरां गाय' ने 24 घंटों में क्रमश: 28.576 किलोग्राम और 25.705 किलोग्राम दूध का उत्पादन किया है। इस फार्म ने सर्व भारती पशु-प्रदर्शनियों में भी अपनी गायें और भैसों की वजह से अनेक पुरस्कार जीते हैं।

फार्म ने गायों के पालन और प्रबंध में सुधरी हुई विधियां अपनाई हैं। यह फार्म हरियाणा और साहीवाल नसल के वंश से सांड उपलब्ध करवा कर पंजाब में इन नसलों की गायों के विकास में अपना योगदान देता रहा है।

– केंद्रीय गौ संवर्धन परिषद् के प्रधान और कई समूह सदस्य

चंडी की वार के पाठ के हवन यज्ञ

नामधारियों ने गाय हत्या का विरोध हमेशा जारी रखा। आज भी नामधारी हर रोज अरदास में कहते हैं –

"हे गरीब निवाज़, गाय गरीब की रक्षा करो, धरती पर धर्म बरताओ।"

श्री सत्गुरु राम सिंह जी के आदेश के मुताबिक 'चंडी की वार' के पाठ के आरंभ पर समाप्ति के समय भी नामधारी यह अरदास करते हैं –

"हे भगवती माता, गऊ वध करने और अत्याचार करने वालों का नाश कर।"

श्री सत्गुरु प्रताप सिंह जी का गायों से बहुत प्यार था। आप जी की हार्दिक इच्छा थी कि ऋषि मुनियों के इस देश में गाय वध पूरी तौर पर बंद हो जाए। इसके लिए गुरु जी प्रयासरत ही रहे। जैसे कि...

1. साल 1937 ईसवी में जब अंग्रेजी हकूमत ने लाहौर में मार्डन मशीनरी से लैस एक बूचड़खाना खोलने का फैसला किया, श्री सत्गुरु जी ने इसको रोकने के लिए श्री भैणी साहिब में चंडी की वार के पाठों का हवन यज्ञ आरंभ करवा दिया। जितनी देर तक सरकार द्वारा बूचड़खाने की तैयारी रद्द नहीं की गई उतने ही समय तक पाठ को जारी रखा गया। जब बूचड़खाने की तज़वीज रद्द हुई तब तक चंडी की वार के 3 लाख 15 हज़ार 507 पाठ हो गए थे। नामधारी जगत में खुशी की लहर दौड़ गई और अनेक हिंदू जत्थेबंदियों ने श्री सत्गुरु जी का कोटि-कोटि धन्यवाद किया।

(पाठों की यह गिणती हजूरी ड्राइवर संत गुरदेव सिंह जी की डायरी में से लेकर हजूरी सेवक हरपाल सिंह ने अपनी पुस्तिका 'गऊअन के रखवाले' में छापी)

निम्नलिखित अगले चंडी की वार के पाठों का विवरण साप्ताहिक सत्युग 25 चैत्र से एक वैशाख 2067 मुताबिक 8 से 14 अप्रैल 2010 में से लिया गया है।

2. दूसरी बार श्री सत्‌गुरु प्रताप सिंह जी द्वारा, मग्घर की संगराद सम्वत् 1994 से चंडी की वार का अखंड हवन यज्ञ करने का आदेश हुआ। इस यज्ञ का भोग सावन की संगराद 1995 बि. (1938 ई.) को डाला गया। इस हवन यज्ञ में चंडी की वार के 2, 12, 234 पाठ हुए।

3. इसके बाद 7 माघ 2013 बि: (19 जनवरी साल 1957) को फिर चंडी की वार पाठ का आरंभ हुआ। इन पाठों का भोग होले के बाद पड़ा।

4. साल 1959 ई. में सत्‌गुरु प्रताप सिंह जी के शरीर का संस्कार करने के बाद श्री सत्‌गुरु जगजीत सिंह जी गुरुगद्दी पर विराजमान हुए। आप जी ने 23 सावन 2021 बि. (6 अगस्त 1964 ई.) को श्री भैणी साहिब में चंडी की वार का अखंड हवन यज्ञ शुरू करवाया जिसका भोग 26 भादों 2021 बि. (1964) को डाला गया। इसमें 1,84,300 पाठ हुए।

5. इससे अगले साल 26 भादों 2022 बि. (1965 ई.) को निरविघ्न समाप्त हुए इस हवन यज्ञ में 1,25,470 चंडी की वार के पाठ किए गए।

6. 2027 बि. (1970 ई.) का निर्जला एकादशी का तीन दिवसीय मेला श्री जीवन नगर किया गया। इस मेले के दौरान चंडी की वार पाठ के अखंड हवन हुए। इनमें हुए पाठों की संख्या के संबंध में जानकारी मौजूद नहीं है।

7. इसी साल अस्सु का मेला मस्तानगढ़ हुआ और एक अस्सु 2027 से 30 अस्सु 2027 बि. (1970 ई.) तक चंडी की वार का हवन यज्ञ किया गया। इसकी संख्या भी अभी मौजूद नहीं है।

8. श्री सत्‌गुरु जगजीत सिंह जी की कृपा से 1982 ई. में श्री भैणी साहिब में फिर चंडी की वार का हवन यज्ञ 20 अगस्त से शुरू होकर 10 अक्तूबर तक निरंतर चला। इस प्रयोग में 1,34,962 चंडी की वार के पाठ हुए।

9. 1999 ई. में चंडी की वार के पाठ 11 नवंबर 1999 ई. से 25 नवंबर 1999 ई. तक किए गए। पाठों की संख्या 1,44,353 थी।

10. 2 फरवरी 2010 ई. से 28 फरवरी 2010 ई. तक चंडी की वार के पाठ, श्री सत्‌गुरु जगजीत सिंह जी के शरीर के आरोग्य के लिए किए गए। श्री सत्‌गुरु जी की हजूरी में 2,12,500 पाठों की समाप्ति की अरदास की गई।

गऊशालाएं

नामधारी गऊशालाओं की गायें कई सालों से भारत के लिए एक मिसाल कायम करतीं आ रहीं हैं।

श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी द्वारा बनाई गईं गऊशालाएं श्री भैणी साहिब, श्री जीवन नगर, मस्तानगढ़, टिब्बे व नामधारी फार्म बंग्लौर (बिड़दी) आदि में खुली और साफ जगहों पर बनी हुई हैं। श्री सत्गुरु जी की प्रेरणा के फलस्वरूप नामधारी सिखों की अपनी-अपनी निजी गऊशालाएं भी हैं जहां गायों की सेवा की जाती है। डेरा हिम्मतपुरा ज़िला मोगा, डेरा झल्ला ज़िला संगरूर, डेरा टिब्बा ज़िला सरसा (हरियाणा) आदि में भी गऊशालाएं बनाई हुई हैं।

बढ़िया नसल की गऊओं को पाल कर श्री सत्गुरु जी ने एक रिकार्ड कायम कर दिया है। गायों की संभाल के लिए कई सेवादार नियुक्त किए हैं। गर्मी, सर्दी में गायों की संभाल के लिए उचित प्रबंध किए गए हैं। दुधारु गायों के दूध और इसमें मौजूद मक्खन व घी मात्रा का हर रोज रिकार्ड रखा जाता है।

सारी गायों के अलग-अलग नाम रखे हुए हैं। सारे बछड़े-बछड़ियां इक्ट्ठे एक स्थान पर अलग बाड़े में रहते हैं। जब गायों के दोहने का वक्त होता है, जिस गाय का नाम लेकर आवाज़ मारी जाती है, उस गाय का बछड़ा या बछड़ी अपने आप बाड़े से निकलकर सीधे अपनी मां के पास दूध पीने चला आता है। हर बच्चे को अपनी मां का पता होता है। सेवादार द्वारा ऊंची आवाज़ में 'नूरी का ओए' कहने पर नूरी का बछड़ा या बछिया अपने बाड़े में से निकल कर अपनी मां नूरी के पास दूध पीने के लिए भागकर पहुंच जाता है।

दैनिक अखबार 'जगबाणी' में तिथि 29 जनवरी 2009 को ''गाय को प्यारा सा नाम दो, तो देगी अधिक दूध'' के सिरलेख में छपी खबर इस तरह हैं -

'यह बात सुनने में काफी अजीब लग सकती है मगर एक नए अध्ययन से यह बात सामने आई है कि गायों को भी यदि कोई नाम देकर उनको पुकारा जाए तो वे अन्य गायों के मुकाबले अधिक दूध दे सकतीं हैं।'

श्री सत्गुरु जी ने गायों की नसल सुधारने की ओर विशेष योगदान दिया है। हरियाणा, साहीवाल, थारपरकर और देसी नसल की गायें, श्री सत्गुरु जी ने अपनी गऊशालाओं में रखी हुई हैं।

श्री गुरु हरी सिंह गऊशाला, श्री भैणी साहिब

यह गऊशाला श्री सत्गुरु हरी सिंह जी के समय की बनी हुई है। इसका नाम श्री गुरु हरी सिंह पशु-पालन फार्म अथवा गऊशाला है।

वर्तमान समय में इस गऊशाला में बड़ी संख्या में गायें और पशुधन हैं। यहां साहीवाल, हरियाणा और थारपरकर नसल की गायें और बछड़े-बछियाएं, सांड इत्यादि हैं। अलग-अलग नसलों की गायों को अलग-अलग रखा जाता है। उनके बछड़ों को भी इसी तरह से अलग-अलग रखा जाता है।

दूध से हटी हुई, बड़ी उम्र की और कष्ट भोगतीं बिमार गायों के लिए एक अलग शैड बनाया गया है। इनकी भी विशेष देखभाल और सेवा की जाती है। उदाहरण के तौर पर हरियाणा नसल की एक गाय का पैर कटने से गल गया और फिर कैंसर हो गया था। सेवा करने से यह ठीक हो गई। इसकी एक बछिया गौशाला में है।

पंजाब सरकार द्वारा मांगे जाने पर श्री भैणी साहिब की गऊशाला से सरकार को कुछ बछड़े नसल सुधार के लिए दिए गए। नाभा, खन्ना, लुधियाना, फगवाड़ा और होशियारपुर आदि स्थानों की गऊशालाओं में भी श्री भैणी साहिब से नसल सुधार के लिए बछड़े भेजे गए। कई लोग निजी तौर पर भी गऊशालाओं से बछड़े खरीद कर ले जाते हैं।

श्री सत्गुरु जी द्वारा समय-समय पर नसल सुधारने के लिए बढ़िया बछड़े ढूंढ कर खरीद लिए जाते हैं - जैसे कि पहले कुछ बछड़े खरीदे गए हैं।

समराला के डा. अशोक शर्मा (प्रधान वेटरनरी डा. एसोसिएशन, पंजाब) के नेतृत्व में पशु धन के जोन स्तरीय मुकाबले श्री भैणी साहिब में करवाए जाने की योजना है। खर्चे का सारा प्रबंध सरकार द्वारा किया जाना है। सिर्फ प्रतियोगिता करवाने वाले को 15 किले ज़मीन देनी होती है। 4-5 शैड बनाने का प्रबंध सरकार ने करना है। ब्रीडिंग फार्म और देसी गायों के प्रॉडेक्टस की प्लांटेशन लगाई जाएगी।

डा. एच. एस. संधा डायरेक्टर पशु पालन विभाग चंडीगढ़ द्वारा मंजूरी मिल गई है, फंड मुहैया करवाए जाने हैं। केंद्रीय सरकार द्वारा ग्रांट मिलनी है। सरकार द्वारा साहीवाल नसल की गायों को बढ़ाए जाने की योजना है।

डा. एच. एस. संधा जब ज्वाइंट डायरेक्टर थे, तब वह उन 15 बछियाएं जो पंजाब सरकार ने श्री भैणी साहिब से खरीदी थी, का चैक देने आए थे। जब उन्होंने श्री सत्गुरु जी के दर्शन किए तो हजूरी सेवक रछपाल सिंह ने अर्ज कर कहा कि -

'सच्चे पातशाह जी, पशु पालन विभाग पंजाब के ज्वाइंट डायरेक्टर चंडीगढ़ से दर्शन करने आए हैं।'

श्री सत्गुरु जी ने फरमाया, 'डायरेक्टर'।

सेवक रछपाल जी ने फिर दोहराया, 'नहीं सच्चे पातशाह जी, यह ज्वाइंट डायरेक्टर हैं।'

हजूर जी ने फिर बोला, 'डायरेक्टर'

उस से पांच दिनों के बाद डा. एच. एस. संधा डायरेक्टर बन गए।

इस समय सूबा जागीर सिंह छापियां वाले (मुक्तसर) श्री भैणी साहिब की गऊशाला की बड़े ध्यान से देखभाल कर रहे हैं। श्री सत्गुरु जी के आदेश और देखरेख में समय-समय पर गायों और अन्य पशु धनों को पंजाब राज्य में होती प्रतियोगिताओं में भेजा जा रहा है, जिस से बहुत बढ़िया परिणाम सामने आ रहे हैं।

श्री भैणी साहिब, श्री जीवन नगर और मस्तानगढ़ की गऊशालाओं के प्रबंधक वर्ग और विशेष सेवादारों के बारे अगले अध्याय में लिखा गया है।

श्री गुरु हरी सिंह पशु पालन और कृषि फार्म (गऊशाला)
श्री जीवन नगर, ज़िला सरसा, हरियाणा

श्री जीवन नगर की यह गऊशाला, श्री सत्‌गुरु प्रताप सिंह जी ने साल 1947 में देश के बंटवारे के बाद स्थापित की। इसका नाम 'श्री गुरु हरी सिंह पशु पालन और कृषि फार्म' रखा गया।

यहां समय-समय पर बड़ी संख्या में बढ़िया नसल की गायें, बछड़े, बछियाएं और सांड वगैरह रखे जाते रहे हैं और इस समय भी हैं।

यहां घोड़ों का फार्म भी था जिसमें करीब 35-40 घोड़े रखे हुए थे। समय-समय पर यहां घोड़े रखे जाते रहे।

नामधारी गऊशाला मस्तानगढ़, ज़िला सरसा, हरियाणा

करीब 1964-65 में जब मस्तानगढ़ का डेरा आबाद किया गया तब श्री सत्‌गुरु जगजीत सिंह जी ने यहां गऊशाला बनवाई। इस समय इस गऊशाला में बड़ी संख्या में गायें और गाय धन हैं। यहां हरियाणा नसल की बहुत ही बढ़िया गायें हैं। मस्तानगढ़ और टिब्बे के क्षेत्र में इंचार्ज इस समय स. गुरचरन सिंह पप्पू (सुपुत्र संत मग्घर सिंह सैदों वाले) हैं। इनके बारे प्रबंधक और सेवक अध्याय में लिखा गया है।

नामधारी फार्म बिड़दी बंग्लौर

बंग्लौर के नामधारी फार्म में ठाकुर उदय सिंह जी ने गायें रखी हुई हैं। यहां ज्यादातर साहीवाल नसल की गायें हैं।

इस गऊशाला के मुख्य प्रबंधक समय-समय पर सर्व श्री अवतार सिंह, सविन्दर सिंह और गुरदियाल सिंह रहे। आजकल मुख्य प्रबंधक संत गुरदेव सिंह हैं।

डेरा गांव हिम्मतपुरा ज़िला मोगा की गऊशाला

इस समय यह गऊशाला डेरा प्रमुख संत ज़ोरा सिंह की निगरानी और प्रबंध के अंतर्गत चल रही है।

श्री सत्गुरु प्रताप सिंह जी के समय गांव हिम्मतपुरे का डेरा संत कर्म सिंह चला रहे थे। श्री सत्गुरु जी की संतों पर बेहद कृपा थी। जिनके घरों में पुत्र नहीं होता था वह उस डेरे में आकर संतो को बिनती करते थे और संतों के आर्शीवाद से पुत्र की देन प्राप्त होती थी। संत कर्म सिंह के बाद यहां संत हरनाम सिंह लोहगढ़ और उनके बाद संत गुरमुख सिंह फरवाही इस डेरे के प्रमुख बने। संत गुरमुख सिंह, साल 1991 को 26 अस्सु वाले दिन चलाना कर गए। तब से यह डेरा संत ज़ोरा सिंह चला रहे हैं। उस समय गांव की पंचायत गऊशाला चला रही थी।

पंचायत से किसी कारणवश यह गऊशाला नहीं चली। उन्होंने श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी को बिनती की कि संत ज़ोरा सिंह गऊशाला संभाल लें। श्री सत्गुरु जी की आज्ञा से तब से गऊशाला संत ज़ोरा सिंह ही चला रहे हैं। गौशाला में इस समय बड़ी संख्या में गाय और गाय धन शुमार हैं।

करीब 15 किलो दूध देने वाली गायों को छोड़ कर इस गौशाला में बाकी सभी नज़दीकी गांवों की दूध न देती, बेसहारा और वृद्ध गायें और राम गायें शामिल हैं। लोग भी दान के तौर पर गौशाला के लिए तूड़ी और चारा वगैरह दे जाते हैं।

डेरा गांव झल्ल, ज़िला संगरूर की गौशाला

यह गौशाला गांव झल्ल, ज़िला संगरूर के नामधारी डेरे में स्थित है। इस डेरे को प्रसिद्ध नामधारी संत जगत सिंह खंडुवाली चला रहे थे। उनके बाद इसको नामधारी पंथ के प्रसिद्ध विद्वान और कथावाचक प. हरभजन सिंह खंडुवाली चला रहे हैं।

इन्होंने इस डेरे की ज़मीन में श्री सतगुरु जी की अनुमति के अनुसार गौशाला शुरू की है। इसका उद्घाटन 21 फरवरी 2009 को श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी ने किया।

कुछ हिंदू सिख समूहों द्वारा मिलकर गौशाला का नींव पत्थर कुछ साल पहले अमरगढ़ में रखा गया था पर किसी वजह से गऊशाला बन नहीं सकी। प. हरभजन सिंह खंडुवाली ने वही नींव पत्थर अमरगढ़ से तकरीबन डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर गांव झल्ल के इस नामधारी डेरे की ज़मीन में (श्री सत्गुरु जी को अरज कर) लाकर रख दिया और गौशाला बना ली। इस गौशाला में ज्यादातर दूध से हटीं, बेसहारा, वृद्ध और बिमार गऊएँ और पशु धन शामिल हैं। अभी तो शुरुआत है, इसको व्यापक स्तर पर बढ़ाए जाने की योजना है। अभी भवन बन रहा है।

पंडित जी और उनके दोनों सुपुत्र बड़े संत हरविन्दर सिंह और छोटे संत यादविन्दर सिंह, इस गौशाला में प्रबंधक के तौर पर सेवा करते हैं। यह आसपास के गांवों में से घायल और बीमार पशुओं को अपनी गौशाला में लाकर सेवा करते हैं।

ऐसे पशुओं को लोग भी इस गौशाला में छोड़ जाते हैं। किसी गाय का पैर टूटा है, किसी का पैर खराब है। एक बछड़े की चारों पैर खराब हैं। यहां पूरे तनमन से सभी पशुओं की सेवा की जाती है।

संत यादविंदर सिंह ने वाराणसी से शास्त्री आचार्य किया है और आजकल 'ग्रंथ साहिब में अद्वितीय तत्व के निर्माण' विषय पर पी.एच.डी. कर रहे हैं।

नामधारी गौशाला टिब्बा फार्म (रजि.)
संतनगर ज़िला सरसा, हरियाणा

श्री सत्गुरु जी को बिनती कर और अनुमति लेकर साल 2003 में यह गौशाला टिब्बे की डेरे वाली ज़मीन में संत पूर्ण सिंह मुक्ता संतनगर, सुपुत्र संत हज़ारा सिंह मुक्ता ने प्रयत्न करके बनवाई। तब से मुक्ता जी ही यहां मुख्य प्रबंधक हैं और इनकी पत्नी बीबी बलबीर कौर सुपुत्री संत बंता सिंह संतनगर, यहां गायें और बछड़े-बछियाओं की सेवा कर रहे हैं। सेवक भी रखे हैं।

इस गौशाला में बड़ी संख्या में गऊएं और पशु धन है। यहां वृद्ध,

बेसहारा और दूध विहीन गायों को संभाला जाता है। जिन गायों का दूध पीकर, दूध हटने के उपरांत लोक रस्से खोलकर बाहर भटकने के लिए छोड़ देते हैं, उनको इस गौशाला में लाकर सेवा की जाती है। कई लोग ऐसी गायों को आप ही यहां छोड़ जाते हैं। बीमार या घायल होकर बेकार हुए बछड़े जिनको कोई संभालता नहीं था, उनको भी यहां लाकर संभाल की जाती है।

इस क्षेत्र के गांवों की साधु-संगत और लोगों द्वारा इस गौशाला को यथा संभव सहयोग दिया जाता है। केंद्रीय सरकार के जीव-जंतु कल्याण विभाग दिल्ली द्वारा भी गौशाला की सहायता की जाती है।

गौशाला को सुचारु रूप में चलाने के लिए एक कमेटी बनाई गई है। इसमें संत पूर्ण सिंह मुक्ता के अलावा सूबा बलकार सिंह संतनगर, सर्व-संत हरमीत सिंह चेयरमैन, सुखदेव सिंह पैट्रोल पंप वाले, नानक सिंह सुपुत्र संत बीबा सिंह और बलविंदर सिंह आदि शामिल हैं।

बल गौशाला श्री जीवन नगर

यह गौशाला साल 2006 में श्री सतगुरु जी से अनुमति लेकर संत इकबाल सिंह बल (नकौड़ा) सुपुत्र संत महिंद्र सिंह बल द्वारा स्थापित की गई।

संत इकबाल सिंह की सुपत्नी बीबी सुखबीर कौर (सुपुत्री संत गुरबचन सिंह भंगु श्री जीवन नगर) गौशाला के मैनेजर हैं और गायों की बेहद सेवा करते हैं। इनके दो सुपुत्र सुरजीत सिंह और इंद्र सिंह अपने काम धंधों के अलावा गौशाला की देखरेख में भी ध्यान देते हैं।

घर योग्य पांच-छह दूध देने वाली गायों को छोड़कर यहां इस समय बड़ी संख्या में बेसहारा, वृद्ध और बीमार गायों की सेवा की जा रही है। इन गायों की सेवा संभाल करने के उद्देश्य के साथ ही यह गौशाला बनाई गई है।

साल 2000 में ओटू हैड से गायों का भरा ट्रक चोरी छिपे बूचड़खाने ले जाया जा रहा था। पुलिस द्वारा ट्रक रोक कर पूछे जाने पर ट्रक वालों ने कहा कि ट्रक खाली है, एक गाय बोल पड़ी और वे पकड़े गए। टैंपू थाने लाया गया और गायों को छुड़वाया गया।

इस घटना से प्रभावित होकर संत इकबाल सिंह बल ने श्री सत्गुरु जी को निवेदन किया।

"हम नामधारियों ने गाय गरीब की रक्षा के लिए कितनी कुर्बानियां दीं। अब भी हमें गायों की रक्षा और संभाल करनी चाहिए। गायों को बूचड़खानों में जाने से रोकें और गौशालाएं बना कर इनकी सेवा करें।"

श्री सत्गुरु जी ने फरमाया –

"बहुत बढ़िया सोच है। बेहतर काम के लिए सोचना नहीं चाहिए बल्कि कर लेना चाहिए। ज़मीन आपके पास बहुत है।"

सत्गुरु के बचन हुए और ज़मीन बहुत बढ़ गई। कारोबार भी बढ़ा है। उन्होंने बताया कि गायों पर जो खर्चा होता है उससे कई गुणा हमें मुनाफा हो जाता है।"

संत इकबाल सिंह की "नामधारी फूड इंटर नेशनल" और इनके छोटे भाइयों स. दलजीत सिंह और स. जसपाल सिंह की 'नामधारी राइस एंड जनरल मिल' है। राइस मिल में श्री सत्गुरु जी के आदेश अनुसार भजन की वरनी चलाई जा रही है।

बल परिवार आसपास के करीब दस गांवों की बेसहारा गायों को ट्रालियों में चढ़ाकर लाए और गौशाला में रखकर सेवा करने लगे। इसके बाद लोग आप ही बेसहारा गायें लाकर यहां छोड़ने लगे। बल परिवार द्वारा नामधारी चेरीटेबल ट्रस्ट बना कर गौशाला को और भी बेहतर ढंग से चलाने की स्कीम है।

चौधरी महिंद्र सिंह टोक्स (प्रधान) भारतीय जीव जंतु कल्याण बोर्ड गांव मुनीरिका, नई दिल्ली वाले भी इनको उत्साह देते हैं। चौधरी जी का बहुत बड़ा प्रयास है कि आपने बूचड़खाने ले जाती गायों को रोकने के लिए टीमें बनाई हुई हैं। भले इस काम में बेहद मुश्किलें आती हैं मगर आप द्वारा नियुक्त टीमों के व्यक्ति पहले प्यार से समझाते हैं। यदि कोई न माने तो बल का प्रयोग भी करना पड़ता है। आप ऐसी गायों को खरीदकर भी उनकी जान बचाते हैं।

चौधरी जी गाय रक्षा के लिए हर संभव कोशिश करते हैं। सारे भारत की गौशालाओं से चौधरी जी का संपर्क है। इनकी सोच है कि सारी गौशालाएं

वाले इक्ट्ठे होकर गाय रक्षा के बारे में विचार-विमर्श करके अमली कारवाई करें। इस संबंधी आप मीटिंग करने में जुटे रहते हैं। गऊ रक्षा संबंधी पुस्तकें छपवा कर मुफ्त बांटते रहते हैं।

25 जनवरी साल 2010 को फोन पर हुई बात के अनुसार चौधरी जी ने मुझे (लेखिका को) कहा कि "स्वार्थ के बिना कोई काम नहीं करता, उद्योग के रूप में गाय माता बचेगी। गाय के दूध के अलावा गाय मूत्र और गाय गोबर भी बेहतर मूल्य पर बिकता है। गाय माता से बड़ा कोई उद्योग नहीं। सूखा घास खाकर भी गाय बढ़िया दूध देती है। नाली का पानी पीकर भी इसका मूत्र पवित्र होता है। स्वामी राम देव, दवाइयां बनाने के लिए 25 रुपए किलो गौ मूत्र खरीदते हैं।"

नाथ डेयरी फार्म संत नगर

श्री सत्गुरु जी की प्रेरणा के चलते नामधारी सिख गऊएँ रखते और उनकी संभाल करते हैं। बहुत सारे सिखों की निजी गौशालाएं हैं। सबका ज़िक्र तो नहीं किया जा सकता। उदाहरण के तौर पर संत प्यारा सिंह नाथ के परिवार ने अपनी गौशाला बनाई हुई है, इनकी गायें प्रतियोगिताओं में पुरस्कार जीतती हैं। इसका वर्णन अगले अध्याय में दिया गया है।

कई नामधारी परिवार तो बाहर सड़कों पर ज़ख्मी हालत में भटक रही गायों को अपने घर लाकर उनका उपचार करवा कर उनको अपने पास ही रख लेते हैं।

उदाहरण के तौर पर नौशहरा पन्नुआं ज़िला तरनतारन के बीबी नरिंदर कौर और संत बलविंद्र सिंह जोड़ी ने पांच-छह ज़ख्मी गायों को, जो लावारिस थीं, को बारी-बारी अपने घर ले जाकर इलाज करवाया और काफी समय सेवा संभाल की। फिर इन्होंने दो गायें नौशहरा गौशाला में भेज दीं। दो गाय, इनके पास से सेवा करने के लिए कोई ले गया और एक गाय व उसकी बछिया आशु और विशु इन्होंने श्री भैणी साहिब की गौशाला में भेज दीं। बीबी नरिंद्र कौर के बताए जाने पर इनके घर लगी आग में यह घिर गए थे पर सत्गुरुओं की कृपा और गौ सेवा भाव की वजह से बच गए। इनका बड़ा सुपुत्र बंता सिंह (फोटोग्राफर) श्री भैणी साहिब में सेवा कर रहा है।

नामधारियों से प्रेरणा

नामधारियों की गऊओं के लिए की गईं कुर्बानियों से और गौ पालन के लिए खोली गईं गौशालाओं से बहुत सी संस्थाओं को प्रेरणा मिली है।

2 जनवरी साल 2011 को मुझे (इस पुस्तक की लेखिका) अपने पति संत भगवंत सिंह और बेटी रुपिंदर कौर समेत राजपुरा की गौशाला में जाने का मौका मिला। मुझे श्री भैणी साहिब से फोन आया था कि खन्ने की गौशाला में समारोह है। आप वहां जाएं। वहां की गौशाला कमेटी के प्रधान सतीश जी से फोन पर संपर्क कर लेना। हम राजपुरा गए। हिंदुस्तान की गाय रक्षा दल संगठन के प्रधान सतीश जी ने हमको बताया कि पूरे हिंदुस्तान में गाय रक्षा दल की टीमें तैयार की हुई हैं। सारे राज्यों के प्रमुख शहरों में यह टीमें चोरी छिपे गायों को बूचड़खाने ले जा रहे ट्रकों-गाड़ियों को पकड़ कर गायों को छुड़वा कर उनकी रक्षा करती हैं। इन गायों को गौशालाओं में भेज दिया जाता है।

सतीश जी ने बताया कि हमने गाय रक्षा करने की यह प्रेरणा अमृतसर, रायकोट, लुधियाना व मलेरकोटला में फांसियों पर लटकाए गए, तोपों से उड़ाकर शहीद किए गए श्री सतगुरु राम सिंह जी के नामधारी सिखों से ली है।

राजपुरा की गौशाला बहुत बड़ी है। यहां बड़ी संख्या में गायों की संभाल की जाती है। ये सारी गायें बूचड़ों से छुड़वाकर लाई गई हैं। दो कपिला गायें जो बूचड़ों से बचाईं गई वे भी यहां है। लोग इनको देखने आते हैं।

इस प्रकार भारत में नामधारियों से प्रेरणा लेकर बहुत स्थानों पर गौशालाएं खोलकर गौओं और गौ धन की संभाल की जा रही है।

माता चंद कौर जी

श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी के महल (पत्नी)माता चंद कौर जी गऊओं की आप सेवा करते रहे हैं।

आप, गौशाला में गौओं का गोबर आप उठाना, सफाई करनी, दूध दोहना, लंगर में माताओं-बीबीओं को साथ मिलाकर दालें चुगनीं, सब्जियां काटनी, बरतन धोना, हर तरह से सेवा के क्षेत्र में व्यस्त रहे हैं। माता जी करीब तीन-चार क्विंटल दूध, हर रोज़ रिड़कते रहे हैं। सत्गुरु जी के आदेश के अनुसार माता जी सारे डेरे में रहने वाले सेवादारों को कपड़े, दूध और अन्य ज़रूरत की वस्तुएं प्रदान करते हैं। वृद्धाश्रमों में वृद्धों और बीमारों का भी आप विशेष ध्यान रखते हैं। डेरे में रहने वाले जीवों का ध्यान रखने के साथ-साथ माता जी बाहर से श्री सत्गुरु साहिब जी के दर्शनों के लिए आती संगतों के सुख-सुविधाओं का उचित प्रबंध भी करते हैं।

श्री भैणी साहिब या और कहीं भी यदि कोई बड़ा समारोह हो, माता जी लंगर में अग्रणी होते हैं। रोजाना चलते लंगर तैयार करने के दौरान विशेष देखरेख और ध्यान रखते हैं। हर मेलों के दौरान देसी चाय, दूध बांटने की सेवा भी करते रहे हैं। श्री सत्गुरु जी द्वारा जहां कहीं भी निर्माण कार्य चल रहा हो, चाहे वह रामसरोवर बना, स्मृति मंदिर या साधु-संगतों और सेवकों के लिए रिहायशी डेरे या कोई अन्य निर्माण का काम, माता जी आगे होकर बढ़चढ़ कर सेवा करके अपना योगदान पाते हैं और अन्यों को भी सेवा करने की प्रेरणा देकर उत्साहित करते हैं।

प्रबंधक और सेवादार

श्री भैणी साहिब की गौशाला में श्री सत्‌गुरु जगजीत सिंह जी के समय में मुख्य प्रबंधक समय-समय पर इस प्रकार रहे हैं -

सूबा वरियाम सिंह, सर्व संत दिलबाग सिंह, महिंद्र सिंह बींडा, गुरनाम सिंह, साधु सिंह भंगुर, अमर सिंह गरेटा और बलदेव सिंह गहिलां। स्वर्गीय संत बलंवत सिंह गौशाला में लंबे समय सेवा करने वाले सेवादार थे।

श्री जीवन नगर की गौशाला में मुख्य प्रबंधक समय-समय पर इस प्रकार रहे हैं -

सूबा वरियाम सिंह, सर्व संत महिन्द्र सिंह बींडा, बलदेव सिंह बलीया, साधु सिंह भंगुर, रौनक सिंह और दिलबाग सिंह। संत कर्म सिंह, संत कपूर सिंह इत्यादि लंबे समय दूध का रिकार्ड लिखते रहे। संत मग्घर सिंह (सैदो) पुतली गाय को उस समय संभालते थे जब 'गोपाल रतन' पुरस्कार मिला था।

संत रणजीत सिंह बाजवा के पास पशुओं को दाने देने का प्रबंध होता था, रोजाना दूध का रिकार्ड भी इनके पास होता था। कितना किस गाय को दाना देना है, यह हिसाब वह रखते थे। दानपेटी के मुख्य भी यही होते थे।

संत सुरजन सिंह (सुपुत्र संत साधु सिंह ढोटियां के) गायों, बैलों और अन्य पशुओं की खरीददारी करा करते थे।

मस्तानगढ़ की गौशाला में मुख्य प्रबंधक समय-समय पर इस प्रकार रहे हैं -

सर्व संत मेजर सिंह मधेय, निर्मल सिंह खूह अमृतसर के (भगवान सिंह ड्राइवर के पिता जी) गुरचरन सिंह चत्र (गरेटा), मुख्तियार सिंह खारे वाला, कुंडा सिंह, अमर सिंह गरेटा, महिंद्र सिंह बींडा और बलविंद्र सिंह (सुपुत्र संत निर्मल सिंह खूह अमृतसर)

इस समय साल 2010 में श्री भैणी साहिब की गौशाला में यह सेवादार सेवा कर रहे हैं -

सर्व श्री बलदेव सिंह भुल्लर, गांव गहिलां ज़िला बरनाला, साधु सिंह भंगुर श्री भैणी साहिब, काबल सिंह और कुलवंत सिंह, गांव नारली ज़िला अमृतसर (शहीद बीहला सिंह संधू के परिवार से), बलविंद्र सिंह ड्राइवर, घुल्ला सिंह गांव पधरी ज़िला अमृतसर, अवतार सिंह लाली, हरदेव सिंह देबा और जागीर सिंह गांव कक्कड़ां ज़िला अमृतसर, बलबीर सिंह बटाला ज़िला गुरदासपुर, जगतार सिंह बिट्टू श्री भैणी साहिब, अमरीक सिंह गांव मुकाम ज़िला गुरदासपुर, सुखदेव सिंह यू.पी., सुखदेव सिंह गांव वरिआंह ज़िला तरनतारन, कुलजीत सिंह रामपुर, गुरनाम सिंह श्री जीवन नगर, छबेग सिंह कक्कड़, बलविन्द्र सिंह गांव समाध ज़िला मुक्तसर, जस्सा सिंह बटाला और सुखदेव सिंह गांव गंडीवड़ ज़िला तरनतारन इत्यादि।

वैसे भी कई माताएं और सिंह गोबर उठाने व सफाई करने की श्रद्धा भावना से सेवा करने रोजाना आते हैं।

श्री जीवन नगर और मस्तानगढ़ की गौशालाओं में समय-समय पर यह सेवादार सेवा करते रहे हैं - बाबा गंडा सिंह सुनियारा सुपुत्र संत गुरदित्त सिंह, सर्व श्री बूटा सिंह, बलविंदर सिंह महंत, जगीर सिंह श्री जीवन नगर, गुरदेव सिंह कोयल, गुरमुख सिंह (श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी के पूर्व हजूरी ड्राइवर), महिंद्र सिंह (सुपुत्र सूबा वरियाम सिंह), गुरमेल सिंह, सुखदेव सिंह, हरदियाल सिंह मोना, गुरमीत सिंह और गुरदीप सिंह (दोनों भाई) सुपुत्र संत बहाल सिंह, ड्राइवर प्रीतम सिंह, गुरचरन सिंह गरेटा, मक्खन सिंह, रणधीर सिंह धीरा, बूटा सिंह व इंदर सिंह दोनो भाई सुपुत्र संत प्रीतम सिंह रंगलुट, हरनाम सिंह नामु और महिंद्र सिंह मिंदू (दोनों भाई), प्रेम सिंह प्रेमी (झोका) बलदेव सिंह, अमरजीत सिंह, बलविंदर सिंह, लाभ सिंह जटायुं और अजीत सिंह, टहल सिंह (पिछला गांव घणीयां, आजकल यह मध्यप्रदेश में रहते हैं), चाणन सिंह और गुरमीत सिंह सुपुत्र संत उजागर सिंह आदि।

सबका ज़िक्र नहीं हो सकता समय समय पर अनेक सेवक गौएं संभालते रहे।

घोड़ों की सेवा के मुख्य प्रबंधक रहे -

सर्व श्री दरोगा सिंह दुमण, स. भगत सिंह, कर्म सिंह मुनीम और शेर

सिंह जाकी इत्यादि। घोड़ों के कुछ सेवादार रहे – सर्व श्री श्रंगारा सिंह लाड़ा, तारा सिंह चीमा, दियाल सिंह पखोके, साधु सिंह भंगूर, निरंजन सिंह, जगतार सिंह सुपुत्र निरंजन सिंह, जसपाल सिंह सुनियारा, करतार सिंह, गुरबचन सिंह देसी, नारायण सिंह खसरा, रौनक सिंह, मस्ताना बंता सिंह, मुख्तियार सिंह टूसा, मेजर सिंह मधेय, प्रीतम सिंह बिल्ली, दरबारा सिंह गोडल, बुलाका सिंह, करतार सिंह आदो, जगत सिंह सुपुत्र संता सिंह, नगिंदर सिंह सुपुत्र संत आसा सिंह काले खताइयां, करतार सिंह काला और सुरजीत सिंह खैमुआणा (मस्ताने हरदेव सिंह का भाई) इत्यादि।

इस समय श्री भैणी साहिब की गौशाला पर विशेष ध्यान सूबा जगीर सिंह जी दे रहे हैं।

सूबा जगीर सिंह छापियांवाली

सूबा जगीर सिंह सुपुत्र संत जैमल सिंह गांव छापियां वाली, तहसील मलोट ज़िला मुक्तसर साल 2007 में श्री सतगुरु जी के आदेश अनुसार सेवा करने श्री भैणी साहिब आए और तब से यहीं सेवा कर रहे हैं।

गांव छापियां वाली में चार कालेज – गुरु तेग बहादुर खालसा इंजीनियरिंग एंड टैक्नोलॉजी कालेज और गुरु तेग बहादुर खालसा पॉलीटैक्नीक कालेज हैं। इनमें पॉलीटैक्नीक, इंजीनियरिंग, फारमेसी और एम.बी.ए. करवाई जाती है। यह कालेज 35 एकड़ की ज़मीन में है। करीब 3500 विद्यार्थी यहां पढ़ते हैं। सूबा जगीर सिंह जी इन कालेजों में साल 1996 से 1999 तक सीनियर वाइस चेयरमैन, साल 1999 से 2010 तक ज्वाइंट सचिव रहे हैं। साल 2011 से आप वाइस चेयरमैन बन गए हैं। करीब चौदह साल आप अपने गांव छापियां वाली के सरपंच रहे हैं। इनके कार्यकाल के दौरान ही उपरोक्त कालेजों की ज़मीनें दान के तौर पर दी गईं। साल 2007 में श्री भैणी साहिब आने के बाद सुचारु रूप में सेवा करने के साथ साथ सूबा जी यहां गौशाला के विशेष प्रबंधक हैं। इनका गौओं के प्रति विशेष ध्यान रहता है। जब गौशाला की जिम्मेवारी संभाली थी तब गायों का दूध रोज़ाना ढाई क्विंटल था जो अब बढ़कर छह क्विंटल हो गया है। अब डेरे के लिए दूध बाहर से नहीं लेना

पड़ता बल्कि ज़रूरत से कहीं अधिक हो गया है।

साल 2010 में सूबा जी को इंडियन कौंसल आफ एग्रीकल्चरल रिसर्च, कृषि भवन नई दिल्ली द्वारा नेशनल ब्यूरो आफ एनीमल जेनेटिक रिसोंसिज़ आई.सी.ए.आर. (गर्वमेंट आफ इंडिया) करनाल, हरियाणा की इंस्टीच्यूट मैनेजमेंट कमेटी के सदस्य के तौर पर नियुक्त किया गया है। इसके डायरेक्टर श्री बी.के. जोशी जी हैं। 4 सितंबर 2010 को करनाल में इस कमेटी की पहली मीटिंग हुई। इसमें दूध देने वाले पशुओं की नसल सुधार करने के लिए विचार-विमर्श किया गया।

इस मैनेजमेंट कमेटी द्वारा एक ब्रांच श्री भैणी साहिब लाए जाने की योजना है। केंद्रीय सरकार के इस विभाग द्वारा साहीवाल नसल की 500 गायों को यहां रखा जाएगा। साहीवाल नसल का यहां विकास किए जाने की योजना है। पंजाब में कई स्थानों पर इसकी अन्य शाखाएं भी बनाई जाएंगी ताकि गौओं की साहीवाल नसल का सुधार व विकास हो सके।

नेशनल बायोडिवरसिटी अथारिटी इंडिया, पांचवीं मंजिल, टिसल बायो पार्क, तारामणि, चैन्नई 600113 (मद्रास) तमिलनाडु द्वारा 10 जनवरी 2012 को 2011 का ब्रीड सेवियर अवार्ड सूबा जागीर सिंह को तमिलनाडु वैटरनरी एंड एनीमल सांईसिज़ यूनिर्वसिटी में हुए सेमीनार में दिया गया। 17 जुलाई 2012 को केरला में केन्द्र सरकार की ओर से करवाए जा रहे समागम में सूबा जागीर सिंह को श्री भैणी साहिब की गऊशाला की उपलब्धियों के कारण सनमान दिया जाना है। सूबा जागीर सिंह ने प्रयास किया, श्री सत्गुरु जी की मंजूरी और आर्शीवाद लेकर श्री भैणी साहिब गौशाला की गौओं और गौ धन को प्रतियोगिताओं में लेकर गए। इनमें जीते गए पुरस्कारों का विवरण अगले अध्याय में हैं। अगली प्रतियोगिताओं में भी भाग लेने के लिए आप तैयारी करवा रहे हैं।

सूबा जी बताते हैं कि देसी गाय के दूध में अमेरिकन गाय के दूध से तत्व करीब दोगुने होते हैं। दूध, दही, लस्सी और मक्खन का स्वाद भी ज्यादा बढ़िया होता है। इस समय श्री सत्गुरु जी को मत्था टिकी हुई कई अमेरिकन गायें और बछियाएं गौशालाओं में हैं। हम सोच रहे हैं कि या तो इनको बेचकर साहीवाल या हरियाणा नसल की अधिक बढ़िया गायें ली जाएं या इनको

साहीवाल से जोड़कर दो-तीन बार में साहीवाल ही बना लिया जाए। गौशाला में अधिकतर गायें बढ़िया देसी नसल की और ज्यादा दूध देने वाली हैं।

उनके मुताबिक गौ माताओं के लिए अभी कई शैड बनाने हैं। गौशाला का बढ़िया दफ्तर बनाना है। इसमें पशुओं का एक विशेष डाक्टर रखना है जो रात को भी वहीं रहे।

गायों की साहीवाल नसल को सुधारने का प्रयास भी सूबा जी कर रहे हैं। दूध से हटीं गायों की सेवा संभाल की ओर भी आप ध्यान देते हैं। वृद्ध गौओं को आप न बाहर निकालने और न ही बेचने के हक में हैं। घायल या बेसहारा गायों को आप गौशाला के बाड़े में रख लेते हैं ताकि उनकी सेवा की जा सके। इनमें से कई गऊएं बच्चे को जन्म देकर दूध भी देती हैं।

गौशाला संभालने के अलावा साल 2008 से सूबा जगीर सिंह श्री भैणी साहिब में सत्गुरु प्रताप सिंह अकादमी भी संभाल रहे हैं। आप इस अकादमी के चेयरमैन हैं। साल 2011 तक अकादमी के विद्यार्थी करीब दोगुने हो गए हैं। अकादमी के लिए 28 कमरे और बना दिए गए हैं। बोर्ड का नतीजा सौ फीसदी आने लगा है। कई बच्चे पंजाब राज्य में मेरिट पर आए हैं। सूबा जी की पत्नी बीबी संतोख कौर सुपुत्री स. जीत सिंह गांव गुंमटी ज़िला बठिंडा, साल 1998 में स्वर्गवास हो गईं। सूबा जी के दो सुपुत्र और एक बेटी है।

सूबा जी के बड़े सुपुत्र स. जसबीर सिंह, गुरु तेग बहादुर खालसा इंजीनियरिंग एंड टैक्नोलॉजी कालेज छापियांवाली में डिप्टी रजिस्ट्रार फार एडमिनिस्ट्रेशन हैं। इनके पुत्र अर्शदीप सिंह ने एमबीए की है। बेटी विश्वदीप कौर ने 2010 में इलैक्ट्रोनिक और कम्युनिकेशनस में बी.टेक. की है। आजकल यह गुरु तेग बहादुर खालसा इंस्टीच्यूट आफ इंजीनियरिंग एंड टैक्नोलॉजी कालेज छापियांवाली, तहसील मलोट ज़िला मुक्तसर में अस्सिटेंट प्रोफेसर हैं। इसकी शादी स. मनदीप सिंह सुपुत्र स. बलविन्दर सिंह मलोट से हो गई है। सूबा जी के छोटे सुपुत्र स. रघुबीर सिंह, गांव छापियां वाली में कृषि व्यवसाय का काम करते हैं। इनका एकमात्र पुत्र कर्णदीप सिंह है जो इंजीनियरिंग कर रहा है।

सूबा जी की सुपुत्री बीबी कुलबीर कौर पत्नी स. जगतार सिंह सिद्धू बराड़ (गांव उदयकरन ज़िला मुक्तसर) की दो लड़कियां नवदीप कौर,

संदीप कौर और एक पुत्र दविन्द्र सिंह है।

श्री भैणी साहिब, श्री जीवन नगर और मस्तानगढ़ की गौशालाओं के समय-समय पर रहे मुख्य प्रबंधक और विशेष सेवादारों की कुछ जानकारियां इस प्रकार हैं -

सूबा वरियाम सिंह -

सूबा वरियाम सिंह (सुपुत्र संत चूड़ सिंह, पहले गांव जमशेर, पाकिस्तान) श्री सतगुरु प्रताप सिंह जी के समय में साल 1947 से पहले श्री भैणी साहिब में गौशाला के मुख्य प्रबंधक के तौर पर सेवा करते रहे। जब श्री सतगुरु जी ने श्री जीवन नगर का क्षेत्र आबाद किया तब आप आदेश के अनुसार वहां गौशाला में सेवा करने चले गए। सारी उम्र सेवा की और साल 1975 में आप श्री भैणी साहिब आ गए।

सूबा जी सारी पशु प्रदर्शनियों में गायों और अन्य पशु धनों को लेकर जाया करते थे। श्री सतगुरु जी की आप पर बेहद कृपा थी। संत गुरबख्श सिंह श्री भैणी साहिब के सुपुत्र संत झंडा सिंह और संत पूर्ण सिंह सुपुत्र संत सेवा सिंह, संत बखतौर सिंह सुपुत्र संत जोध सिंह, सूबा वरियाम सिंह के साथ सहायक के तौर पर सेवा किया करते थे।

सूबा जी का परिवार श्री जीवन नगर रहता है। वहां उनके तीन पुत्र सर्व श्री महिंद्र सिंह, सुखचैन सिंह गांधी और बख्शीश सिंह रहते हैं।

संत दिलबाग सिंह -

यह गांव राणीयां ज़िला सरसा के हैं। यह संत हरी सिंह और माता राम कौर के पुत्र हैं। इनके नाना जी संत सेवा सिंह (कक्कड़ा वाले) ने इनको बचपन में ही श्री सतगुरु जी के समक्ष माथा टेक दिया था। यह दस कक्षाएं अपने गांव में पढ़ने के बाद सेवा करने श्री भैणी साहिब आ गए थे। श्री सतगुरु प्रताप सिंह जी के समय से ही श्री भैणी साहिब की इस गौशाला के प्रबंधक के तौर पर सेवा करते रहे। इन्होंने साल 1950 से साल 1993 तक करीब 43 साल श्री भैणी साहिब गौशाला के पहले सेवादार और फिर प्रबंधक के तौर पर सेवा की। फिर श्री सतगुरु जी के आदेश मुताबिक श्री

जीवन नगर गौशाला में सेवा करने चले गए। डा. इकबाल सिंह श्री भैणी साहिब इनके छोटे भाई हैं।

श्री भैणी साहिब की गौशाला में प्रबंधक के तौर पर सेवा करते संत दिलबाग सिंह की देखरेख में बहुत काम हुआ। गायों के बारे इनको बेहद जानकारी है। बीमार गायों को ठीक करने के उपाय और दवाइयों का ज्ञान भी इन्हें भलीभांति है। नसल सुधार का काम भी इनके द्वारा ही किया गया।

इनके द्वारा बढ़िया संभाल किए जाने के कारण ही गायों ने बहुत दूध दिया। यह बताते हैं कि संमुदरी गाय हर रोज़ 40 पौंड दूध देती रही। जिस कारण 'गोपाल रतन' पुरस्कार प्राप्त हुआ उस पुतली गाय ने 300 दिनों में 7625 पौंड दूध दिया और लगातार चार साल भारत सरकार द्वारा पुरस्कार भी जीतती रही।

श्री सत्गुरु प्रताप सिंह जी की बहुत कृपा और खुशियां इनपर बरसतीं रहीं। श्री सत्गुरु जी ने समय-समय पर आदेश कर कई वर इनको दिए जैसे कि -

"दिलबाग सिंह उन बच्चों में से हैं जो पीछे से आकर सबसे आगे लांघ जाते हैं।"

"जितनी तू गौशाला में तनमन से सेवा करता है कोई विरला सिख ही करता है।"

"गौशाला में सबसे लंबी सेवा की अवधि दिलबाग सिंह की ही रहेगी।"

"यह गौओं की सेवा तनमन से निष्काम भाव से करता है। दरगाह में इसके लिए दरवाज़े खुले रहेंगे।"

श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी की भी बहुत खुशियां इन पर मेहरबान रहीं -

साल 1993 से संत दिलबाग सिंह, श्री जीवन नगर की गौशाला में प्रबंधक के तौर पर सेवा कर रहे हैं। यह अपनी देखरेख में सेवकों से काम करवाते हैं। इनकी उम्र करीबन 76 साल की है। इनका जन्म जगदियु, ज़िला लायलपुर पाकिस्तान में हुआ था।

संत दिलबाग सिंह कुल चार भाई हैं –

संत दिलदार सिंह राणीयां (रोडवेज़ में ड्राइवर रहे)

फौजी पाल सिंह राणीयां

डा. इकबाल सिंह : यह साल 1986 से पहले संत नगर और फिर साल 1997 से श्री भैणी साहिब में प्राकृतिक उपचार और योग करवाने की निष्काम सेवा कर रहे हैं। श्री भैणी साहिब में रोजाना सुबह आसा की वार के कीर्तन की समाप्ति के बाद यह साधु-संगतों को योग सिखाते हैं।

संत दिलबाग सिंह की पत्नी स्वर्गीय सीतो थीं। इनकी अकेली संतान बेटी गोरी है जो संत जगराज सिंह की पत्नी और संत साधु सिंह रायेसर के ढोलकी वालियां की बहू है।

संत महिंद्र सिंह बींडा –

सूबा वरियाम सिंह के बाद संत महिंद्र सिंह बींडा सुपुत्र संत ध्यान सिंह गिल (पहले गिल्लं, ज़िला लायलपुर के) कई साल श्री जीवन नगर गौशाला के प्रबंधक के तौर पर सेवा करते रहे। फिर आदेशानुसार श्री भैणी साहिब गौशाला में प्रबंधक के तौर पर सेवा करने आए। इसके बाद साल 2009 तक आपने मस्तानगढ़ की गौशाला में सेवा की। साल 2010 में संत बलविंदर सिंह (कुआं अमृतसर) मस्तानगढ़ की गौशाला के प्रबंधक बने।

संत महिंद्र सिंह बींडा बताते हैं कि साल 1947 को वह छोटी उम्र के ही थे जब अपने परिवार के साथ पाकिस्तान से श्री सत्गुरु प्रताप सिंह जी के चरणों में आ गए थे। बचपन से ही संत जी श्री जीवन नगर गौशाला में गौओं को चराते, पट्ठे डालते, दूध दोहने जैसी सेवाओं में जुट गए थे। इनके भाई संतोख सिंह जी को श्री सत्गुरु जी ने इनके गांव राणीयां से गौशाला की संभाल करने के लिए श्री जीवन नगर बुला लिया था। श्री सत्गुरु जी ने इनको पहले श्री जीवननगर की गौशाला का प्रबंधक बनाया। फिर आदेश अनुसार 15 साल श्री भैणी साहिब की गौशाला और करीब 13 साल मस्तानगढ़ की गौशाला में प्रबंधक के तौर पर सेवा करने का कार्य सौंपा।

श्री सत्गुरु जगजीत जी की इन पर बेहद कृपा रही। इनके बतौर प्रबंधक सेवाकाल के दौरान कई गायों को पशु प्रदर्शनियों और मुकाबलों में

पुरस्कार प्राप्त करने में सफलता मिली।

श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी इनके मुख से शबद सुना करते थे। शबद सुनते श्री सत्गुरु जी ने अपने वचनों में कहा कि यह तो बींडे जैसा बोलता है। तभी से ही उनका नाम बींडा पुकारा जाने लगा।

संत महिंद्र सिंह बींडा की पत्नी बीबी बलविंदर कौर, महंत बखतौर सिंह गांव सैदों (ज़िला मोगा) की बेटी है।

संत महिंद्र सिंह के दो सुपुत्र और चार बेटियां हैं। इनका बड़ा सुपुत्र गुरबचन सिंह बिल्ला जो कई साल पहले श्री भैणी साहिब में प्रयोग में सुबह अमृत के समय पीपी बजाकर साधु–संगतों को जगाने की सेवा किया करता था, आजकल कनाडा में रहता है। उसकी पत्नी उत्तम कौर है।

छोटा सुपुत्र गुरदेव सिंह अपने पिता के साथ श्री जीवन नगर में रहता है। बेटियों में बड़ी बेटी सुखपाल कौर, संत गुरमीत सिंह राहों की पत्नी है। छोटी बेटी राणी पत्नी संत सरमेश सिंह, अमृतसर में है। बेटी वीरां पत्नी संत ध्यान सिंह और बेटी गुरमीत कौर पत्नी संत राजा सिंह श्री भैणी साहिब में रहते हैं।

संत बलदेव सिंह बलीया –

जब संत महिंद्र सिंह बींडा श्री जीवन नगर से श्री भैणी साहिब आ गए तब संत बलदेव सिंह (सुपुत्र संत जय सिंह सैदों वाले) श्री जीवन नगर में, उनकी जगह पर सेवा करते रहे। आप चलाना कर गए हैं। इनका एक पुत्र स्वर्गीय हरदीप सिंह श्री जीवन नगर रहता था।

संत गुरनाम सिंह –

जब संत महिंद्र सिंह बींडा श्री भैणी साहिब गौशाला से मस्तानगढ़ की गौशाला में प्रबंधक के तौर पर चले गए तब संत गुरनाम सिंह श्री भैणी साहिब गौशाला के प्रमुख बने और करीब सात साल सेवा की। आजकल यह श्री भैणी साहिब ही रहते हैं। इनके बाद श्री भैणी साहिब गौशाला में संत साधु सिंह भंगुर और संत अमर सिंह गरेटा ने सेवा संभाली।

संत गुरनाम सिंह (जठौल), पूर्व हजूरी लांगरी संत सतनाम सिंह के

छोटे भाई हैं। यह संत सुच्चा सिंह (गांव बुढणपुर ज़िला करनाल) के सुपुत्र हैं। संत गुरनाम सिंह साल 1984 में श्री भैणी साहिब में गौशाला में सेवा करने आए। एक साल यहां इन्होंने सेवा की। इसके बाद कुछ समय ट्रैक्टर के ड्राइवर के तौर पर सेवा की। करीब सात साल आपने श्री भैणी साहिब की गौशाला के प्रबंधक के तौर पर सेवा करके श्री सत्गुरु जी की खुशियां हासिल कीं। श्री सत्गुरु जी ने गौशाला में जाकर सेवकों को आदेश दिया था कि – "जैसे आप सूबा वरियाम सिंह जी का कहना मानते रहे हो वैसे ही अब गुरनाम सिंह का कहना मानना है।"

संत गुरनाम सिंह की पत्नी बीबी गुरदेव कौर (सुपुत्री संत सुलखन सिंह खंघुड़ा गांव किरपाल पट्टी, ज़िला सरसा) है। इनके दो सुपुत्र गुरदियाल सिंह (आस्ट्रेलिया) और गंगा सिंह हैं। बेटी ज्ञान कौर है। यह मोहाली से नर्सिंग का कोर्स कर रही है।

संत गुरनाम सिंह बताते हैं कि श्री सत्गुरु जी के पास से उनको बेहद खुशियां हासिल हुईं हैं और वह अरदास करते हैं कि सत्गुरु अपने चरणों से उनकी प्रीत इसी तरह निभाए।

जब संत गुरनाम सिंह को श्री सत्गुरु जी का आदेश हुआ कि श्री भैणी साहिब रहकर सेवा करनी है तो आपने आदेश की पालना की। अपने कार्यकाल के दौरान गौशाला की गऊओं की खुराक और सेवा की ओर विशेष ध्यान दिया जिसके फलस्वरूप गायों का रोजाना दूध 25 किलो तक पहुंच गया था।

श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी सारे सेवकों का बेहद ध्यान रखते हैं। एक बार संत गुरनाम सिंह ने निवेदन किया था कि मुझे अपने गांव फसल देखने जाना है तो सच्चे पातशाह जी ने आदेश किया कि मैं तेरे गांव फसल संभालने के लिए व्यक्ति भेज दूंगा। यदि किसी से लेन-देन का कोई हिसाब है वह भी चुकता कर दिया जाएगा। तुम चिन्ता न करो यहां रहकर सिर्फ सेवा करो।

संत साधु सिंह भंगूर –

संत बलदेव सिंह बलीया के बाद संत साधु सिंह सुपुत्र संत सोहन सिंह खतराइयां साल 1985 से श्री जीवन नगर गौशाला के प्रबंधक रहे। उससे

पहले आप बचपन से ही श्री जीवन नगर में घोड़ों की सेवा करते रहे।

श्री सत्गुरु जी के आदेश मुताबिक साल 1993 से श्री भैणी साहिब आ गए। तब से आप समय-समय में लंगर व गौशाला में सेवा करते रहे। साल 2008 से साल 2009 तक आप वृद्धशाला में प्रमुख रहे। साल 2009 से आदेश के अनुसार आप गौशाला में सेवा कर रहे हैं।

इनका सारा परिवार श्री भैणी साहिब रहता है। इनके पुत्र सर्व श्री जसवंत सिंह, मलकीत सिंह, कुलवंत सिंह और शाम सिंह हैं।

संत रौनक सिंह -

संत रौनक सिंह सुपुत्र संत दीवान सिंह धरने (पहले गांव मिर्जा जान, गुजरांवाला, पाकिस्तान), घोड़ों को भी संभालते रहे और लंबा समय श्री जीवन नगर गौशाला के प्रबंधक के तौर पर कार्यरत रहे। हॉकी वाले सुखदेव सिंह इनके सुपुत्र हैं।

संत रौनक सिंह बताते हैं कि वैसे तो वह छोटी उम्र से ही गऊएं चारने की सेवा में आ गए थे पर श्री जीवन नगर की गौशाला के प्रबंधक के तौर पर सूबा वरियाम सिंह और संत बली सिंह बलीया के बाद सेवा में आए थे।

जब संत रौनक सिंह बहुत छोटी उम्र के थे इनके मां-बाप चल बसे थे। साल 1947 में यह करीब आठ साल की उम्र में पाकिस्तान से सरीके में लगते अपने चाचा संत कृपाल सिंह के साथ, श्री जीवन नगर श्री सत्गुरु प्रताप सिंह जी के पास आ गए थे। श्री सतगुरु जी ने ही आपकी परवरिश की और इतना प्यार व स्नेह लुटाया कि मां-बाप या भाई-बहन भी न कर पाते। श्री सत्गुरु जी ने अपने लांगरी संत आत्मा सिंह (जोकि संत रतन सिंह हजूरी लांगरी से मिलकर सेवा करते थे) के पास इनको पढ़ने भेजा।

जब रौनक सिंह नौजवान अवस्था में पहुंचे तो श्री सत्गुरु जी के आदेश के अनुसार इनका विवाह बीबी सुरजीत कौर (सुपुत्री स. बाबू सिंह मानसा मंडी) के साथ हो गया। इनके दो सुपुत्र और चार बेटियां हैं।

सुपुत्रों में बड़ा सुखदेव सिंह घुद श्री भैणी साहिब रहता है और नामधारी हॉकी इलेवन की पहली टीम का खिलाड़ी रहा है और बहुत उपलब्धियां हासिल की हैं। जितने भी खेलों में मैच के लिए गया हमेशा जीत प्राप्त करके

लौटा। इस बारे श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी अपने प्रवचनों में फरमाते हैं कि-

"यह सुखदेव सिंह खुद हॉकी खेलता है, कद छोटा है पर चीन की दीवार जैसे बॉल को अपने सर्कल से निकलने नहीं देता। यह उस संत रौनक सिंह का पुत्र है जिन्हें श्री सत्गुरु प्रताप सिंह जी ने अपनी गोद में पाला है।"

संत सुखदेव सिंह हॉकी की टीम के साथ दुनिया के बहुत देशों - थाइलैंड, इंग्लैंड, अमेरिका, तनजानिया, स्पेन, बैल्ज़ियम इत्यादि में गए।

संत सुखदेव सिंह घुद की पत्नी राज कौर संत प्यारा सिंह संत नगर की बेटी है। इसके दादा जी संत संता सिंह थे। पड़दादा जी संत बिशन सिंह सुनियारा थे जोकि श्री सत्गुरु राम सिंह जी के पहले हुकमनामे बर्मा से लेकर आए थे। संत सुखदेव सिंह की एक बेटी गुरप्रीत कौर और दो बेटे हैं। दोनों बेटे स्वर्ण सिंह और गुलजार सिंह मॅसल वीकनेस की बीमारी से पीड़ित हैं। श्री सत्गुरु जी कृपा से थोड़ा ठीक हो गए हैं। यह जप प्रयोग के समय रात एक बजे से उठकर भजन करते हैं।

संत रौनक सिंह की चार बेटियां हैं -

1. बीबी राज कौर पत्नी संत जोगिंदर सिंह, लुधियाना।
2. बीबी जसबीर कौर पत्नी संत जोगिंदर सिंह राणियां।
3. बीबी हरजिंदर कौर पत्नी संत दीदार सिंह सरसा।
4. बीबी बलविंदर कौर पत्नी संत सतपाल सिंह दिल्ली।

संत रौनक सिंह बताते हैं कि श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी भी मुझे श्री सत्गुरु प्रताप सिंह की तरह ही प्यार से नवाजते हैं।

संत कपूर सिंह -

संत कपूर सिंह सैनी (गांव रंगीलपुर ज़िला रोपड़) श्री सत्गुरु प्रताप सिंह जी के समय से साल 1957 से करीब 40 साल गौशाला में रिकार्ड तैयार करने की सेवा करते रहे। तब से गायों का सारा रिकार्ड इनके द्वारा बनाया गया है।

संत कपूर सिंह का जन्म साल 1920 में गांव मौली बादवान तहसील खरड़ ज़िला रोपड़ में पिता स. सुंदर सिंह और माता राज कौर के घर में हुआ।

परिवार में सबसे पहले इनके छोटे भाई संत जंग सिंह जी नामधारी बने।

स. कपूर सिंह को शुरू से ही कृषि और गाय-भैंसे पालने का बहुत शौक था। मैट्रिक की पढ़ाई पूरी करने के बाद आप साल 1938 में सरकारी डेयरी लाहौर में मिल्क रिकार्ड की नौकरी करने लगे। देश के बंटवारे के बाद पाकिस्तान से वापस आकर आप 'एडवर्ड क्वाटिंड डेयरी दिल्ली' में नौकरी करने लगे।

श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी के आदेश अनुसार महाराज बीर सिंह, स. कपूर सिंह को दिल्ली से श्री जीवन नगर में ले आए और उनको वहीं डेरे की गौशाला में गाय-भैंसों के दूध-घी के नाप तोल और उनकी पैडागिरी बनाने का काम सौंप दिया। यहां उन्होंने यह सेवा तकरीबन 25 साल तक की। इस समय के दौरान उन्होंने श्री जीवन नगर में हर एक गाय-भैंस के दूध का सलाना रिकार्ड बनाया।

इस के बाद वह करीब साल 1975 में श्री सत्गुरु जी के आदेश के अनुसार श्री भैणी साहिब में आ गए। यहां उनको श्री भैणी साहिब डेरे में गऊओं के दूध घी का रिकार्ड तैयार करने की जिम्मेवारी सौंपी गई।

संत कपूर सिंह ने श्री भैणी साहिब में भैंसों और गायों का रिकार्ड इस तरीके से तैयार किया कि उसको देखकर बाहर से गाय-भैंस खरीदने वाले अधिकारी और व्यापारी लोग हैरान रह जाते थे। श्री भैणी साहिब में उन्होंने यह सेवा तकरीबन 20 साल अपने तन-मन-धन से निभाई। साल 1993 में वह स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण सत्गुरु जी की आज्ञा से अपने गांव रंगीलपुर ज़िला रोपड़ में आ गए और यहीं ही वह अक्तूबर 1998 में स्वर्गवास हो गए। श्री भैणी साहिब में उनके द्वारा तैयार किया गया रिकार्ड आज तक मौजूद है।

संत कपूर सिंह का पहला विवाह बीबी कुलदीप कौर सुपुत्री स. आत्मा सिंह लौदी माजरा से हुआ। इनके चल बसने के बाद दूसरा विवाह बीबी अमृत कौर सुपुत्री डा. त्रिलोक सिंह से हुआ।

संत कपूर सिंह के तीन सुपुत्र हैं - स. जसवंत सिंह, स. अमरीक सिंह गांव मौली और डा. सुखबीर सिंह गांव रंगीलपुर ज़िला रोपड़।

स. जसवंत सिंह, एडवोकेट जनरल पंजाब से सुपरिटेंडेट रिटायर हुए

हैं। इनकी पत्नी बीबी स्वर्ण कौर सुपुत्री स. अजीत सिंह देसुमाजरा से है। इनके दो पुत्र हैं – हरिंदर पाल सिंह और बलविंदर सिंह। हरिंदरपाल सिंह पी.जी.आई. चंडीगढ़ में इलेक्ट्रीशियन हैं।

स. अमरीक सिंह, पंजाब सचिवालय चंडीगढ़ में चौथे पंजाब वित्त कमिश्नर विभाग में सुपरिटेंडेट हैं। इनका दफ्तर सेक्टर 17, उद्योग भवन चंडीगढ़ में है। यह मुख्यमंत्री पंजाब के दफ्तर में ही काम करते रहे हैं। इनके तीन पुत्र हैं – कुलविंदर सिंह और परमजीत सिंह जो सैक्रेटेरिएट में नौकरी करते हैं और हरजिंदर सिंह फूड सप्लाई इंस्पैक्टर है।

डा. सुखबीर सिंह गांव रंगीलपुर रोपड़ में डाक्टर हैं। इनका एक पुत्र वरिंदरपाल सिंह और दो बेटियां सिमरनजीत कौर और रमिंदर कौर हैं।

संत अत्र सिंह गरेटा –

संत कपूर सिंह के बाद श्री जीवन नगर में दूध का सारा रिकार्ड संत अत्र सिंह गरेटा सुपुत्र संत शिंगारा सिंह गरेटा ने साल 1976–78 तक दो साल के लिए संभाला और साथ ही गऊओं की सेवा भी करते रहते थे।

संत अमर सिंह गरेटा –

संत अमर सिंह गरेटा सुपुत्र संत प्यारा सिंह गरेटा श्री जीवन नगर ने अपने चाचे के पुत्र जगीर सिंह, जोगा सिंह रब्ब और बलविंदर सिंह महंत तीनों भाई सुपुत्र संत पूर्ण सिंह, अत्र सिंह सुपुत्र संत शिंगारा सिंह को गायों की सेवा करने जाते देख साल 1975 में चौथी कक्षा में पढ़ाई छोड़कर श्री जीवन नगर की गौशाला में सेवा करनी शुरू की।

संत महिंद्र सिंह बींडा ने निवेदन कर, संत अमर सिंह को दूध का रिकार्ड लिखने के लिए लगा दिया।

संत अमर सिंह साल 1987–88 से साल 2009 तक श्री जीवन नगर, मस्तानगढ़ और श्री भैणी साहिब गौशाला के प्रबंधक भी रहे और रिकार्ड भी लिखते रहे। इन्होंने 16 नवंबर साल 1996 से साल 2009 तक श्री भैणी साहिब में गौशाला का रिकार्ड रखा।

आप बताते हैं कि श्री भैणी साहिब में जब गौशाला बड़े लंगर की तरफ थी, रोज की तरह श्री सत्गुरु जी एक दिन गौशाला में दर्शन देने आए। तब वहां मुख्य प्रबंधक संत गुरनाम सिंह और रिकार्ड रखने वाले संत अमर सिंह गरेटा थे।

सत्गुरु जी ने आदेश करके पूछा, 'अधिक से अधिक कितना दूध है गायों का?'

संत अमर सिंह ने अर्ज कर बताया- 'अधिक से अधिक 15 से 16 किलो चल रहा है।'

श्री सत्गुरु जी ने कहा कि 'दूध 20 किलो से ऊपर होना चाहिए है, जिस चीज की ज़रूरत है मुझे बताओ।'

संत अमर सिंह ने निवेदन किया 'सच्चे पातशाह जी आप जी के आर्शीवाद से हो जाएगा।'

गायों की ओर अधिक ध्यान दिया गया और गौशाला की सारी गायों का दूध नये हिसाब से बढ़ता गया और 25 किलो तक पहुंच गया। संत अमर सिंह गरेटा के दो बेटे गुलजार सिंह और अवतार सिंह हैं और बेटी अवतार कौर है।

संत बलदेव सिंह गहिलां -

संत बलदेव सिंह जून 2008 में आदेश के अनुसार श्री भैणी साहिब गौशाला में सेवा करने आए। संत अमर सिंह गरेटा के बाद अब तक यह गौशाला में प्रबंधक हैं और गऊओं का सारा रिकार्ड भी रखते हैं। संत बलदेव सिंह सुपुत्र संत सेवा सिंह गांव गहिलां ज़िला बरनाला के हैं। इनके चाचा जी संत काला सिंह गेहूं-धान की फसल की उगराही करने की सेवा करते हैं। इनके दादा जी संत सुखदेव सिंह और पड़दादा जी सूबा वरियाम सिंह गहिलां वाले थे।

संत निर्मल सिंह खूह अमृतसर -

संत निर्मल सिंह ढिल्लों, गांव खूह अमृतसर ज़िला सरसा हरियाणा से

हैं। आप करीब आठ साल मस्तानगढ़ की गौशाला में प्रबंधक रहे। संत सुखदेव सिंह सुपुत्र संत ओमराओ सिंह (गांव कक्कड़ ज़िला अमृतसर के) और संत पूर्ण सिंह (संत अवतार सिंह अमृतसर कलां वालियां के पिता) के साथ हट्टी और वरनीयों में भी आप सेवा करते रहे।

संत निर्मल सिंह के पांच पुत्र हैं। महिंद्र सिंह और भगवान सिंह नामधारी रस्साकशी की टीम के आरंभिक सदस्य रहे हैं। महिंद्र सिंह और सविंदर सिंह छिन्दा और जोगिन्दर सिंह (राम) गांव खूह अमृतसर में रहते हैं। बलविंदर सिंह साल 2010 से मस्तानगढ़ की गौशाला में मुख्य प्रबंधक हैं। पहले आप कई सालों से यहां सेवादार थे। भगवान सिंह, श्री सत्‌गुरु जी की गाड़ियों के ड्राइवर हैं और श्री भैणी साहिब रहते हैं।

संत निर्मल सिंह बताते हैं कि मग्घर में उन्होंने गौशाला का चार्ज लिया था। एक दिन सच्चे पातशाह जी आए और कहा कि गऊएं कमजोर हैं। संत निर्मल सिंह ने तन-मन-धन से गायों की सेवा की। जब सच्चे पातशाह चैत्र मास में फिर दर्शन देने आए तो वहां की हालत बेहतर हो गई थी। उन्होंने अपनी बाणी में कहा कि -

'निर्मल सिंह आप तो कमजोर हो गए पर माल डंगर (गऊओं को) वैसा ही कर दिया जैसा चाहिए था।'

गौशाला की सेवा के दौरान भी संत निरमल सिंह हट्‌टी के प्रमुख रहे।

संत मेजर सिंह मधेय वाला -

संत मेजर सिंह मधेय वाला ज़िला मोगा पहले श्री जीवन नगर गौशाला में सेवा करते रहे। फिर मस्तानगढ़ की गौशाला में करीब 15 साल प्रमुख प्रबंधक के तौर पर सेवा करते रहे। गांव राणीयां में इनके सुपुत्र गुरमेल सिंह और गुरदियाल सिंह रहते हैं।

संत मग्घर सिंह -

संत मग्घर सिंह सैदों करीब पचास साल श्री सत्‌गुरु प्रताप सिंह जी और फिर श्री सत्‌गुरु जगजीत सिंह जी के समय में श्री जीवन नगर और

मस्तानगढ़ गौशाला में निष्काम सेवा करते रहे। इनके बड़े भाई संत जै सिंह सैदों, श्री जीवन नगर में लंबे समय तक हट्टी के इंचार्ज रहे।

संत मग्घर सिंह (सुपुत्र संत सुहावा सिंह और माता राज कौर) का जन्म गांव सैदों (अब ज़िला मोगा) में हुआ। इनके दादा जी संत पाखर सिंह, श्री सत्गुरु राम सिंह जी के समय में हुए सूबा मान सिंह सैदों वालों के सरीके परिवार से थे। संत मग्घर सिंह का परिवार साल 1947 में गांव सैदों से श्री जीवन नगर आ गया। तब संत मग्घर सिंह करीब 9-10 साल की उम्र के थे। आप गौशाला में गऊएं चारने की सेवा करने लगे। तभी से आप गऊओं की सेवा में जुटे हैं। पुतली और झुंगो आदि पुरस्कृत हरियाणा नसल की गायों को यह ही संभाला करते थे।

पुतली गाय श्री सत्गुरु प्रताप सिंह जी ने खरीदी थी। इसने पुरस्कार श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी के समय में हासिल किए। पुतली को 'ऑल इंडिया दूध मुकाबले' में पहले नंबर पर आने की वजह से लगातार तीन साल दो-दो हज़ार रुपए की नकद राशि, चौथे साल में चार हज़ार रुपए पुरस्कार और श्री सत्गुरु जगजीत सिंह को 'गोपाल रतन' का पुरस्कार हासिल हुआ। जब सच्चे पातशाह जी को यह इनाम मिला तो आपने संत मग्घर सिंह को एक पीपा देसी घी और एक दस्तार देकर सम्मानित किया।

महाराजा बीर सिंह ने चार सीटों वाले अपने प्राइवेट हवाज जहाज में श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी और संत ऋषि सिंह के साथ संत मग्घर सिंह को भी बिठाकर असमान की सैर करने का आनंद दिया।

जब गाय पुतली चल बसी तो संत मग्घर सिंह कई दिनों तक बेहद उदास रहे। मालूम पड़ने पर श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी ने आपको दिलासा दिया।

गाय झुंगो ने भी अपने सूतपने और दूध में कुल हिंदुस्तान के मुकाबलों में पुरस्कार हासिल किए। यह दिन का करीब 28 किलो दूध देती रही। संत मग्घर सिंह बताते हैं कि झुंगों के बछड़े झंडा, भोलू और उग्रसेन बड़े ऊंचे, लंबे और सुंदर थे। सारी गऊएं, बछड़े-बछियाओं के नाम श्री सत्गुरु जगजीत सिंह द्वारा ही रखे हुए हैं।

संत मग्घर सिंह श्रद्धा, सेवा और संयम में जीवन व्यतीत करते रहे हैं।

आदेश अनुरूप साल 1990 तक आप श्री जीवन नगर और उसके बाद मस्तानगढ़ गौशाला में सेवा करते रहे। आजकल मस्तानगढ़ डेरे में रोजाना आसा की वार और नित्य नाम सिमरन का नियम इनकी देखरेख में चल रहा है। श्री सत्‌गुरु जी ने आपको आदेश दिया है कि तुमने वार और नित्य नियमों में ज़रूर आना है, चाहे कोई आए या नहीं। आदेश मुताबिक संत मग्घर सिंह द्वारा इस नियम का पालन किया जाता है।

संत मग्घर सिंह की पत्नी बीबी गुरदेव कौर करीब 34-35 साल की उम्र में चल बसी थीं। इनकी दो पुत्रियां स्वर्ण कौर और जसबीर कौर और एक पुत्र गुरचरन सिंह पप्पू है। संत गुरचरन सिंह पप्पू साल 2007 से मस्तानगढ़ और टिब्बे के क्षेत्र में गौशाला, कृषि, लंगर, वरनी और शैक्षणिक संस्थाओं के प्रमुख रहे हैं। यह श्री गुरु हरी सिंह शैक्षणिक सोसाइटी के वित्त प्रमुख हैं। इस सोसाइटी में श्री गुरु हरी सिंह कालेज और तीन स्कूल श्री गुरु हरी सिंह सीनियर सैकेंडरी स्कूल श्री जीवन नगर, अटल प्रतापी कन्या पाठशाला श्री जीवन नगर और सत्‌गुरु प्रताप सिंह इंटरनेशनल स्कूल श्री जीवन नगर आते हैं।

संत गुरचरन सिंह साल 1979 से 1992 तक नामधारी हॉकी इलेवन की पहली टीम के सदस्य रहे। हॉकी की टीम के साथ आप दुनिया के बहुत सारे देशों - थाइलैंड, तनजानिया, अमेरिका, इंग्लैंड, स्पेन, बैल्जियम इत्यादि घूमे। साल 1996 से 98 तक आप अमेरिका रहकर आए। अपने पिता जी के नक्शे कदम पर चलते आजकल आप मस्तानगढ़ में सेवा कार्यों में जुटे हुए हैं।

संत करम सिंह -

श्री जीवन नगर में मिस्त्री संत करम सिंह सुपुत्र संत झंडा सिंह रीहल लंबे समय तक गौशाला में गायों के दूध और घी का रिकार्ड लिखते रहे। आप गौशाला, घुड़सवारी और लंगर के इंचार्ज रहे।

जब बंग्लौर का नामधारी फार्म साल 1974 में खरीदा गया तब संत करम सिंह सेवा में आए और साल 1993 तक (जब चलाना कर गए) सेवा में रहे।

संत करम सिंह 20 साल बिना वोटों के ही गांव संत नगर ज़िला सरसा के सरपंच रहे।

श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी संत नगर घर आकर इनको सेवा करने के लिए श्री जीवन नगर साथ ले गए थे। आदेश किया कि 'सरपंच जी, आपके बच्चे बड़े हो गए हैं, अब आप मेरे साथ चलो।'

संत करम सिंह ने तन-मन से सेवा की। श्री सतगुरु जी की आप पर बेहद कृपा थी।

संत करम सिंह 1 जून साल 1993 को संत नगर में अपने घर चलाना कर गए। आपके पाठ का भोग श्री सतगुरु जी की हजूरी में 13 जून को पड़ा।

संत करम सिंह का एकमात्र पुत्र स्वर्गीय हरचरन सिंह और बेटियां गुरमीत कौर (संतनगर), स्वर्गीय गुरदेव कौर (राणीयां), सुरजीत कौर (मंडी) और बेअंत कौर (सरसा) हुए।

संत हरचरन सिंह के तीन पुत्र जोध सिंह, सिमर सिंह और शमशेर सिंह हैं। पांच बेटियां बलजीत कौर (श्री भैणी साहिब), सुरिंदर कौर (श्री भैणी साहिब), हरमीत कौर (मुल्लांपुर खेड़ी, ज़िला फतेहगढ़ साहिब), बलविंदर कौर (एलानाबाद) और रणजीत कौर (बटाला) हैं।

संत कुलवंत सिंह नारली -

संत कुलवंत सिंह नारली सुपुत्र स. सज्जन सिंह संधू, गांव नारली, ज़िला तरनतारन, अमृतसर साके के शहीद बीहला सिंह के परिवार से हैं। यह श्री भैणी साहिब की गौशाला में प्रबंधक संत बलदेव सिंह गहिलां की देखरेख में सेवादार हैं। इस समय ज्यादा दूध देने वाली और पुरस्कार प्राप्त जितनी गायें हैं, करीब उन सभी की सेवा संभाल का कार्य यही देख रहे हैं। नागपुष्पी, जगत, बाणी, गुलाब, पुकार, किरपा, निरंतर, निष्काम और रंगली गायों को संत कुलवंत सिंह और नसीब, निर्जीव, पटना गायों को संत बलबीर सिंह (बटाले के) और निधानी गाय को संत दलजीत सिंह संभालते हैं। मस्तानगढ़ वाली 1 नः गाय, पीर गाय व परसंगी गाय को संत सुखवंत सिंह संभालते हैं।

गायों के दूध और घी के रिकार्ड

गायों की अच्छी सेवा संभाल व देखरेख के परिणास्वरूप ही श्री सत्गुरु जगजीत जी के समय गायों के दूध और घी के नए रिकार्ड स्थापित हुए। कई गायें 'ऑल इंडिया मिल्क कंपीटिशन' में पहले स्थान पर आती रहीं। हरियाणा नसल की 'पुतली' नाम की गाय इन मुकाबलों में लगातार तीन साल 63 पौंड दूध देकर पहले नंबर पर आती रही जिसकी वजह से साल 1964 में श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी को 'गोपाल रतन' पुरस्कार से नवाजा गया। गौ संवर्धन के एक प्रतिनिधि ने 'पुतली' को भारत की दूध की मलिका कहते हुए एक लेख लिखा।

इसी तरह हरियाणा नसल की 'झंगो' नामक गाय 64 पौंड दूध रोजाना देकर और साहीवाल नसल की 'नौलखी' गाय 74 पौंड दूध रोजाना देकर भारत भर में पहले स्थान पर आईं। साहीवाल नसल की 'सुरहा' गाय बिना बछड़े जन्मे भी दूध देती रही। साहीवाल नसल की एक गाय 'नौकरन' चौधरी बंसी लाल के समय में 'ऑल इंडिया कैटल शो' में पहले नंबर पर आई। 'सहेली' नाम की गाय ने भी अपने समय में 21 किलो 700 ग्राम दूध रोजाना दिया। इसके 14 किलो 700 ग्राम दूध में से तीन पाव घी बनता रहा (यह बात स्वयं श्री सत्गुरु जी ने मुझे बताई)।

साल 1965 में हिसार में 'कैटल शो कंपीटिशन' हुआ। श्री सत्गुरु जी की गायों के पुरस्कार इतने हो गए थे कि रखने को जगह नहीं थी। उस समय राजस्व पशु प्रबंधक सूबा वरियाम सिंह थे। उस दौरान पुरस्कार देने आए भारत के प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने कहा - 'सारे पुरस्कार आपके हैं, बार-बार आते हैं, जाते हैं, आप यहीं बैठ जाएं।'

श्री सत्गुरु जी ने गऊ पालन को उत्साहित करने के लिए समय-समय जगह-जगह पशु प्रदर्शनियां लगाईं। सत्गुरु जी द्वारा सर्वप्रथम पशु प्रदर्शनी साल 1960 में श्री जीवन नगर में लगाई गई थी। इसमें नामधारी पंथ की पैदा की और संभाली हुई गायों को पुरस्कार देने के लिए पशु पालन और कृषि

मंत्री चौधरी सूरजमल, श्री जीवन नगर आए थे। पशु प्रदर्शनी के समय विशेषत: भारत सरकार के कृषि और खाद्य मंत्री डा. राम सुभाग सिंह पंजाब के पशु पालन डायरेक्टर स. प्रीतम सिंह बराड़ और हिसार के डिप्टी कमिश्नर स. इकबाल सिंह आदि 'पुतली' गाय को देखने आए थे।

श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी के समय में जिन गऊओं ने दूध और घी के रिकार्ड स्थापित किए और पशु मुकाबलों में पुरस्कार जीते उनका विवरण है –

पहला रिकार्ड

साल 1982 से 85 के दौरान लिखे हुए संत कपूर सिंह के रिकार्ड के अनुसार कुछेक गायों के रोजाना दूध का रिकार्ड इस प्रकार है :–

झंकार	–	18
ऊखा	–	18 किलो 800 ग्राम
किंकणी	–	21 किलो 300 ग्राम
नैयना देवी	–	20 किलो 400 ग्राम
कौल	–	15 किलो

दूसरा रिकार्ड

साल 1991 को श्री सत्गुरु जी के श्री जीवन नगर दौरे के समय मैं और मेरे पति संत भगवंत सिंह आदेश के अनुसार साथ गए। उस दौरे दौरान सत्गुरु हरी सिंह पशु पालक फार्म श्री जीवन नगर की गौशाला में 26 अक्तूबर साल 1991 को हम गए। गौशाला में उस समय मौजूद सरपंच संत करम सिंह (पहले गांव 35 चक्क ज़िला लायलपुर, अब ननकाना, पाकिस्तान) ने मुझे यह रिकार्ड वाले पन्ने गौशाला में रोजाना लिखे जाते रजिस्टर में से फोटो स्टेट करवा कर दे दिए। यह इस किताब में पन्ना 85 से 91 तक लिखे हुए हैं।

तीसरा रिकार्ड

श्री भैणी साहिब की गौशाला का है, जो मुझे उस समय के गौशाला प्रबंधक संत अमर सिंह गरेटा ने 13 अक्तूबर साल 2009 को दिया। यह रिकार्ड इस पुस्तक में आगे पन्ना 92–93 पर लिखा हुआ है।

चौथा रिकार्ड

श्री भैणी साहिब की गौशाला की गऊओं के रोजाना दूध का यह रिकार्ड अगस्त-सितंबर साल 2010 का है -

पटना	-	27 किलो
बाणी	-	25 किलो
नागपुष्पी	-	20 किलो और आधा किलो
नसीब	-	20 किलो और आधा किलो
निष्काम	-	15 किलो पहले सूएपने के दौरान का है, आगे 20 किलो तक की संभावना है।
जगत	-	22 किलो, इसका दूध 27 किलो तक बढ़ने की संभावना है।
गुलाब	-	18-19 किलो
निर्जीव	-	18 किलो
निधानी	-	18 किलो, 22 किलो तक होने की संभावना है।
निरंतर	-	20 किलो, अभी और बढ़ेगी
किरपा	-	18 किलो
पुकार	-	17-18 किलो, अभी और बढ़ेगी

इनमें निधानी और निरंतर हरियाणा नसल की और बाकी सभी साहीवाल नसल की गायें हैं। इन गायों ने दूध दोहने और नसल प्रतियोगिताओं में भी पुरस्कार जीते हैं। अब सन् 2012 में इस गौशाला में पीर, परसंगी आदि और कई नई गऊएँ आईं है जिनका रोजाना दूध 20 से 25 किलो तक है।

पेश है सन् 1991 का रिकार्ड – श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी के समय की गऊएँ जिन्होंने दूध और घी के रिकार्ड स्थापित किए और प्रतियोगिताओं में ईनाम जीते।

[illegible]

ੴ

ਸ੍ਰੀ ਭੈਣੀ ਸਾਹਿਬ ਦੀਆਂ ਗਊਆਂ

ਸਾਹੀਵਾਲ

S.N.	Name of Cow	Highest yield in a lactation — days	Yield	Highest yield in a day
1	ਨਰੰਗੀ	325	2574-00 kg	15-00 kg
2	ਮਾਲਤੀ	297	2770-00	15-00
3	ਮੈਨਾ	318	2667-00	15-00
4	[illegible]	436	3364-800	19-800
5	ਊਸ਼ਾ	298	2811-00	15-100
6	ਸ਼ਕਤਿਰੂਪ	235	3266-500	16-00
7	ਕੋਲ	302	3112-500	17-700
8	ਨਰਗਸੀ	242	2989-00	18-300
9	ਰਾਣੀ	324	2831-200	18-00
10	ਕੁਮਾਰੀ	268	2400-400	15-300
11	ਕਮਲਾ	273	2367-800	18-200
12	ਮਾਲਤੀ	405	3236-800	17-00
13	ਭਗਤੀ	400	3016-900	15-00
14	ਨਰਗਸੀ	320	2537-300	15-00

15	ਵਿਰਾਗੀ	309	4125—00	16—00
16	ਭ੍ਰਿਸਾਮਾ	359	2546—700	15—00
17	ਮਨੂਤਮਾ	527	3259—200	18—800
18	ਨਦੀਦਾਸ	298	2545—300	15—300
19	ਜਗਦੀਧਰੀ	213	2204—800	19—00
20	ਜਾਮਨੀ	270	1993—500	18—300
21	ਮਿਸ਼ਰਾ	320	3582—400	18—200
22	ਤਮੀਜੀ	452	3199—100	16—100
23	ਕਮਖਿਆ	231	3410—200	19—500
24	ਮੰਗਲੀ	412	2513—900	15—400
25	ਕਮਲਾਵਤੀ	464	3309—100	15—800
26	ਅਮਰਾਵਤੀ	270	2378—500	19—800
27	ਸਨੇਹਾ	374	3391—500	17—600
28	ਨੂਰਨੈਣਾ	455	3847—900	17—00

੧੬

ਸ੍ਰੀ ਭੈਣੀ ਸਾਹਿਬ ਵਾਲੀ ...

(ਰਜਿਸਟਰ)

S.N.	Name of Cow	Highest yield in days	Lactation yield	Highest yield in a day
1	ਨਰਦ	235	3281—00 kg	17—500 kg
2	ਪੁਸ਼ਪਾ	276	2581—800 kg	17—100 kg
3	ਕਿਣਕਣੀ	258	3266—500 "	19—400 "
4	ਸ਼ਿੰਗਾਰ	288	3459—800 "	19—300 "
5	ਝਾਂਜਰ	269	2601—201 "	16—00 "
6	ਨੈਣਾਦੇਵੀ	412	4105—300 "	20—400 "
7	ਨਿਰਦੋਸ਼ੀ	248	2470—00 "	18—200 "
8	ਪ੍ਰਕਿਰਤੀ	258	2049—400 "	16—300 "
9	ਰਿਸ਼ਾ	284	2972—100 "	18—800 "
10	ਜਮਨਾ	383	2910—400 "	15—00 "
11	ਅਰਾਧਨਾ	414	2585—500 "	18—900 "
12	ਰਾਗਣੀ	325	2801—400 "	17—100 "
13	ਨਿਮਾਣੀ	242	2307—200 "	19—300 "
14	ਸੁਮਤੀ	155	1680—100 "	17—700 "
15	ਪਦਮਣੀ	621	3994—00 "	17—500 "
16	ਆਰਸ਼ੀ	269	2487—300 "	17—00 "

ੴ

ਸਾਹੀਵਾਲ ਗਾਈਆਂ ਦਾ ਪਰਾਣਾ ਰਿਕਾਰਡ

S.No.	Name	Highest yield in a Lactation — days	Yield	Highest yield in a day
1	ਨੈਨਸੁਖੀ	300	14150 Lbs	74.75 Lbs
2	ਸੁਰਸਤੀ	329	9387.5 Lbs	44.40 Lbs
3	ਨੈਨਚੰਦੀ	283	6243 "	26-325 kg
4	ਗੁਲਯਾਰ	336	2479-100 kg	17-200 "
5	ਰੰਗਪਤੀ	405	3343-900 "	19-00 "
6	ਰਤਨਪ੍ਰਭਾ	233	2681-200 "	19-100 "
7	ਸਹੇਲੀ	288	2965-500 "	21-600 "
8	ਮਾਨਤੀ	291	3345-700 "	19-700 "
9	ਹੁਕਮੀ	306	12068 Lbs	60.0 Lbs
10	ਗੇਂਦੀ	305	9203 Lbs	44.0 Lbs
11	ਗੁਲਤਾਰੀ	445	8344 Lbs	39.5 "
12	ਟੀਟੀ	291	7190 Lbs	34.5 "
13	ਮੀਗਧਾਰੀ	306	8881.5 Lbs	40.0 "
14	ਮੀਨਾ	300	12645 Lbs	49.5 "
15	ਸੁੰਦਰੀ	305	9797.5 Lbs	55.0 "
16	ਹੇਮੀ	318	8847.75 Lbs	39.5 "
17	ਫੁੰਦੀ	302	8643.5 Lbs	41.5 "
18	ਕੈਕਰੋੜੀ	300	11044.25 Lbs	55.0 "

੧੬

ਹਰਿਆਣਾ ਗਾਈਆਂ ਦਾ ਪੁਰਾਣਾ ਰਿਕਾਰਡ

S.N.	Name	Highest Yield in a Lactation: days	Highest Yield in a Lactation: Yield	Highest yield in a day
1	ਤੋਤੀ	300	8000.0 Lbs	36.0 Lbs
2	ਟੋਤੀ	381	9026.0 Lbs	41.5 Lbs
3	ਹਰਨੀ	242	5835.0 Lbs	39.0 Lbs
4	ਪਦਮਣੀ	300	5090.0 Lbs	34.5 Lbs
5	ਚੰਦ੍ਰਭਾ	253	4659.5 Lbs	47.5 Lbs
6	ਪਿਆਰੀ	262	7624.0 Lbs	40.0 Lbs
7	ਚੰਦ੍ਰਮਣੀ	300	7365.0 Lbs	46.0 Lbs
8	ਸੂੰਗੀ	300	7887.0 Lbs	39.0 Lbs
9	ਜਮਨਾ II	300	5804.0 Lbs	40.0 Lbs
10	ਨੀਲੀ	300	6785.0 Lbs	48.0 Lbs
11	ਪੁਤਲੀ	300	10139.5 Lbs	28.594 kg

ੴ

Record
All India milk competition

	Breed	Name of Cow	Average yield in 24 hours	year	
1	Haryana	PUTLI	41.37 LBS	1961	
2	"	"	54.37 LBS	1962	
3	"	"	58.86 LBS	1963	
4	"	"	28.594 Kg	1964	ਗੁਪਾਲ ਰਤਨ ਜਿੱਤਿਆ
5	Sahiwal	NAUCHANDI	25.313 Kg	"	
6	"	MIRAN	25.500 Kg	"	
7	"	NAUKARN	16.875 "	"	
8	Haryana	JHUNGI	14.344 "	"	
9	"	CHANDANI	19.463 "	1965	
10	"	CHANDERKALA	15.300 "	"	
11	Sahiwal	NAUKARAN	22.350 "	"	
12	"	MALKANI	18.750 "	"	
13	"	NAUCHANDI	16.988 "	"	
14	"	MIRAN	16.575 "	"	

15	Hariana	JHUNGO	26.737 "	1966
16	"	MURTI	17.587 "	"
17	"	CHANCHO	16.871 "	"
18	Sahiwal	NAUCHANDI	26.362 "	"
19	"	KISMAT	20.025 "	"
20	"	NAUSHAN GAR	16.871 "	"
21	Hariana	JHUNGO	27.900 "	1967
22	"	CHANDERKALA	16.600 "	"
23	Sahiwal	NAUCHANDI	26.325 "	"
24	"	GAINDAN	19.537 "	"
25	"	SURASTI	18.075 "	"
26	Tharparkar	CHAMAN	17.550 "	"
27	"	GULBAGH	16.500 "	"

ਗਊਸ਼ਾਲਾ ਸ੍ਰੀ ਭੈਣੀ ਸਾਹਿਬ ਦੀਆਂ ਕੁਝ ਗਊਆਂ ਦੇ ਦੁੱਧ ਦਾ ਰਿਕਾਰਡ

13 ਅਕਤੂਬਰ ੨੦੦੯

ਸਾਹੀਵਾਲ ਗਊਆਂ / ਗਊ ਦਾ ਨਾਮ	ਕਿੰਨਾ ਦੁੱਧ ਦੇ ਚੁੱਕੀ ਦਿਨ ਕਿਲੋ-ਗਰਾਮ	ਇਕ ਦਿਨ ਦਾ ਦੁੱਧ ਕਿਲੋ-ਗਰਾਮ
੧ ਗੁਰਬਾਣੀ	301/3028-600	16-00
੨ ਕਲਿਕਰਕੀ	264/2356-300	15-600
੩ ਮੂਰਤੀ	306/2809-00	16-800
੪ ਗੁਣਵੰਤੀ	322/2671-600	15-600
੫ ਸੁਖਦੇਈ	248/2233-200	15-00
੬ ਰਚਨਾ	308/2544-900	15-800
੭ ਤਕੀਸ	302/2805-300	16-700
੮ ਦੇਸਣੀ	305/3861-500	18-100
੯ ਸੁਖਵਾਣੀ	304/3554-400	18-500
੧੦ ਆਸਾ	280/2267-600	16-300
੧੧ ਪਰਬਤ	313/2952-900	18-300
੧੨ ਅਨਸਾ ਦੇਵੀ	308/2961-500	16-300
੧੩ ਗੁਲਸ਼ਨ	305/3027-700	16-700
੧੪ ਜਗਦੀਸ਼	306/3875-600	17-00
੧੫ ਸੁਰਖੀ	305/2666-500	15-100
੧੬ ਗੁਲਾਬ	305/3399-600	17-00
੧੭ ਪਟਨਾ	305/4382-800	25-00
੧੮ ਸੀਤਲਾ	304/3041-00	20-300
੧੯ ਕੁਰਬਾਨੀ	305/3676-200	18-600
੨੦ ਨੀਲੀ	305/3238-700	16-00
੨੧ ਨਿਰਾਲੀ	305/4063-100	20-100
੨੨ ਸਯਾਣੀ	305/3775-600	17-200
੨੩ ਨਸੀਬ	305/3840-200	18-500
੨੪ ਰਚਨਾਰ	305/3989-600	20-500
੨੫ ਰਸ ਤੂਰਕਾ	305/3005-00	18-300
੨੬ ਸੁਤਰਦਾ	305/3193-500	15-700
੨੭ ਕਾਮਨੀ	306/4022-900	19-00
੨੮ ਆਰਤੀ	305/2961-500	17-100
੨੯ ਸਿਆਣੀ	306/3575-400	17-300
੩੦ ਅੰਮ੍ਰਿਤੀ	306/2466-200	12-500
੩੧ ਦਲੀਪੀ ਆਸਾ	309/2769-100	14-300
੩੨ ਕੰਚਨ	305/2938-400	15-700

13-10-2009

ਗਊ ਦਾ ਨਾਮ	ਕਿੰਨਾ ਦੁੱਧ ਦੇ ਚੁਕੀ	ਇਕ ਦਿਨ ਦਾ ਸੱਭ ਤੋਂ ਵੱਧ ਦੁੱਧ	
	ਦਿਨ ਕਿੱਲੋ ਗ੍ਰਾਮ	ਕਿੱਲੋ ਗ੍ਰਾਮ	
ਸਰੂਪ	305/4324-200	20-400	
ਸੰਸਾਰ	307/3732-900	15-500	
ਨਿਰਮਲੀ	306/2514-100	15-00	
ਮਿਸ਼ਰੀ	305/4074-900	18-800	
ਸਰਧਾ	305/3131-900	15-900	
ਭਾਗਵੰਤੀ	305/3702-100	18-200	
ਰਤਨੀ	305/3145-300	14-200	
ਮਾੜੋ	305/2732-900	15-00	
ਮੀਨਾ	305/2951-300	13-500	
ਸੰਧੂਰੀ	305/3110-400	14-700	
ਸੁਨੀਤਾ	305/2918-00	15-00	
ਕਿਸ਼ਤੀ	306/2405-100	14-800	
ਮਸਕਾ	305/2442-600	14-00	
ਅੰਜਣੀ	305/3147-100	14-700	
ਪਿਆਰੀ	307/4799-900	20-100	ਹਰਿਆਣਾ ਨਸਲ
ਪਰਨਾਮ	305/4308-700	17-600	
ਨਿਰੰਤਰ	300/4048-400	19 300	
ਵਿਸਮਤ	305/3585-700	16-300	
ਨੂਰੀ	262/2471-900	17-400	
ਨਿੰਮ੍ਰਾਨੀ	302/2564-400	17-400	
ਨਿਯਾਨੀ	301/3231-300	18-200	
ਪੂਤਨਾ	294/2545-300	16-100	
ਨੀਰ	307/3442-600	16-300	
ਬਹਾਦਰੀ	307/2887-500	16-400	
ਰੂਪ	306/2371-100	11-00	

13-10-2009

प्रतियोगिताओं में जीते गए पुरस्कारों का विवरण

श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी की गौशालाओं की गायें और कई पशु धन प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेकर पुरस्कार जीतते रहते हैं। इनमें कुछेक का ज़िक्र 'गायों के दूध और घी के रिकार्ड' अध्याय में किया गया है।

ऐसे समय में साल 2009, 2010 और 2011 में पंजाब सरकार के पशु पालन विभाग द्वारा आयोजित किए गए पशु मेलों में हुईं प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले श्री भैणी साहिब की गौशालाओं की गायें, बछियाएं और सांडों ने बहुत अच्छी उपलब्धियां हासिल कीं।

श्री सत्गुरु जी के आर्शीवाद और मंजूरी के अनुसार इनको सूबा जगीर सिंह छापियां वाली (मुक्तसर) की सुयोग्य नेतृत्व में गौशाला के प्रबंधकों संत दलजीत सिंह, संत अमर सिंह गरेटा और संत बलदेव सिंह आदि द्वारा पंजाब राज्य पशु धन चैंपियंस - 2009 मुक्तसर, पंजाब पशु धन चैंपियंस - 2009 (पूर्वी जोन स्तरीय मुकाबला) पशु मंडी चड़िक ज़िला मोगा और उत्तरी भारत पशु धन चैंपियंस-2010 और साल 2011 में मुक्तसर में ले जाया गया था।

यहां आकर प्रबंधक वर्ग ने श्री भैणी साहिब में यह सारे मान-सम्मान श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी के चरणों में भेंट कर खुशियां हासिल कीं और आगे भी इसी तरह की गौरवमयी कामयाबी हासिल करने की कृपा रखने की विनती करने की श्री सत्गुरु जी के समक्ष मांग की। प्राप्त पुरस्कारों का विवरण पेश है -

पंजाब राज्य पशु धन चैंपियनशिप - 2009
गुरु गोबिंद सिंह स्टेडियम सरकारी कालेज मुक्तसर में
8 से 12 जनवरी साल 2009

पंजाब के चार अलग-अलग स्थानों पर मुकाबले करवा कर सैंकड़ों

पशुओं के फाइनल मुकाबले इस मेले पर करवाए गए। इस पशु मेले में स्टेडियम में नामधारी गौशाला श्री भैणी साहिब की गायों और अन्य पशु धन विशेष आकर्षण का केंद्र थे। इनके द्वारा अलग-अलग प्रतियोगिताओं में 2 लाख 89 हज़ार के 14 पुरस्कार जीते गए।

दूध दोहने वाली गायों की प्रतियोगिता

पहले पांच पुरस्कार श्री भैणी साहिब की गायों को हासिल हुए

पहला इनाम	- नसीब गाय को	51000 रुपए
दूसरा इनाम	- सुखदायी गाय को	31000 रुपए
तीसरा इनाम	- रहिमत गाय को	21000 रुपए
चौथा इनाम	- काशनी गाय को	12000 रुपए
पांचवा इनाम	- सरुप गाय को	10000 रुपए

पहले नंबर का पुरस्कार जीतने वाली गाय नसीब साढ़े 18 किलो दूध देकर पहले स्थान पर रही। वैसे रोजाना यह करीब 22-23 किलो दूध देती है।

नसल वाली साहीवाल गायों की प्रतियोगिता

चौथा इनाम	- निर्जीव गाय को	10000 रुपए
छठा इनाम	- नसीब गाय को	5000 रुपए
सातवां इनाम	- रहिमत गाय को	5000 रुपए

साहीवाल बछिया की प्रतियोगिता

पहला इनाम	- सुरीली बछिया को	31000 रुपए
तीसरा इनाम	- निष्काम बछिया को	11000 रुपए
चौथा इनाम	- करमी बछिया को	10000 रुपए

साहीवाल सांड प्रतियोगिता

पहला इनाम – मस्तानगढ़ वाले समुंदर सांड को 51000 रुपए

दूसरा इनाम – तारा सांड को 31000 रुपए

आठवां इनाम– मरहा नसल के सांड को 10000 रुपए

इस फाइनल मुकाबले में विजेता पशुओं को पुरस्कार वितरित शिरोमणि अकाली दल के प्रधान स. सुखबीर सिंह बादल द्वारा की गई जिसमें पंजाब के कृषि और पशु पालन मंत्री स. गुलजार सिंह रणीके और बहुत सारी नामी गिरामी शख्सियतें और विभागों के सरकारी अधिकारी शामिल थे। हजारों की संख्या में पशु प्रेमी और पशु पालक इस स्टेडियम में मौजूद थे।

पंजाब पशु धन चैंपियनशिप – 2009
पूर्वी ज़ोन स्तरीय मुकाबला
पशु मंडी गांव चड़िक (ज़िला मोगा)
26-27-28 दिसंबर 2009 को

इस पूर्वी ज़ोन स्तरीय मुकाबले में श्री भैणी साहिब की गायों और पशु धन द्वारा 54 हज़ार के 12 इनाम जीते गए।

दूध दोहने का मुकाबला – साहीवाल

पहला इनाम – नागपुष्मी गाय को – 10000 रुपए

दूसरा इनाम – निष्काम गाय को – 8000 रुपए

चौथा इनाम – नाथां वाली एक नंबर गाय को– 3000 रुपए

पांचवा इनाम – अरदास गाय को – 2000 रुपए

इस प्रतियोगिता के पांच में से चार इनाम जीत लिए गए।

साहीवाल नसल वाली गायों की प्रतियोगिता

पहला इनाम – रहिमत गाय को	10000 रुपए
दूसरा इनाम – सुरीली गाय को	5000 रुपए
चौथा इनाम – मंडल गाय को	2000 रुपए
पांचवा इनाम – निष्काम गाय को	2000 रुपए

इस प्रतियोगिता के पांच में से चार इनाम जीत लिए गए।

साहीवाल सांड की प्रतियोगिता

पहला इनाम – मस्तानगढ़ वाले संमुदर सांड को	5000 रुपए
तीसरा इनाम – युग सांड को	1000 रुपए

साहीवाल बछिया की प्रतियोगिता

पहला इनाम – 4708 नंबर (माला गाय की बछड़ी) को 5000 रुपए

तीसरा इनाम – 4742 नंबर (गुरबाणी गाय की बछड़ी) को 1000 रुपए

उत्तरी भारत पशु धन चैंपियनशिप – 2010
गुरु गोबिंद सिंह स्टेडियम सरकारी कालेज मुक्तसर
8 से 12 जनवरी साल 2010

इसमें उत्तरी भारत के पशुओं के अलग-अलग वर्गों के मुकाबले करवाए गए। करीब सारी प्रतियोगिताओं में पहला स्थान प्राप्त करके श्री भैणी साहिब की गायों, बछियाओं और सांडों ने उत्तरी भारत में चैंपियन होने का गौरव हासिल किया। इन्होंने कुल 23 इनाम जीते। 3 लाख 76 हज़ार की राशि के 20 पुरस्कार नकद राशि के रूप में मिलने के अलावा सम्मान चिन्ह और प्रमाण पत्र हासिल हुए। तीन हौसला बढ़ाओ पुरस्कार के रूप में तीन प्रमाण पत्र मिले। इन सारे इनामों का विवरण इस प्रकार है-

दूध दोहने वाली साहीवाल गायों की प्रतियोगिता

पहला इनाम – नागपुष्पी गाय को	51000 रुपए + 21000 रुपए

तीसरा इनाम – किरपा गाय को 15000 रुपए

आठवां इनाम – निष्काम गाय को 5000 रुपए

नौंवा इनाम – नाथां वाली 1 नंबर गाय को 5000 रुपए

ग्यारहवां इनाम – नाथां वाली 2 नंबर गाय को हौसला बढ़ाऊ इनाम

बारहवां इनाम – गुरमुखी गाय को हौसला बढ़ाऊ इनाम

तेरहवां इनाम – अरदास गाय को हौसला बढ़ाऊ इनाम

नागपुष्पी गाय को उत्तरी भारत चैंपियनशिप में दूध दोहन में चैंपियन चुना गया जिसका 21000 रुपए का इनाम भी मिला।

ग्यारहवां, बारहवां, तेरहवां यह तीन हौसला बढ़ाऊ इनाम, प्रमाण पत्र के रूप में श्री भैणी साहिब की गायों को मिले।

दूध दोहने वाली हरियाणा गायों की प्रतियोगिता

पहला इनाम – निधानी गाय को 21000 रुपए

इस मुकाबले में अन्य कोई गाय नहीं आई।

नसल वाली साहीवाल गायों की प्रतियोगिता

पहला इनाम – नाथां वाली 1 नंबर गाय को 51000 रुपए +21000 रुपए

छठा इनाम – निष्काम गाय को 7000 रुपए

सातवां इनाम – मंडल गाय को 5000 रुपए

दसवां इनाम – सुरीली गाय को 5000 रुपए

नाथां वाली गाय नंबर 1 को, समूह उत्तरी भारत चैंपियनशिप के नसल मुकाबले में चैंपियन बनाया गया जिसका इनाम 21000 रुपए भी मिला। यह गाय साढ़े उंतालीस हज़ार रुपए की संत करतार सिंह नाथ गांव संतनगर

ज़िला सरसा से खरीदी गई थी। यह गाय मुक्तसर और चड़िक की प्रतियोगिताओं में 92 हज़ार के पुरस्कार जीत कर लाई।

साहीवाल सांड प्रतियोगिता

पहला इनाम – मस्तानगढ़ वाले समुंदर सांड को – 51000 रुपए और 21000 रुपए

दूसरा इनाम – सरपंच वाले सांड को – 31000 रुपए

तीसरा इनाम – युग सांड को – 21000 रुपए

इस प्रतियोगिता के पांच में से तीन पुरस्कार जीत लिए गए।

मस्तानगढ़ वाले समुंदर सांड को समूह उत्तरी भारत चैंपियनशिप मुकाबले में चैंपियन बनाया गया जिसका इनाम 21000 रुपए भी मिला।

झोटियों की प्रतियोगिता

13वां इनाम – माली नामक मुरहा नसल के झोटे को मिला–5000 रुपए

साहीवाल बछियाओं की प्रतियोगिता

पहला इनाम – 4708 नंबर (माला गया की) बछिया को 31000 रुपए

चौथा इनाम – 4664 नंबर (परबत गाय की) बछिया को 5000 रुपए

नौंवा इनाम – 4742 नंबर (गुरबाणी गाय की) बछिया को 2000 रुपए

दसवां इनाम – 4687 नंबर (सुरखी गाय की) बछिया को 2000 रुपए

सारे समागम की अध्यक्षता मुख्यमंत्री पंजाब स. प्रकाश सिंह बादल ने की। विजेताओं को पुरस्कार वितरण के लिए पंजाब के उपमुख्यमंत्री स. सुखबीर सिंह बादल विशेष तौर पर समारोह में पहुंचे। पशुपालन मंत्री स. गुलजार सिंह रणीके भी मौजूद थे।

ज़िला स्तरीय पशु धन और दूध दोहन मुकाबले 2010 गांव राड़्यां, नज़दीक श्री भैणी साहिब ज़िला लुधियाना 9-10 दिसंबर साल 2010

साहीवाल गायों का दूध दोहन मुकाबला

गाय का नाम	इनाम राशि के रुपए
1. जगत	3000
2. गुलाब	2000
3. पटना	1000
4. गीत	500
5. मंडल	500

पांचों इनाम श्री भैणी साहिब की गायों के थे।

नसल मुकाबले

1. जगत	3000
2. निर्जीव	2000
3. बाणी	500

साहीवाल सांडों के मुकाबले

1. युग	5000
2. सरपंच	3000
3. भोलू	2000
4. 4734 नंबर बछड़ा	500
5. 4804 नंबर बछड़ा	500

पहले पांच इनाम श्री भैणी साहिब के सांडों ने जीते। कुल 23 हज़ार 550 रुपए के इनाम जीते गए। सर्टिफीकेट भी मिले। लंगर श्री भैणी साहिब द्वारा बांटा गया।

पशु पालन विभाग पंजाब द्वारा क्षेत्रीय पशु धन चैंपियनशिप और दूध दोहन मुकाबले 2010, चड़िक - झंडेवाला (ज़िला मोगा)
29-30 नवंबर व साल 1 दिसंबर 2010

दूध दोहन वाले साहीवाल गायों की प्रतियोगिता

पहला इनाम - रंगली गाय को	10000 रुपए
दूसरा इनाम - जगत गाय को	8000 रुपए
तीसरा इनाम - मस्तानगढ़ वाली गाय को	5000 रुपए
चौथा इनाम - पटना गाय को	3000 रुपए
पांचवा इनाम - गुलाब गाय को	2000 रुपए

नसल वाली साहीवाल गायों की प्रतियोगिता

पहला इनाम - मंडल गाय को	10000 रुपए
दूसरा इनाम - सुरीली गाय को	5000 रुपए
चौथा इनाम - मस्तानगढ़ वाली गाय को	हौसला बढ़ाऊ इनाम
पांचवा इनाम - बाणी गाय को	हौसला बढ़ाऊ इनाम

साहीवाल बछियाओं की प्रतियोगिता

दूसरा इनाम - 4752 नंबर बछिया को	2000 रुपए
तीसरा इनाम - 4818 नंबर बछिया को	1000 रुपए

साहीवाल सांड प्रतियोगिता

दूसरा इनाम - सरपंच बछिया को	5000 रुपए

कुल 53000 रुपए के इनाम और 2 हौसला बढ़ाऊ इनाम मिले।

उत्तरी भारत पशु धन चैंपियनशिप - 2011

गुरु गोबिंद सिंह स्टेडियम सरकारी कालेज मुक्तसर (8 से 12 जनवरी साल 2011)

इसमें उत्तरी भारत के पशुओं के अलग – अलग वर्गों के मुकाबले करवाए गए। करीब सारी प्रतियोगिताओं में 3 लाख 58 हज़ार की राशि के पुरस्कार नकद राशि के रूप में मिलने के अलावा सम्मान चिन्ह और प्रमाण पत्र प्राप्त हुए। इन सभी पुरस्कारों का विवरण इस प्रकार है –

दूध दोहने वाली साहीवाल गायों की प्रतियोगिता

तीसरा इनाम – सरुप गाय को – 21000 रुपए

पांचवा इनाम – मस्तानगढ़ वाली गाय को – 8000 रुपए

आठवां इनाम – नागपुष्पी गाय को – 5000 रुपए

ग्यारहवां इनाम – रंगीली गाय को – 3000 रुपए

तेरहवां इनाम – निष्काम गाय को – 2000 रुपए

नागपुष्पी गाय को पहला इनाम मिलना था पर इसके थन पर चोट लगने के कारण यह आठवें नंबर पर आई। पिछले साल यह गाय चैंपियन रही। सरुप गाय 25 किलो 450 ग्राम दूध देकर तीसरे नंबर पर आई।

नसल वाली साहीवाल गाय की प्रतियोगिता

पइला इनाम – नाथां वाली 2 नंबर गाय को 51000 रुपए

दूसरा इनाम – बाणी गाय को 31000 रुपए

तीसरा इनाम – जगत गाय को 21000 रुपए

चौथा इनाम – मंडल गाय को 15000 रुपए

पांचवा इनाम – नागपुष्पी गाय को 11000 रुपए

छठा इनाम – निष्काम गाय को 10000 रुपए

सातवां इनाम – सुरीली गाय को 10000 रुपए

बारहवां इनाम – संगीत गाय को हौसला बढ़ाऊ इनाम

बाणी गाय को समूह उत्तरी भारत चैंपियनशिप मुकाबले में चैंपियन बनाया गया जिसका इनाम 31000 रुपए मिला।

साहीवाल सांड प्रतियोगिता

दूसरा इनाम – मस्तानगढ़ वाले समुंदर सांड को	31000 रुपए
तीसरा इनाम – सरपंच वाले सांड को	21000 रुपए
चौथा इनाम – युग सांड को	11000 रुपए

साहीवाल बछिया की प्रतियोगिता

चौथा इनाम – 4762 नंबर बछिया को	11000 रुपए
आठवां इनाम – 4818 नंबर बछिया को	5000 रुपए
नौंवा इनाम – 4816 नंबर बछिया को	5000 रुपए

मस्तानगढ़ वाली गौशाला में से संत बलविंदर सिंह सुपुत्र संत निर्मल सिंह हरियाणा नसल की गायों और गौ वंश को लेकर आए जिनके द्वारा दूसरे राज्यों के मुकाबलों में जीते गए पुरस्कारों का विवरण इस प्रकार है –

तीसरा इनाम – निरंतर गाय को दूध दुहाई प्रतियोगिता में 10000 रुपए

चौथा इनाम – 4712 नंबर मस्तानगढ़ की गाय को नसल प्रतियोगिताओं में 10000 रुपए

पांचवा इनाम – सांड प्रतियोगिता में 10000 रुपए

तीसरा इनाम – 4822 नंबर बछिया को बछिया प्रतियोगिता में 8000 रुपए

विजेताओं को पुरस्कार बांटने के लिए पंजाब के उपमुख्यमंत्री स. सुखबीर सिंह बादल विशेष तौर पर समारोह में पहुंचे। पशु पालन मंत्री स. गुलजार सिंह रणीके भी उपस्थित थे।

सूबा जगीर सिंह ने बताया कि अगली प्रतियोगिताओं के लिए और भी बढ़चढ़ कर हिस्सा लेने के लिए हम तैयारियां कर रहे हैं। प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने वाली गायों, बछियाओं और अन्य गाय धन का अलग तरह और विशेष ध्यान रखा जा रहा है।

इस समय में एक लाख साढ़े तेरह हज़ार की साहीवाल नसल की एक गाय गांव बाहीया ज़िला सरसा हरियाणा से लाई गई हैं। इसको बहीया वाली

गाय कहते हैं। इसका करीब 25 किलो दूध रोजाना है। बाणी गाय भी रोजाना 25 किलो से ऊपर दूध देती है।

सूबा जगीर सिंह बताते हैं कि एक अन्य नई गाय ने अभी बछिया को जन्मा है जिससे 25 किलो तक के दूध देने की उम्मीद है।

गायों की चारे की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। गायों को बरसीम, जवी, जवार, मक्की इत्यादि पदार्थ खिलाए जाते हैं। देसी खाद वाले बिना किसी स्प्रै का चारा ही गायों को खाने के लिए दिया जाता है।

निजी गऊशालाओं की प्राप्तियां

श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी की प्रेरणा के फलस्वरूप बहुत सारे नामधारी परिवार गाय पालन का शौक रखते हैं और इनकी अपनी गऊशालाएं हैं। यह निजी तौर पर अपनी गायों, बछियों, सांडों इत्यादि को पंजाब व हरियाणा में हुए पशु मुकाबलों में ले जाते हैं जैसे कि -

गांव संत नगर ज़िला सरसा में संत प्यारा सिंह जी नाथ का परिवार पशु पालन का शौक रखता है। (नाथ जी श्री भैणी साहिब के लंगर में हट्टी के इंचार्ज हुआ करते थे। इस परिवार की साहीवाल नसल की गायें, बैल और सांडों ने भी पंजाब व हरियाणा के पशु धन मुकाबलों में इनाम जीतकर मान-सम्मान हासल किया। इसके अलावा इस परिवार ने मुहरा नसल की भैंसें और एच. एफ. गायों को भी रखा है। इन पशुओं की देखरेख का कार्य इस समय संत प्यारा सिंह जी के तीन पोते गुरमुख सिंह, गुरभजन सिंह और गुरसेवक सिंह सुपुत्र संत करतार सिंह नाथ करते हैं।

संत गुरभजन सिंह नाथ जोकि पेशे से वकील हैं, ने मुझे 28 फरवरी 2010 को श्री भैणी साहिब में होले के मेले में बताया कि हमारी नौलखी नाम की गाय ने 40 दिन की उम्र से लेकर आज सवा तीन साल की उम्र तक बहुत सारे इनाम जीते। इसकी मां नकौड़े वाली गाय और इसकी बेटी नूरी ने भी इनाम जीते जिनका विवरण इस तरह हैं -

नाथ डेयरी फार्म संतनगर द्वारा प्रतियोगिताओं में जीते गए पुरस्कारों के विवरण

नौलखी बछिया ने 40 दिन की उम्र में गांव भड़ोलिया वाली – ज़िला सरसा में छोटी बछियाओं के मुकाबले में 27 फरवरी 2007 को पहला स्थान हासिल कर एक हज़ार रुपए का नकद पुरस्कार जीता।

फिर इस नौलखी बछिया ने फरवरी साल 2008 में स. ऊधम सिंह यादगारी पशु मेले गांव – दमदमा ज़िला सरसा में बछियों के मुकाबले में पहला स्थान हासिल कर 3000 रुपए का पुरस्कार जीता।

फिर इस नौलखी गाय ने मार्च 2009 को दमदमा में स. ऊधम सिंह यादगारी मेले में वेहड़ा के मुकाबले में दूसरा स्थान हासिल किया और 2000 रुपए का नकद पुरस्कार जीता।

15-16 मार्च साल 2009 को हरियाणा सरकार ने पूरे लुधियाना के मुकाबले कराए। इसमें वेहड़ा के मुकाबले में नौलखी वछिया ने पूरे हरियाणा में पहला स्थान हासिल किया।

8-12 जनवरी 2010 को उत्तरी भारत पशु धन चैंपियनशिप मुक्तसर में इस नौलखी गाय ने पंजाब के बिना पूरे उत्तरी भारत के मुकाबले में से पांचवा स्थान हासिल करके 7000 रुपए का नकद पुरस्कार हासिल किया।

साल 2011 में इस नौलखी गाय ने कुल 90000 रुपए के इनाम एक ट्राफी और मोमेंटो जीते, जिनका विवरण इस प्रकार है –

मुक्तसर में हुए उत्तरी भारत पशु धन चैंपियनशिप साल 2011 में यह नौलखी गाय चैंपियन चुनी गई जिस कारण 51000 रुपए पुरस्कार के साथ एक ट्राफी भी मिली। दूध दुहाई मुकाबले में इसने 8000 रुपए का इनाम जीता और दूसरे राज्यों के मुकाबले में पहले नंबर पर आकर 31000 रुपए का पुरस्कार जीता व एक मोमेंटो हासिल किया।

इस नौलखी गाय की मां नकौड़े वाली गाय ने आठ से 12 जनवरी

2010 को उत्तरी भारत पशु धन चैंपियनशिप मुक्तसर में पंजाब के बिना पूरे उत्तरी भारत के राज्यों के मुकाबले में दूसरा स्थान हासिल कर 21000 रुपए का नकद पुरस्कार जीता। साल 2011 को हुए मुकाबले में इसने जर्सी नसल में से दूध दोहन मुकाबले में चौथा स्थान पाकर 8000 रुपए का पुरस्कार जीता।

17 फरवरी 2010 को हरियाणा सरकार द्वारा गांव अमृतसर कलां ज़िला सिरसा में छोटी बछियाओं का मुकाबला करवाया गया। इसमें नौलखी गाय की बछिया नूरी ने पहला स्थाल हासिल कर 1000 रुपए का नकद पुरस्कार पाया। साल 2011 में इसने दूसरे राज्यों के मुकाबले में पहला स्थान हासिल कर 21000 हज़ार रुपए का पुरस्कार जीता।

नाथ गऊशाला के साहीवाल सांड मनी ने 8-12 जनवरी 2010 को मुक्तसर में हुए उत्तरी भारत पशु धन चैंपियनशिप में पंजाब के बिना उत्तरी भारत के सारे राज्यों के मुकाबलों में से पहला स्थान हासिल कर 31000 रुपए का नकद पुरस्कार हासिल किया।

इसी मनी सांड ने मार्च 2009 को स. ऊधम सिंह यादगारी पशु मेला गांव दमदमा ज़िला सरसा में दूसरा स्थान हासिल कर 2000 रुपए का पुरस्कार जीता।

फिर इस मनी सांड ने साल 2010 को स. ऊधम सिंह यादगारी पशु मेला गांव दमदमा ज़िला सरसा में पहला स्थान हासिल कर 3000 रुपए का पुरस्कार जीता। इस मनी सांड ने 2011 में दूसरे राज्यों के मुकाबलों में पहले नंबर पर आकर 51000 रुपए और एक ट्राफी पाकर जीत दर्ज करवाई। मुक्तसर में हुए उत्तरी भारत चैंपियनशिप साल 2011 के मुकाबलों में पहले नंबर पर आकर 31000 रुपए का पुरस्कार और एक ट्राफी जीती। वैसे ही साल 2011 में इसने अब तक 82000 रुपए के पुरस्कार जीते हैं।

नाथ गऊशाला की मुहरा नसल की भैंस ने हरियाणा सरकार द्वारा गांव संतनगर ज़िला सरसा में दिसंबर साल 2010 को करवाए गए दूध दुहाई मुकाबले में 20 लीटर 700 ग्राम दूध देकर 15000 रुपए का पुरस्कार जीता। मुक्तसर में हुए उत्तरी भारत पशु धन चैंपियनशिप साल 2011 को हुए मुकाबलों में दूध दुहाई मुकाबले में इसने चौथे नंबर पर आकर 10000 रुपए

का पुरस्कार जीता। साल 2011 में हुए मुकाबले में अजमेर वाली एच.एफ. गाय ने नसली मुकाबलों में चौथे नंबर पर आकर 10000 रुपए का पुरस्कार जीता।

मुक्तसर और चड़िक में हुई प्रतियोगिताओं में पुरस्कार लेने वाली श्री भैणी साहिब की गौशालाओं की गायों में नाथ वाली गाय नंबर 1 और नंबर 2 का ज़िक्र आता है। वह नाथ डेयरी फार्म संतनगर से खरीदकर लाई गई गायें हैं।

श्री सत्गुरु जी का आर्शीवाद और विश्व मंगल गऊ ग्राम यात्रा

(आरंभ 30 सितंबर साल 2009 – दशहरा समाप्ति)

17 जनवरी साल 2010 (मकर संगराद को)

श्री सत्गुरु राम सिंह जी और श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी की विचारधारा के मुख्य उद्देश्य के अनुसार विश्व मंगल गऊ ग्राम यात्रा का उद्देश्य गायों के प्रति समाज में सेवा भाव जागृत करके उनको फिर सम्मानजनक स्थान हासिल करवाना था। यह सोच भी काम कर रही थी कि गायों के महत्त्व और गुणों संबंधी समाज को जानकारी देने से सेवा भाव पैदा होगा और गायों को सुरक्षा मिलेगी। इस यात्रा के दौरान भारत की विरासत, गांवों की संस्कृति और गायों के प्रति सम्मान और सेवा भावों को लोगों के बीच जागृत किया गया।

गऊ रक्षा आंदोलन के रूप में विश्व मंगल गऊ ग्राम यात्रा 30 सितंबर 2009 को कुरुक्षेत्र से शुरू हुई। करीब 108 दिनों की 20000 किलोमीटर की यह भारत यात्रा विश्व भर की खुशहाली और सुखशांति के लिए हुई। इस ऐतिहासिक यात्रा का समापन समारोह 17 जनवरी साल 2010 को नागपुर में हुआ।

भारत के साधु संतो, हर धर्म और हर वर्ग के लोगों ने इस यात्रा में सहयोग दिया। जब इस यात्रा के प्रवर्तक के तौर पर आशीर्वाद देने के लिए विश्व हिंदू परिषद् के अंतरराष्ट्रीय पदाधिकारी श्री दिनेश चंदर जी और पंजाब प्रांत के मुख्य प्रतिनिधि आदि द्वारा श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी को निवेदन किया गया तो हजूर साहिब ने इसको मंजूरी दी। विश्व शांति, विश्व कल्याण, गऊ-गरीब की रक्षा और अनेक नेक काम करने वाली संस्थाओं और व्यक्तियों को श्री सत्गुरु जी का आशीर्वाद हमेशा रहता है।

हजूरी सेवक रछपाल सिंह ने सूबा सरबजीत सिंह (ग्वालियर) को

मुख्य प्रबंधक बनाकर यात्रा की जिम्मेवारी सौंपी और श्री भैणी साहिब से एक बहुत बढ़िया सजाए गए रथ को श्री सत्गुरु जी का आशीर्वाद लेकर रवाना किया गया। संत गुरसेव सिंह चत्र (मंडी) की गाड़ी रथ के तौर पर सेवा में रही।

कर्नाटक गोकरनपीठ के पीठाध्यक्ष जगदगुरु शंकराचार्य स्वामी राघवेश्वर भारती जी के सुयोग्य नेतृत्व में विजयदशमी के दिन विश्व मंगल गऊ ग्राम यात्रा शुरू हुई। इस यात्रा को देश के महापुरुषों संतो और पूजनीय गुरुओं - श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी, श्री श्री रविशंकर जी, योगगुरु स्वामी राम देव जी, श्री माता अमृतानंदमयी जी, स्वामी दयानंद जी, स्वामी विद्यासागर जी, दिगंबर जैनाचार्य मुनि श्री विजय रतनसुंदर जी, जैनाचार्य मुनि महाप्रज्ञिया जी, श्री मुरारी बापू जी, साधवी रितांभरी जी, डा. प्रणव पांडे जी और डा. एच. आर. नागेंद्र इत्यादि का साथ और सहयोग प्राप्त हुआ।

यात्रा शुरू करने से पहले 29 सितंबर 2009 को दशहरे वाले दिन एक बहुत बड़े समारोह का आयोजन किया गया जिसमें सारे धर्मों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। नामधारी संगत भी पहुंची। श्री सत्गुरु जी के प्रतिनिधि के तौर पर हजूरी सेवक हरपाल सिंह ने श्री सत्गुरु जी द्वारा आशीर्वाद और संदेश के तौर पर विचार पेश किए।

सेवक हरपाल सिंह द्वारा लिखी पुस्तिका 'गऊअन के रखवाले' (हिन्दी और पंजाबी) भी यात्रा के दौरान लोगों में बांटी गई। इस पुस्तिका का हिंदी अनुवाद सूबा सरबजीत सिंह (ग्वालियर वाले) ने किया। जहां-जहां यात्रा पहुंचती थी, कूका आंदोलन से संबंधित ऐतिहासिक चित्रों की प्रदर्शनी वहां लगाई जाती थी।

जब 30 सितंबर साल 2009 को सुबह से यह यात्रा देश के हर राज्य के मुख्य शहरों में जाने के लिए चली तो इसके आगे एक बहुत भव्य रथ चला जिसके आगे लिखा था - 'विश्व मंगल गऊ ग्राम यात्रा' उसके पीछे गाय की विशालकाय मूर्ती और साथ में दूध पीते बछड़े का चित्र लगा था।

गांवों और कस्बों में आकर कई उप-यात्राएं इस मुख्य यात्रा में आकर शामिल हुईं।

नामधारी पंथ द्वारा एक सुंदर रथ इस यात्रा के दौरान साथ रहा। इसमें

श्री सत्गुरु राम सिंह का एक बड़े आकारनुमा चित्र, गायों की रक्षा के लिए अमृतसर साके के फांसी से और मलेरकोटला साके के तोपों से उड़ाए गए नामधारी शहीदों के चित्र थे। श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी के गायों के साथ खींचे चित्र और श्री भैणी साहिब, श्री जीवन नगर, मस्तानगढ़, हिम्मतपुरा और बंग्लौर इत्यादि जगहों में स्थापित गौशालाओं की, गायों की सेवा और संभाल से संबंधित पुरस्कारों के चित्र लगाए गए थे। जगह-जगह पर इस रथ को लोगों ने रुचि से देखा और प्रभावित हुए।

इस यात्रा के दौरान आम जनता को श्री सत्गुरु राम सिंह जी, कूका आंदोलन के बारे और नामधारी सिखों द्वारा गाय रक्षा और देश की आज़ादी के लिए दी गईं कुर्बानियों के बारे जानकारी प्राप्त करने का अवसर मिला।

भारत के राज्यों हरियाणा, पंजाब, जम्मू, राजस्थान, चंडीगढ़, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, मध्यप्रदेश और यू.पी. इत्यादि हरेक स्थानों - जिन शहरों से भी यात्रा गुजरती नामधारी पंथ के प्रतिनिधि, राज्य अधिकारी, संगत, प्रधान व साधु-संत वहां पहुंचते रहे। यात्रा में शामिल सभी जन को कई स्थानों में नामधारियों द्वारा जलपान और प्रसाद भी बांटा जाता रहा।

सूबा सरबजीत सिंह ग्वालियर, सर्व श्री जगदीश सिंह अमृतसर, स्वतंत्रपाल सिंह, फोटोग्राफर सूरतपाल सिंह, मलकीत सिंह और दर्शन सिंह इत्यादि कई स्थानों पर साथ-साथ रहे।

हर स्थान पर नामधारी प्रतिनिधियों को स्टेज पर बैठाया गया। बोलने का अवसर दिया गया और सम्मानित किया गया। कई स्थानों पर इनके द्वारा द्वीप प्रज्विलित करवाकर समारोह का शुभारंभ करवाया जाता रहा। दूरदर्शन द्वारा लिए गए साक्षात्कार के दौरान और प्रैस कानफ्रेंस में सत्गुरु और नामधारी सिखों द्वारा गाय रक्षा के लिए दी गई कुर्बानियां और गऊओं की सेवा व संभाल का ज़िक्र किया जाता रहा।

भोपाल में श्री गोविन्दाचार्य जी ने कहा -

"नामधारी सिखों ने जो कुर्बानियां की, उनके समक्ष यह यात्रा एक तुच्छ प्रयास है। सत्गुरुओं और उनके सिखों को हमारा नमन है।"

इस यात्रा में कुछ समय के लिए स्वामी अखिलेश्वरानंद जी, श्री शंकरलाल

जी व उनके शिष्य, सूबा सरबजीत सिंह और संत स्वतंत्रपाल सिंह आदि के साथ श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी के दर्शनों के लिए 5 अक्तूबर 2010 को श्री भैणी साहिब पहुंचे। यह सब दर्शन करके बहुत प्रभावित हुए।

स्वामी अखिलेश्वरानंद जी ने नामधारी प्रतिनिधियों से कहा –

''मैं जीवनभर आपके इस परोपकार का ऋणी रहूंगा कि आपने मुझे ऐसे महापुरुष सतगुरुओं के दर्शन कराए। ऐसे अलौकिक दर्शन मैंने पहले कभी नहीं किए और मेरे लिए यह अवसर किसी सौभाग्य से कम नहीं।''

यह कहते वह बहुत भावुक हो गए और उनकी आंखे भर आईं। यात्रा दौरान स्टेज पर बोलते समय उन्होंने हर जगह श्री सत्गुरु जी और नामधारी सिखों की कुर्बानियों का ज़िक्र किया।

अमरावती से नागपुर वापसी के दौरान फन एंड फूड विलेज़ वाले संत सेवा सिंह (तंबूओं वाले) ने यात्रा का शानदार स्वागत किया। विश्राम के लिए डेरे लगवाए और खाने-पीने का विशेष प्रबंध भी किया।

नामधारियों द्वारा सुलतानपुर (यू.पी.) में सूबा रतन सिंह जी, छत्तीसगढ़ में संत अमरजीत सिंह, भोपाल में संत कुलदीप सिंह कलसी, इंदौर में संत अजमेर सिंह, ग्वालियर में सूबा सरबजीत सिंह जी, लखनऊ में संत भगवंत सिंह सोनू, दिल्ली में सूबा सुखदेव सिंह जी, सरसे में प्रधान लखबीर सिंह, मुम्बई में संत बलदेव सिंह कलसी इत्यादि ने परिवारों और नामधारी सिख-सन्तों समेत इस यात्रा की शानदार स्वागत और मेहमाननवाज़ी की। अपने वाहनों में आकर इस यात्रा में शिरकत की। सबके नाम तो नहीं लिखे जा सकते मगर कुछेक नामों का उदाहरणस्वरूप ज़िक्र किया गया है।

नागपुर में गऊ ग्राम यात्रा का समापन समारोह

16 जनवरी 2010 को (समापन समारोह से एक दिन पहले) नागपुर शहर में इस यात्रा की शोभा यात्रा निकाली गई। यात्रा के आगमन के समय पूरे शहर में सड़क के दोनों किनारे मौजूद गाय-भक्तों ने बड़े गर्मजोशी व श्रद्धा से दीपमालाएं चढ़ाकर, आरती उतारकर और फूलों की बारिश करते हुए यात्रा का भव्य स्वागत किया।

गऊ ग्राम यात्रा वाले रथ के साथ-साथ 'कूका आंदोलन' को प्रदर्शित करती गाड़ी भी चल रही थी और नामधारी प्रतिनिधि और साधु संगत भी इसमें शामिल हुए।

17 जनवरी साल 2010 को विश्व मंगल गऊग्राम यात्रा का नागपुर में समापन समारोह एक बहुत बड़े स्तर का कार्यक्रम था। इसमें स्वामी राघेश्वर स्वामी जी के अलावा राष्ट्रीय स्वयं-संघ के मौजूदा प्रमुख श्री मोहन भागवत जी, स्वामी रामदेव जी, जैन मुनि और उनके प्रतिनिधि, मुसलमान सूफी संत और उनके प्रतिनिधि, बापू आसा राम जी के सुपुत्र व उनके प्रतिनिधि इत्यादि के तौर पर अन्य कई प्रमुख हस्तियां बड़ी संख्या में उपस्थित हुईं।

नामधारी प्रतिनिधियों द्वारा श्री सत्‌गुरु जी की विचारधारा को पेश किया गया और सत्‌गुरु जी का संदेश सुनाया गया।

17 जनवरी 2010 को इस विश्व मंगल गाय ग्राम यात्रा, जिसका समापन समारोह नागपुर में आयोजित किया गया, के दौरान श्री सत्‌गुरु जी द्वारा यह प्रतिनिधि शामिल हुए - हजूरी सेवक हरपाल सिंह, सूबा सरबजीत सिंह व उनकी पत्नी बीबी हरविंदर कौर, संत स्वतंत्रपाल सिंह, डा. इकबाल सिंह, जत्थेदार प्रीतम सिंह कवि व उनके साथी, डा. जोगिंदर सिंह जबलपुर, हजूरी लांगरी रणजीत सिंह, संत मलकीत सिंह, संत गुरमुख सिंह राय, संत दर्शन सिंह फोटोग्राफर, संत बलवंत सिंह सुपुत्र संत बलबीर सिंह रिकार्डिंग वाले इत्यादि और बड़ी गिनती में नामधारी संगत।

इस अवसर पर श्री सत्‌गुरु जी द्वारा हजूरी सेवक हरपाल सिंह, सूबा सरबजीत सिंह ने स्वामी राघेश्वर भारती जी को सिरोपा (माला, आसन, शालें इत्यादि) देकर सम्मानित किया।

इस विश्व मंगल गाय ग्राम यात्रा में हिंदू विश्व परिषद्, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, जैन मुनि, साधु संतों और गाय प्रेमियों का विशेष योगदान और सुचारु प्रबंध था। हिंदू-सिख, ईसाई, मुसलमान, सारी समाज सेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों और करीब हर राजनीतिक पार्टी ने इसमें पूरा सहयोग दिया।

दिल्ली में हस्ताक्षर समर्पण समारोह

31 जनवरी 2010 को दिल्ली में हस्ताक्षर समर्पण समारोह का आयोजन किया गया। इसमें बड़े स्तर पर जनसमूह एकत्र हुए। भारत की नामी गिरामी हस्तियां इस कार्यक्रम में मौजूद थीं। आठ करोड़ सत्तर लाख हस्ताक्षरों वाला मैमोरेंडम (गाय रक्षा संबंधी) देश की राष्ट्रपति श्रीमति प्रतिभा पाटिल को सौंपा जाना था।

इस समारोह में नामधारी प्रतिनिधियों के तौर पर सूबा सुखदेव सिंह दिल्ली, सूबा सरबजीत सिंह, संत जसबीर सिंह कोना (दिल्ली) स्टेज पर बैठे थे। चल रहे कार्यक्रम से उठकर एक प्रतिनिधि मंडल राष्ट्रपति जी को हस्ताक्षर और ज्ञापन पत्र सौंपने गया।

राष्ट्रपति जी को ज्ञापन सौंपने के लिए जो अठारह व्यक्ति प्रतिनिधि के तौर पर गए उनमें एक नामधारी दिल्ली के संत जसबीर सिंह जी कोना (पूर्व प्रधान नामधारी शैक्षणिक जत्था, दिल्ली) शामिल थे।

यह अठारह प्रतिनिधि थे -

1. शंकराचार्य राघेश्वर स्वामी जी
2. पूजनीय बाबा रामदेव जी पितांजली योगपीठ हरिद्वार
3. पूजनीय श्री के. सी. सुदर्शन जी पूर्व सर्व संचालक आर. आर. एस.
4. साधवी रितंभरा जी
5. पूजनीय परमानंद जी महाराज
6. पूजनीय राहुल बोधी जी, बुद्ध संस्थापक, यूनाइटेड बौद्ध सोसाइटी
7. पूजनीय विश्वेवर जी महाराज तेजपीठ अधीश
8. स. जोगिंदर सिंह जी, पूर्व महानिर्देशक सी.बी.आई.
9. पूजनीय विजयामृत चैतन्य जी
10. संत जसवीर सिंह प्रतिनिधि नामधारी संत समाज

11. श्री सीताराम विश्व हिंदू परिषद्

12. श्री हुक्म चंद सांवला जी

13. डा. नागेंदर जी

14. श्री केसरी चंद मेहत्ता जी

15. श्री सुख चैतन्य महाराज जी

16. श्री छोटे मियां जी

17. श्री दिवाकर शास्त्री जी

18. श्री रिशीपाल ड़ड़वाल जी

राष्ट्रपति जी को ज्ञापन सौंपने से पहले रामलीला ग्राउंड दिल्ली में एक विशाल जनसभा की गई। इसमें प्रमुख सुखदेव सिंह जी दिल्ली 50-60 सिखों समेत पधारे। सूबा सरबजीत सिंह जी भी उपस्थित हुए।

श्री के.सी. सुदर्शन जी ने राष्ट्रपति श्रीमति प्रतिभा पाटिल को बताया कि गाय के गोबर की ईंटे बनाकर मकान बनाया गया है। इस मकान में विकिरण किरणें नहीं जातीं। इस पर बंब और गोलियों का भी असर नहीं होता।

आठ करोड़ सत्तर लाख हस्ताक्षरों वाला ज्ञापन देश की राष्ट्रपति श्रीमति प्रतिभा पाटिल को सौंपा गया। राष्ट्रपति ने इस ज्ञापन पर विचार कर अमल करने का भरोसा दिलाया।

गौ मांस निषेध अभियान कमेटी

24 फरवरी 2010 को एक 16 सदस्यीय कमेटी राष्ट्रपति जी को मिलने गई। इस कमेटी का मुख्य उद्देश्य ज्ञापन के ज़रिए यह संदेश देना था कि कॉमनवेल्थ खेलों में खिलाड़ियों को गाय का मांस न परोसा जाए। प्रतिनिधि जिनमें संत जसबीर सिंह जी (कोना) दिल्ली भी शामिल थे समेत चार लोगों ने अपने-अपने विचार कुछेक समय लेते हुए राष्ट्रपति के समक्ष रखे। ये चार लोग -महामंडलेश्वर स्वामी भगत हरी जी, श्री राम कृष्ण जी कुरूक्षेत्र (राज्यसभा सदस्य), श्री सोमपाल शास्त्री जी (पूर्वी राज्य कृषि मंत्री हरियाणा), संत जसवीर सिंह जी नामधारी, दिल्ली थे।

श्री सोमपाल शास्त्री जी ने कहा कि -यदि गाय रक्षा करनी है तो श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी से सीखो। इनके प्रतिनिधि संत जसबीर सिंह जी यहां पधारे हैं। अब यह अपने विचार पेश करेंगे -

संत जसबीर सिंह जी बोले -

"राष्ट्रपति जी, मैं यह निवेदन कर रहा हूं कि श्री सत्गुरु राम सिंह जी ने सन् 1857 में जो आज़ादी का आंदोलन शुरू किया था, उसकी नींव गाय रक्षा आंदोलन पर रखी गई। बहुत सारे नामधारियों को तोपों से उड़ा दिया गया, फांसियों पर लटका दिया गया और देश को आज़ादी मिली। आज श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी सारी मानवता का कल्याण करने के साथ-साथ हमारे देश में पाई जाने वाली अच्छी नसलें - साहीवाल व हरियाणा नसलों की गऊ वंश को बेहतर तरीके से संभाल रहे हैं।

मुझे यह कहते बेहद दुख हो रहा है कि आज देश में रोज़ाना 20 हज़ार गायें चोरी छिपे बंगलादेश के रास्ते अरब देशों को भेजी जा रही हैं और गौ मांस शेखों की मेज़ों में परोसा जा रहा है। गौ वंश तेजी से लुप्त होता जा रहा है। किसी ग्रंथ में लिखा है कि जहां गाय हत्या होती है वहां राजा और प्रजा दोनों का विनाश हो जाता है। आपसे मेरा निवेदन है कि इस ओर ध्यान दिया जाए।"

संत जसबीर सिंह जी बताते हैं कि 17 मार्च 2010 को उन्होंने श्री सत्गुरु जी को प्रार्थना करते हुए दिल्ली में नामधारी समाज द्वारा 'सिख गौ रक्षा कमेटी' बना ली है जो कि शीघ्र ही कार्यशील होगी।

साहित्यकार जीवन संबंधी विवरण

नाम		सूबा सुरेन्द्र कौर खरल
पिता का नाम		स. गुरचरन सिंह खरल
माता का नाम		बीबी गुरदेव कौर
पति का नाम		स. भगवंत सिंह नामधारी
वर्तमान पता		नामधारी इंजी. वर्कस, कुराली रोड, रूपनगर (रोपड़)-140 001 (पंजाब)
मोबाइल नंबर		98157-03588, 96539-05321, 94173-76345, 94172-73345, 01881-500271
जन्म तिथि	:	19 जनवरी 1952
जन्म स्थान	:	मुम्बई
शैक्षणिक योग्यता	:	एम.ए. - इतिहास
क्षेत्र	:	गृहणी/लेखन कार्य
आरंभिक लेखन प्रक्रिया	:	साल 1966
साहित्यक रचना	:	कहानी, कविता, लेख, जीवनी, बाल साहित्य, वृत्तांत, यात्रा लेख, रिसर्च पेपर और वंशावली इत्यादि। रचनाएं समय-समय अनुरुप विभिन्न पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में छपती रहती हैं।

छपी पुस्तकों का विवरण

1. तृष्णा (कहानियां) 1987
2. रूह पंजाब की (जीवनी महारानी जिंद कौर) 1990
3. महाबली रणजीत सिंह (जीवनी महाराजा रणजीत सिंह) 1991

4. बड़-प्रतापी सत्गुरु (जीवनी श्री सत्गुरु प्रताप सिंह जी) 1991 और 2010
5. श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी की बागबानी प्रति देन (खोज-पत्र) 1995
6. बर्मा की यात्रा, अफरीका की यात्रा 1996
7. बख्शिश (कविताएं) 1996
8. प्रकाश-पुंज भाग पहला (जीवनी श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी) 1997
9. तू ही तू (कविताएं) 2000
10 वंशावली-श्री सत्गुरु राम सिंह जी 2006
11 नामधारी शहीद और स्वतंत्रता संग्रामी 2008
12 गोपाल-रतन (श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी) 2010
13 प्रकाश-पुंज भाग दूसरा 2011

छपने योग्य पुस्तकें

नामधारी इतिहास : सरकारी दस्तावेज़

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी (बाल साहित्य)

डायरी सन् 1990 से इत्यादि

अखबारों में छपे और छप रहे विशेष लेख

1. जगबाणी में श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी संबंधी लेख और श्री सत्गुरु जी के प्रवचन, 21 मई साल 2001 से 7 दिसंबर 2010 तक लगातार क्रमश: पहले हर सोमवार, फिर हर मंगलवार को छपते रहे हैं।
2. अजीत अखबार में पुस्तक 'रूह पंजाब की' (जीवनी महारानी जिंद कौर) 18 अगस्त 1991 से 27 अक्तूबर 1991 तक क्रमश: हर रविवार 10 किश्तों में छपी।

3. पंजाबी ट्रिब्यून में 'बर्मा की यात्रा' 5 मई 1996 से 16 जून 1996 तक हर रविवार क्रमश: 7 किश्तों में छपी।

मिले सम्मानों का विवरण:-

- बाल साहित्य रचियता पुरस्कार 02-01-1994 को - द्वारा लेखक सभा बरनाला
- नामधारी शहीदां की खोज करने के लिए सम्मान 25-09-1995 को अमृतसर में हुए विश्व सिख सम्मेलन के दौरान - द्वारा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी।
- खेल मेला 1999 - द्वारा शहीद रतन सिंह स्पोर्टस क्लब मंडी कलां (ज़िला बठिंडा)
- सरदारनी हरलाभ कौर यादगारी अवार्ड 26 मई 2002 को - लेखक सभा बरनाला द्वारा।
- शहीद बिशन सिंह यादगारी अवार्ड 27 मई 2002 को - अखिल भारतीय सांप्रदायिक सद्भावना कमेटी, नई दिल्ली द्वारा।
- हरि रंग मस्त ट्रस्ट बठिंडा द्वारा सम्मान 19 सितंबर 2003
- मास्टर निहाल सिंह यादगारी पुरस्कार 28 मार्च 2010 को - नामधारी धर्मशाला, रमेश नगर, दिल्ली में
- संस्कार भारतीय रोपड़ द्वारा सम्मान 25 जुलाई 2010 को - गुरु पूर्णिमा के अवसर पर

अन्य जानकारी

सूबा : श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी ने अप्रैल साल 1994 से नामधारी पंथ में सूबा बनाया

प्रधान: सरब हिंद नामधारी शैक्षणिक जत्था (रजि.) स्त्री विंग 1989-95 के दौरान

ट्रस्टी : कूका शहीद यादगारी ट्रस्ट (रजि.) साल 1992 से पंजाब सरकार द्वारा बनाया गया ट्रस्ट

सदस्य : भैणी साहिब और राइयां डिव्लपमेंट बोर्ड (रजि.) साल 1994 से पंजाब सरकार द्वारा बनाया गया बोर्ड।

सदस्य : केंद्रीय पंजाबी लेखक सभा (रजि.)

सदस्य : पंजाबी साहित्य अकादमी (रजि.) लुधियाना

कार्यकारी सदस्य : ज़िला लेखक सभा (रजि.) रूपनगर (रोपड़)

मीत प्रधान: भारतीय इतिहास संकलन समिति, रूपनगर

मीत प्रधान: संस्कार भारतीय कमेटी, रूपनगर

सदस्य : पंजाबी भाषा तरसीम एक्ट की ज़िला स्तरीय कमेटी

श्री सतगुरू जगजीत सिंह जी के करकमलों से मिले विशेष पुरस्कारों का विवरण:

- सेठानी महिंदर कौर सम्मान - 16 अक्तूबर 1997 को, अस्सू के मेले दौरान श्री भैणी साहिब में
- विशेष पुरस्कार शैक्षणिक जत्थे की सेवा के लिए - 22 जून 1995 को शैक्षणिक सम्मेलन के समय श्री भैणी साहिब में।
- विशेष पुरस्कार शहीदों के परिवारों की खोज के लिए - 13 फरवरी 1997 को गांव सकरौदी के शहीद यादगारी मेले पर।
- विशेष पुरस्कार शहीदों के परिवारों की खोज के लिए - 17 फरवरी 1997 को गांव मंडी कलां के शहीद यादगारी मेले पर।
- आर्शीवाद पुरस्कार शैक्षणिक जत्थे द्वारा - 9 जून 1998 को वार्षिक शैक्षणिक सम्मेलन मंडी में।
- पुस्तक - बड़-प्रतापी सतगुरु (10 अक्तूबर 1990), बख्शीश (4 अगस्त 1996), प्रकाश-पुंज 1 (18 अक्तूबर 1997), तू ही तू (26 नवंबर 2000), वंशावली-श्री सतगुरु राम सिंह जी (16 मार्च 2006) और नामधारी शहीद सन् 2008 गोपाल रतन (17 जनवरी 2011) को व प्रकाशपुंज भाग दूसरा सन् 15 अक्तूबर 2011 को (अस्सू के मेले में) आदि रिलीज़ किए जाने के समय मिले विशेष पुरस्कार।
- शैक्षणिक सम्मेलन के समय खोज-पत्र पढ़ने और जजमैंट करने के

अलावा समय-समय पर अनेक पुरस्कार श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी के करकमलों से बख्शिश हुए।

विदेश यात्राएं

1. थाइलैंड की यात्रा - 15 से 25 मार्च 1993
2. थाइलैंड की यात्रा - 8 से 10 मार्च 1994
3. बर्मा की यात्रा - 10 से 20 मार्च 1994
4. थाइलैंड की यात्रा - 20 से 24 मार्च 1994
5. अफ्रीका (कीनिया - तनजानिया) यात्रा - 21 मई से 5 जून 1994
6. थाइलैंड की यात्रा - 28 नवंबर से 10 दिसंबर 1995
7. इंग्लैंड की यात्रा - 15 मई से 11 जुलाई 1999
8. पाकिस्तान की यात्रा - 18 जुलाई से 22 जुलाई 2008

***